ॐ

महावीर

गेरीवाल्डी

लेखक
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति



कर्म-र

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न

धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्

यदृच्छया चोपपन्न स्वर्ग

सुखिन क्षत्रिया पार्थ

अथ चेत्त्वमिम धर्म्य स

तत स्वधर्म कीर्ति च

अकीर्ति चापि भूतानि

सभावितस्य चाकीर्तिर्म

भयाद्रणादुपरत मस्यन्त

येषा च त्व बहुमतो भ

अवाच्यवादाश्च बहून्व

निन्दन्तस्तव सामर्थ्य

हतो वा प्राप्स्यसि स्व

तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय

सुखदु खे समे कृत्वा

ततो युद्धाय युज्यस्व

ोगीका आदेश

विकम्पितुमर्हसि ।
यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥
द्वारमपावृतम् ।
लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥
ङ्ग्राम न करिष्यसि ।
हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥
कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् ।
रणादतिरिच्यते ॥
ने त्वा महारथाः ।
त्वा यास्यसि लाघवम् ॥
दिष्यन्ति तवाहिता ।
मतो दु खतर नु किम् ॥
र्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
युद्धाय कृतनिश्चय ॥
लाभालाभौ जयाजयौ ।
नैवं पापमवाप्स्यसि ॥

श्री कृष्ण-

ॐ

महावीर गेरीवाल्डी





गुरुकुल विश्वविद्यालयकी साहित्य परिषद्का नाम अब हिन्दी जगत् में अपरिचित नहीं है। उसकी ओरसे निकाली हुई साहित्य परिषद् ग्रन्थमाला की तीन पुस्तकें हिन्दी साहित्य प्रेमियोंके सन्मुख उपस्थित की जा चुकी हैं। आज हम इसी ग्रन्थमालाकी चतुर्थ पुस्तक 'महावीर गेरीबाल्डी' हिन्दी संसारके सन्मुख उपस्थित करने लगे हैं। इसके लेखक उक्त विश्वविद्यालयके योग्य स्नातक श्रीयुत पण्डित इन्द्र विद्या वाचस्पति, भू० पू० सम्पादक 'विजय', हैं। जिन महानुभावों ने 'नैपोलियन बोनापार्ट तथा 'प्रिंस बिस्मार्क' के जीवन चरित्रों को पढ़ा है वे उनकी मार्मिक लेखनशैली से भली भाँति परिचित हैं। प्रस्तुत पुस्तक भी उन्हीं की लेखनी की लीला है।

इस समय जिस वेगसे हिन्दी साहित्यकी उन्नति हो रही है उसका अनुमान नहीं किया जा सकता। इस समय जहाँ अनेक उत्तम २ पुस्तकोंके अनुवाद हिन्दी भाषामें प्रकाशित हो रहे हैं। वहाँ मौलिक पुस्तकोंका निकलना भी अत्यन्त

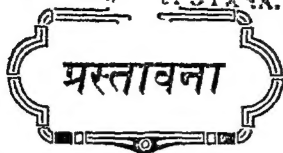
आवश्यक है। इन बातोंको ध्यानमें रखते हुए हमने इस *'समयोपयोगी'* पुस्तकको प्रकाशित किया है। आशा है कि इस पुस्तकको हिन्दी संसार अपना कर हमारा उत्साह बढ़ाएगा।

अन्तमें हम *श्री पण्डित जयदेव शर्मा विद्यालङ्कारको* हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस पुस्तकके प्रकाशित कराने में हर प्रकारकी सहायता प्रदान कर सभाको अनुगृहीत किया है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय
काङ्गडी
वसन्तपञ्चमी १९७८ वि०

वंशीधर
मन्त्री—
साहित्य परिषद्





गेरीवाल्डीकी जीवनीके मिससे इटलीकी स्वाधीनताका इतिहास सुनानेके लिये किसी युक्ति या बहानेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। गेरीवाल्डीकी जीवनी ही इतिहासकी स्थिर कविता है और इटलीकी स्वाधीनताका इतिहास मनुष्य जातिके उन्नति पथका एक प्रसिद्ध पड़ाव है। जब तक लोग स्वाधीनताका आदर करेंगे, जब तक ससार वीरताको पूजाकी दृष्टिसे देखता रहेगा, तब तक लेखक भी गेरीवाल्डी और इटलीकी स्वाधीनताको कथाए लिखकर अपनी लेखनीको पवित्र करते रहेंगे।

स्वाधीनताके गीत गाना बहुत सहल है, परन्तु उसे पाना, लुटी हुई स्वाधीनताको फिरसे हस्तगत करना, बहुत ही कठिन है। स्वाधीनताकी देवी अनगिनत बलिदान चाहती है। यह आवश्यक नहीं कि यह बलिदान एक ही ओरसे हों। दोनों ओरसे बलिदान होनेके अनन्तर ऐसा अवसर उपस्थित होता है कि यदि जाति स्वाधीनताकी प्रबल अभिलाषा रखे

तो उसे प्राप्त कर सके। गेरीवाल्डी स्वाधीनताका पुजारी था। उसने जहाँ एक ओर पूज्या देवीके चरणोंमें अपनी ओर से अनेक बलियाँ भेंटकीं, वहाँ साथ ही शत्रुके पक्षसे भी हजारों सीस लाकर चरणोंपर रख दिये। ऊँचा उद्देश्य हो, हृदयमें सचाई हो, स्वार्थका लेश न हो, ऐसो दशामें जो वीर नेता मातृ-भूमिकी स्वाधीनताकी वेदीपर स्वपक्ष और विपक्षकी बलियाँ चढानेका सामर्थ्य रखता है, वही जातिका उद्धार कर सकता है। जिस बहादुर मुखियामें यह शक्ति है कि वह एक ललकार से अपने देशकी मुर्दा आत्माओंको सचेत कर सके, उनमेंसे जो चिड़ियोंकी शक्ति भी नहीं रखते, उन्हें वीर बनाकर भयकर बाजोंसे भिडा सके, अपने प्राणोंको तृण सदृश मानकर दुनियाँ-को दिखा सके कि आदर्शके लिये जीना और आदर्शके लिये मरना किसे कहते हे, वही, बस एक वही, बहादुर मुखिया देशके शरीरपर बँधी हुई जंजीरोंको काट सकता है, दूसरा नहीं। गेरीवाल्डी ऐसा बहादुर मुखिया था। उसका जीवन नि स्वार्थता और बहादुरीके शास्त्रका एक आवश्यक अध्याय है। जो देश स्वाधीनताके प्यासे हैं, उनके लिये यह शीत सरोवरकी राह दिखानेका एक निर्देश स्तम्भ है, और जो देश औरोंकी स्वाधीनता छीनकर प्रमादमें पड़े हैं, उनके लिये वह 'सावधान' कर देनेका इशारा है। न अत्याचार आस्ट्रिया-ने समाप्त कर दिये हैं, और नाहीं वीरसू वसुन्धराकी कोख गेरीवाल्डीने उत्पन्न होकर रिक्त ही कर दी है। जब तक

मेटर्निच पैदा हो सकते हैं, तब तक मेजिनी और गेरीवाल्डी भी उत्पन्न हो सकते हैं। जो लोग समझते हैं कि भूमाता वीरोंसे बाँझ हो गयी, वे गेरीवाल्डीके जीवनको पढ़ें। यदि वह स्वाधीनताके प्यासे हैं तो उन्हें आशाका जल मिलेगा, और यदि वह दूसरोंकी स्वाधीनताका कलेवा किये बैठे हैं तो उन्हें एक उपदेश और इशारा मिलेगा, जिसे समझकर वह दुर्दैवकी उन थपेड़ोंसे बच सकेंगे, जिन्होंने आस्ट्रियाका मानमर्दन करके बतला दिया है कि—

अधर्मेणैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति ।
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति ॥

पापी पुरुष या देश पापके बलसे बढ़ता है, ऐश्वर्य प्राप्त करता है और शत्रुओंको भी जीत लेता है।

परन्तु अय सांसारिक पुरुषो! मत समझो कि उसका गौरव स्थिर रहता है। आखिर समय आता है कि उसे नीचा देखना पड़ता है और वह जड़ मूलसे नष्ट हो जाता है।

गुरुकुल कांगड़ी
मकरसंक्रान्ति १९६८ वि०

ग्रन्थकर्ता

* ओ३म् *



आदर्श

"सत्त्व हि महता महत्व"।

महापुरुषोंके चरित भी महान् होते हैं ॥

मृत्यु और यशमें विशेष सम्बन्ध समझा जाता है। जैसे आग अनेक रंगोंकी लकडी आदिको जलाकर एक रंगकी राख बना देती है, ऐसे ही मृत्यु भी प्राय भेदोंको बहुत कुछ नष्ट करके सबको एक साँचेमें ढाल देती है। बुरे आदमियोंके परिचित लोग भी एक लम्बा सास खींचकर कहते हैं कि 'आखिर उसमें गुण तो थे ही'; 'बेचारा भला ही था'। मृत्युके पीछे कुछ
के लिये कीर्ति टके सेर मिल जाती है, किन्तु जीवन
घर आनेसे लजाती है मानिनी महिलाकी भाँति उसे
ीको धरते सकोच होता है। मृत्युके
पि भी पा सकता है। ऐसे प्राणी

और भी रहस्य है, जिसे हम इस जीवन चरितमें खोलना चाहते हैं। गेरीवाल्डीमें इतना साहस क्यों था? उसकी इतनी निर्भयताका कारण क्या था? कौन सी ऐसी शक्ति थी जो उसे असम्भव कार्यको सम्भव कर दिखानेके लिये प्रेरित करती थी? जब हम उसके जीवनपर विचार करते हैं तो केसरी हमें कायर प्रतीत होने लगता है—गेरीवाल्डी-के जीवनमें ऐसा महत्व किस हेतु आया? इस प्रश्नके उत्तरका रहस्य खोलना भी इस जीवनीका लक्ष्य है।

गेरीवाल्डीका जीवन वस्तुत एक आदर्श जीवनका नमूना है—आचार शास्त्रका एक सजीव अध्याय है। संसार-में अनूठे पुरुषोंका जैसा चरित होना चाहिये—और जैसा चरित इतिहासके पृष्ठोंमें इने गिने पुरुषोंका ही मिलता है गेरीवाल्डीका चरित वैसा ही है। नैपोलियन बड़ा वीर था किन्तु स्वार्थकी मात्रा उसके महत्वपर काला धब्बा लगा देती है। जो वीरता स्वार्थसे रहित है वह कहीं कहीं पायी जाती है। वह दुर्लभ है, किन्तु जहां कहीं वह मिल जाय, उस पुरुषको देवता कहना चाहिये। कृतकार्यतामें स्वार्थके उत्पन्न करनेकी बड़ी शक्ति है। जो पुरुष बड़ा निःस्वार्थ होकर कार्य क्षेत्रमें प्रविष्ट होता है, कृतकार्यता पिशाचीके आते ही प्राय चुपकेसे स्वार्थ और आत्मचिन्तन भी उसके अन्दर घुस आते हैं। इस स्वार्थ चोरने न जाने कितने पुरुषा-

विरले ही होते हैं, जिन्हें जीवित दशामें ही कीर्ति प्राप्त हो जाती है। ऐसी जननीकी कोख धन्य है जिसका पुत्र जीता हुआ अकलङ्कित यशका भागी बने। ऐसी जाति सौभाग्य शालिनी है, जिसे ऐसा नर-रत्न प्राप्त हो। विशेष चमकीले गुणोंसे और विशेष अनुकूल दैवसे ही ऐसा सौभाग्य मिल सकता है, अन्यथा नहीं।

जिस पुरुषरत्नका जीवन आज हम लिखने बैठे हैं, वह ऐसा ही सौभाग्य शाली व्यक्ति था। वह उन महापुरुषोंमें से था जिन्हें जीते जी शहीद होनेका सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। असीम साहस और अतुल पराक्रमके कारण इटलीके देशभक्तोंमें वह देवताकी तरह पूजा जाता था, उसके एक गम्भीर वीरगर्जनको सुनकर वे लोग भी तलवारें खींच लेते थे जिन्होंने जन्म भर कलमके सिवाय हाथमें कुछ नहीं पकड़ा। मिट्टीके पुतलोंमें रूह फूंकना यदि किसी मनुष्यके हाथमें हो सकता है तो वह गेरीवाल्डीके हाथमें था। इस शक्तिकी सहायतासे उसने जो कार्य किया उसकी कहानी कहना इस पुस्तकका एक उद्देश्य है। उसके जिन कार्योंने उसे कीर्ति दी, यश दिया, मान प्रतिष्ठा दी, जीते जी इटली से भिन्न देशोंमें उसे देवताकी भाँति पुजवाया उन कार्यों का सविस्तर वर्णन करनेके लिये आज हमने लेखनी उठाई है। किन्तु इतना ही उद्देश्य लेकर हम प्रवृत्त नहीं हुए। कुछ

और भी रहस्य है, जिसे हम इस जीवन चरितमें खोलना चाहते हैं। गेरीबाल्डीमें इतना साहस क्यों था? उसकी इतनी निर्भयताका कारण क्या था? कौन सी ऐसी शक्ति थी जो उसे असम्भव कार्यको सम्भव कर दिखानेके लिये प्रेरित करती थी? जब हम उसके जीवनपर विचार करते हैं तो केसरी हमें कायर प्रतीत होने लगता है—गेरीबाल्डी-के जीवनमें ऐसा महत्त्व किस हेतु आया? इस प्रश्नके उत्तरका रहस्य खोलना भी इस जीवनीका लक्ष्य है।

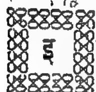
गेरीबाल्डीका जीवन वस्तुतः एक आदर्श जीवनका नमूना है—आचार शास्त्रका एक सजीव अध्याय है। संसार-में अनूठे पुरुषोंका जैसा चरित होना चाहिये—और जैसा चरित इतिहासके पृष्ठोंमें इने गिने पुरुषोंका ही मिलता है गेरीबाल्डीका चरित वैसा ही है। नैपोलियन बड़ा वीर था किन्तु स्वार्थकी मात्रा उसके महत्त्वपर काला धब्बा लगा देती है। जो वीरता स्वार्थसे रहित है वह कहीं कहीं पायी जाती है। वह दुर्लभ है, किन्तु जहां कहीं वह मिल जाय, उस पुरुषको देवता कहना चाहिये। कृतकार्यतामें स्वार्थके उत्पन्न करनेकी बड़ी शक्ति है। जो पुरुष बड़ा निःस्वार्थ होकर कार्य क्षेत्रमें प्रविष्ट होता है, कृतकार्यता पिशाचोंके आते ही प्रायः चुपकेसे स्वार्थ और आत्मचिन्तन भी उसके अन्दर घुस आते हैं। इस स्वार्थ चोरने न जाने कितने पुरुषों-

दूसरा परिच्छेद

सूर्योदय

" जगनिवास प्रभु परगटे, अखिल लोक विश्राम । "

(तुलसी)

टलीमें नाईस नामका एक नगर है, जो देशके एक छोरपर होनेके कारण कई हाथोंमें घूम चुका है। पहले वह इटालियन लोगोंके पास था, फिर उसपर टर्कीके बेड़ेने धावा किया। फ्रेंच वीरोंने उसे दो बार सर किया और नैपोलियनके पीछे वह सार्डिनियाकी रियासतके अधीन हो गया। एक विलक्षण चरित्र वाले महापुरुषकी जन्म-पुरीमें जैसी विलक्षणता होनी चाहिये, वह नाईसमें विद्यमान थी। उस नगरीमें 'डोमनिको गेरीबाल्डी' नामका एक भद्र पुरुष रहता था, जो समुद्रकी यात्राओं द्वारा आजीविका किया करता था। १८०७ ईस्वीके जुलाई मासकी २२ वीं तारीखके दिन उस भद्र पुरुषके घरमें एक बालकने जन्म लिया, जिसका नाम जोजफ गेरीबाल्डी रखा गया। जोजफ गेरीबाल्डीकी माता बड़े सौम्यस्वभाववाली और सन्तानसे प्रेम करने वाली थी।



गेरीबाल्डी.

स्वतन्त्रताका योद्धा

जोजफ मेरी वार्डीकी शैशवावस्थाके विषयमें अधिक ज्ञात नहीं है। इतना ही पता लगता है कि वह बड़ा फुर्तीला और चतुर बालक था। जब वह बड़ा हुआ और चढ़ते चाँदकी तरह उसकी शरीर-शोभा बढ़ने लगी, तब माता पिताने उसे पाठशाला भेजा। उन लोगोंकी इच्छा थी कि किसी प्रतिष्ठित आजीविका के योग्य बने। वे उसे पादरी या डाक्टर या वकील बनाना चाहते थे। किन्तु बालकका दिमाग उन तन्तुओंसे नहीं बना था, जो पुस्तकोंके पन्नोंमें फैल सकें। पढ़ने लिखनेमें उसका मन बिल्कुल नहीं लगता था। उसके अध्यापक उससे प्रेम करते थे—किन्तु इस लिये नहीं कि वह पढ़ने लिखनेमें चतुर था। अध्यापकोंके प्रेमका कारण उसका उत्तम स्वभाव था। न पढ़ता लिखता हुआ भी वह कई अध्यापकोंका लाडला था। यह कह सकते हैं कि पाठशालाके घण्टोंका उसके जीवनपर कोई प्रभाव नहीं था—और था भी तो बहुत ही थोड़ा। उसने अपने जीवन में जो महान् कार्य किये, उनके लिये यदि वह पाठशालाको धन्यवाद न देता, तो कोई अकृतज्ञता न होती। वह अपनी इच्छासे कभी स्कूल न जाता था, माताको खेद न हो, इसी लिये श्रेणीमें जा बैठता था। जब खेलने कूदनेकी इच्छा प्रबल हो उठती थी, तब अध्यापककी आँख बचाकर भाग निकलता था और हरे हरे खेतों और घने जंगलोंमें घूमने-

का और समुद्रकी छातीपर सैर करनेका आनन्द लूटता उठाता था। एक बार स्कूलकी बैठकसे तंग आकर, तीन सैलाने साथियोंके साथ गेरीवाल्डी भाग निकला और बन्दरगाहपर बँधी हुई एक छोटी सी नौका उड़ाकर समुद्र यात्रा के लिये चल पड़ा। इन मौजी बालकोंने समझा कि इन्हें देखने वाला कोई नहीं है। किन्तु एक पादरीने इन्हें रवाना होते हुए देख लिया और पीछा किया। नये नाविकोंका दल पकड़ा गया। इस अपराधपर गेरीवाल्डीको कुछ ताड़ना भी हुई और उसे पादरीका यह काम बुरा भी लगा। पीछेसे गेरीवाल्डी कहा करता था कि " शायद एक इसी घटनाके कारण मेरे मनमें पादरी लोगोंके लिये इतना कम प्रेम है "

समुद्रसे गेरीवाल्डीका स्वाभाविक प्रेम था। पिताके संस्कार पुत्रमें प्रबलतया विद्यमान थे। वह कहा करता था कि " मैं जल जन्तु ही उत्पन्न हुआ हूं। जलसे उसे कभी भय नहीं था। तैरने और तैर कर डूबते हुओंको बचानेकी उसकी कथाएं प्रसिद्ध हैं। जब कभी वह केवल आठ वर्षका था, एक बार उसने एक धोबिनको जलमें डूबते देखा, देखते ही वह उसे बचानेके लिये लपका, और अपने यत्नमें कृतकार्य हुआ। गेरीवाल्डी बाल्यावस्थासे ही दयावान् था—दूसरे का कष्ट देख कर उपेक्षा नहीं कर सकता था। जहाँ किसी दूसरेकी नौका भँवर में देखता था, वहाँ पानीमें कूद पड़ता

उसके लिये स्वाभाविक था। यह नैसर्गिक सहानुभूतिका भाव ही उसका सबसे बड़ा गुण और महत्वका प्रेरक कारण था। दीनों, दरिद्रों, रोगियों या पापियोंको देख कर वह घृणा नहीं करता था, और न उदासीन होकर ही बैठ जाता था। परमात्माके एक सच्चे पुत्रकी भांति वह उनके कष्टोंको दूर करना चाहता था—उसके लिये स्वयं अनेक कष्ट सहनेको भी तैयार रहता था।

स्कूलसे भाग कर गेरीबाल्डी समुद्रमें चक्कर लगाता, घोड़ेकी सवारी करता या तलवारका अभ्यास करता था। इन तीनों कलाओंमें वह खूब निपुणता प्राप्त कर रहा था। तलवार चलानेमें वह बड़ा निपुण हो गया था। उसका चित्त जैसा सरल था, उसके सिद्धान्त वैसे ही सरल थे। तलवार चलानेके वह केवल दो पेंच जानता था। एक, अपने सिरपर दूसरेकी तलवार न आने देना और दूसरा, दूसरेके सिरपर इतने जोरसे तलवार मारना कि उसके दो टुकड़े हो जायँ। तीसरे पेंचकी न उसे आवश्यकता थी और न वह उसे जानना ही चाहता था।

इसी प्रकार स्कूलमेंसे भागते, शरारतें करते, दीन दुखियों-के दुख हरते और समुद्रकी सैरें करते २ उसकी बाल्यावस्था व्यतीत हो गई और जब जीवनके क्षेत्रमें प्रवेश करनेका



समय आया। पिताने पुत्रको वकील या पादरी बनानेके सपने त्याग दिये थे इस लिये कार्यका चुनाव पुत्रकी प्रवृत्तियोंको देख कर ही किया गया। पुत्रकी प्रवृत्तियाँ पढ़ने या कलम घिसनेकी ओर निर्देश नहीं करती थीं। पादरी या वकील बनना उसे सर्वथा असम्भव प्रतीत होता था। यदि, इस भूमण्डलके महापुरुषोंके जीवनोंपर दृष्टि डालते हैं तो एक विलक्षण बात पाते हैं। महत्वको लताका मूल पाठशालाओं में कम मिलता है। शिवाजी अपना नाम भी नहीं लिख सकता था, नैपोलियन श्रेणीमें प्रथम नहीं रहता था, लार्ड क्लाइव बाल्यावस्थामें पत्थरके ढेलेकी भाँति जड समझा जाता था। कर्मण्य महापुरुषोंने पाठशालाओंसे अधिक लाभ नहीं उठाया। इससे यह सिद्ध नहीं करना चाहिये कि संसारके लिये पाठशालाओंका उपयोग नहीं, इसका तात्पर्य इतना ही है कि हमारे कृत्रिम साधनोंके अतिरिक्त भी ऐसे साधन विद्यमान हैं, जो जगत्‌के चक्रको चलाते हैं। परमात्माकी इच्छा और पूर्वजन्मके संस्कारोंकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह शक्तियाँ बनावटी शक्तियोंसे ऊपर हैं और उन्हें भी रास्ते लगानेवाली हैं। इटलीके लिये एक बन्धन काटनेवालेका भेजना भगवानको अभीष्ट था, फिर स्कूलोंको कौन पूछता है। अध्यापककी सम्मतिमें जड मूर्ख होता हुआ भी महान् जीव, महत्वको पा ही लेता है। यह ऐसा

इतिहास सिद्ध सत्य है कि पाठशालाओंके अध्यापक इसे जान कर बहुत प्रसन्न नहीं होंगे।

अस्तु! गेरीवाल्डोके लिये समुद्र ही कर्मक्षेत्र निश्चित किया गया। अपने पिताके साथ उसने एक बन्दरगाहसे दूसरे बन्दरगाह तक कई यात्राएँकी। इन यात्राओंसे पूर्व गेरीवाल्डोकी आन्तरिक शक्तियाँ तो विकास पा रही थीं, किन्तु अभी उसका दृष्टि क्षेत्र विस्तृत नहीं हुआ था। 'संसार कहाँको जा रहा है ? मातृभूमिकी क्या दशा है ? दुःख दर्द कहा बसते हैं ? अभी तक न यह प्रश्न उठे थे और न इनका उत्तर ही मिला था। गेरीवाल्डीका हृदय अभी तक शीशेकी भाँति साफ़ था। उसमें प्रतिकृतिके लिये स्थान तो बहुत था, किन्तु वह स्थान रिक्त था। साधारण पुरुषोंके हृदय दर्पणका रिक्त-स्थान जीवनकी साधारण दैनिक बातों से ही भर जाता है, फिर असली चित्रोंके लिये स्थान नहीं रहता। जबतक जीवनको बनाने वाले महान्-पदार्थ सामने नहीं आये, तबतक गेरीवाल्डीके हृदय दर्पणका मुख ढका रहा, जहाँ वे पदार्थ सामने आये आवरण हट गया और स्वच्छ हृदय ने उच्चभावोंके सूर्यकी प्रतिकृति क्षणभरमें ले ली। अपनी दूसरी यात्रामें गेरीवाल्डी रोम गया। रोमको देखते ही गेरीवाल्डीके हृदयमें "यह मेरी चीज है" इस प्रकारका भाव उग आया। उसके चित्तमें यह भाव घूमने लगा कि "हो न हो इस

पादरियोंके कुचले हुए रोमका किसी प्रकार बचाव करना चाहिये" ज्यों ज्यों वह इटलीके नगरोंमें घूमने लगा, त्यों त्यों उसको आँखोंके सामने एक पराधीन-जातिके कष्ट और बन्धन के करुण-चित्र आने लगे। उसे प्रतीत होने लगा कि उसकी जाति किसी भारसे दब रही है, किसी आगमें जल रही है। शुद्ध-हृदय पर पराधीन-इटलीकी दुर्दशाके चिन्होंने गहरा प्रभाव करना आरम्भ किया। उसका प्रेमी और सहानुभूति युक्त-हृदय इटालियनोंके आँसुओंपर आँसू बहाने लगा और साथही अपने आप से पूछने लगा कि "मैं क्या करूं"। प्रश्नका उत्तर देनेके लिये गेरीवाल्डीके सामने परमात्माके एक दूसरे दूतकी मूर्ति दिखाई दी—पाठको! वह मूर्ति कौन सी थी?

तीसरा परिच्छेद

मेजिनी।



"रत्न समागच्छतु काञ्चनेन"

हीरा सोनेका संयोग हुआ।



रीबाल्डीकी छोटी सी आँखोंने जिस समय माता की गोदमें पहली सूर्यकी किरणें देखी, उस समय इटालियन देवीकी गोदमें पड़ा एक दो वर्षका बालक देशभक्तिके बूँद पी रहा था। माता पिता ने उस बालकका नाम जोजफ मेजिनी रखा था। वह बालक कोंपलकी अवस्थामें भी बड़ा तेज और समझदार समझा जाता था। अन्य बालक जिस अवस्थामें अक्षराभ्यास प्रारम्भ करते हैं, मेजिनी उससे कुछ पूर्व ही अक्षर उठाने लगा था। ज्यों ज्यों उसकी आयु बढ़ने लगी, त्यों त्यों उसकी शक्तियाँ विकास पाने लगीं। उसका कोमल और बढ़िया

हृदय संसारके उत्तम २ प्रभावोंसे प्रभावित होने लगा। मेजिनीके पिताके पुस्तकालयमें पुस्तकोंके पीछे छिपाकर कुछ पुराने पेम्फलेट रखे हुए थे। मेजिनीने और पुस्तकें देखते २ उनपर दृष्टि डाली। देखनेपर ज्ञात हुआ कि ये पेम्फ़लेट फ्रान्स-राज्यक्रान्तिके विषयके हैं। कोमल-हृदय बालकने बड़ी उत्सुकतासे उन्हें पढ़ा और अपने भावी-जीवन-प्रासादके लिये ईंट गारा इकट्ठा करना आरम्भ किया।

सोलह वर्षका मेजिनी एक दिन अपनी माताके साथ गिरजेसे लौट रहा था, सामने एक लम्बा, किन्तु कुछ कष्ट-पीड़ित सा व्यक्ति आता दिखाई दिया। पास आनेपर उसने मेजिनीकी माताके सामने अपनी टोपी फैला दी और "प्रवासी देशभक्तोंके लिये" भिक्षा माँगी। १८२१में इटलीके देशभक्तोंने राज्यक्रान्तिका झंडा खड़ा किया था, किन्तु वह सँभल न सका, और झंडा खड़ा करनेवाले हाथोंमें ज़ंजीरें पड़ गयीं। जो देशभक्त भाग सके वे भाग गये। उन भागे हुए देशभक्तोंकी सहायताके लिये यह चन्दा किया जा रहा था। न जाने क्यों-उस लम्बे आदमीकी वह दीन-मूर्ति और वे करुणा जनक-शब्द नवयुवकके हृदयमें धँस गये। इटलीके देशभक्तोंकी यह दशा! वे घरमें भी न रह सकें! वे अपने देशको स्वाधीन करनेके लिये बोल भी न सकें! यह सब विचार थे, जो नवयुवकके चित्तमें घूमने लगे। जैसे गर्म मोमपर लगी हुई जरा सी

चोट भी अपना चिन्ह छोड़ जाती है, ऐसेही यौवनकी गर्मीसे नरम हुए स्वभावतः कोमल हृदयपर इस दृश्यने गहरा आघात किया—मेजिनी दिलही दिलमें इटलीके दुःखोंकी निवृत्तिके उपाय सोचने लगा।

प्रतिदिन उसका हृदय अशान्त होने लगा। ज्यों ज्यों वह अपनी मातृभूमिकी दशापर दृष्टि डालने लगा, उसके हृदयसे लहूकी गर्म आहें निकलने लगीं। वह इटली—किसी दिन जिसकी राजधानीसे निकली हुई आज्ञाके सामने छत्रधारियों-के छत्र झुक जाते थे, जिसके सेनापतियोंके घोड़ोंकी टाप नदियों और समुद्रोंको लाँघकर तूफान मचाती थीं, जिससे निकली हुई पोप आज्ञाके सामने चक्रवर्तियोंके चक्र गिर जाते थे, जिसके गर्भमें पले हुए कवियोंकी वीणाने रोतोंको हँसा दिया था और हँसतोंको रुला दिया था—वह इटली—जननीसे बढ़कर जननी, इटली मेजिनीको अत्यन्त दीन-हीन पराधीन-दशामें पड़ी हुई दिखाई दी। नैपोलियन बोनापार्टने इटली-को जो स्वाधीनता दी थी, उसे स्वयं ही छीन लिया था, किन्तु उसने टूटी फूटी इटलीको जो एकता दी थी, उसका नाश करनेका भार नैपोलियनके शत्रुओंने लिया। वीनाकी सन्धिने इटलीका कुछ भाग तो आस्ट्रियाको देदिया, और कुछ भाग कई छोटे २ राजाओंको बाँट दिया। वे राजा नामके स्वतन्त्र होते हुए भी वस्तुतः आस्ट्रियाकी राजधानीमें अँगुलीपर



यह सभा एक प्रकारसे गुप्त-सभा ही थी, इसकी सारी कार्यवाही संसारके नयनगोचर होने नहीं दी जाती थी, तो भी कार्बोनरीकी भाँति यह गुप्तता में अपनी कृतकृत्यता मानने वाली न थी। कार्बोनरीके गुप्त-जलमें सड़ाँद पैदा होगयी थी, इसे इस लिये गुप्त रखा गयाथा कि बाहरके बुरे प्रभावोंसे इसमें सड़ाँद पैदा न हो।

'युवक-इटली' के साथ नवयुवक मेजिनीका नाम भी इटलीके कोने कोनेमें प्रसिद्धि पाने लगा। यह सभा मेजिनीके कीर्ति-सौरभके लिये प्रभात-वायु का कार्य करने लगी। उसका नाम देशके भक्तोंमें आशा, उत्साह और अटल मातृभूमिकी भक्तिका प्रतिनिधि होगया। उसके लेखोंसे, उसके प्रभावसे और विचारशीलतासे घबराकर राज्याधिकारियोंने मेजिनीको तंग करना आरम्भ किया, किन्तु इस बलात्कार का परिणाम उलटाही हुआ। सरकारने मेजिनीको किलेमें बन्द कर दिया और उसका यश और प्रभाव बन्धन तोड़कर चारों दिशाओं में भाग निकला। शासक लोगोंने उसके लेख छापनेवाले समाचार पत्र बन्द कर दिये, तो बीसियों गुप्तमार्गोंसे होकर उसके देशभक्तिपूर्ण लेख नदीप्रवाहोंकी भाँति दिग्दिगन्तरोंमें फैलने लगे। मेजिनीके गुण-सुवर्णपर सरकारके अत्याचारोंने आगका काम किया—वह और भी चमकने लगा। वह चमक फैलती गयी। और नवयुवक इटलीको जीवनकी चमक

घोर तपस्या कर रहा था। खानेको अन्न नहीं है—पहरनेको वस्त्र नहीं है—पाँव बूटके टूटे हुए तलेके रास्ते धरणीको चूम रहा है, तो भी वह तपस्वी स्याहीननासे भरे हुए लेख लिख रहा है, छाप रहा है, बण्डल बाँध रहा है और पोस्ट-आफ़िसमें डाल रहा है। चेहरेपर किसी भाँतिकी खिझलाहट नहीं। ऊपरसे देखनेमें युवकके समान सुन्दर आकृतिवाला युवक यूरोपमें कोई ही मिले। मुँहपर वह मुस्कराहट है जो कर्तव्य-पालनसे ही उत्पन्न होती है, किन्तु हृदयमें घुसकर देखो तो आँसू और आगके खजाने भरे पड़े हैं। इटलीकी दीन पराधीन दशा-पर निरन्तर आँसू बह रहे हैं और अत्याचारियों और अत्या-चारोंको भस्मसात् करनेके लिये असह्य दावानल जल रहा है। पापका दाह करनेवाले उस भयानक कालानलका अन्त दिखाई नहीं देता। जिसकी छोटी देहमें अनन्त कालानल समा रहा था—आओ पाठक! हम सब मिलकर उस देशभक्त तपस्वी युवा मेजिनीके चरणोंमें प्रणाम करें।

हम आज प्रणाम करते हैं, उस दिन सारे इटलीका युवक-मण्डल उसके सामने सिर झुका रहा था, उसके वचन पर अपने तन, प्राण न्योछावर कर रहा था। जैसे चुम्बक लोहेको खींचता है, इसी भाँति मेजिनीका नाम जोशीले नौजवानोंको अपनी ओर आकृष्ट करता था—लोहेके समान दृढ़ इच्छा और दृढ़पराक्रम रखनेवाला नवयुवा गेरीबाल्डी भी यदि



कार्य-क्षेत्रमें प्रवेश



'साहसे श्री र्निवसति'

साहसमें श्रीका निवास है।

मेजिनी अपने देशमें परदेशी होकर बाहर भाग गया था और फ्रांसके मार्सेल्स नामक समुद्रतट वर्ती नगरमें बैठकर 'युवक-इटली' नामक पत्रद्वारा इटलीके नवयुवकोंमें स्वाधीनताकी प्रबल चाह पैदा कर रहा था। सुदूरवर्ती नगरसे मेजिनी द्वारा फेंकी हुई चिनगारियाँ इटालियन युवकोंके हृदयोंमें स्वाधीनताकी आग जला रही थीं। 'युवक-इटली' नामका पत्र सुदर्शन-चक्रकी भाँति यूरोप-के नगर २ पर घूम रहा था, उससे जहाँ २ युवा हृदयोंमें स्वाधीनताकी सत्ता बैठ गयी थी, वहाँ २ मुकुटधारी नरेशोंके सिंहासन डोल रहे थे। उस चक्रका केन्द्रभूत एक कृशकाय नवयुवक मार्सेल्सके एक कोनेमें अपने तीन मित्रोंके साथ बैठा हुआ

घोर तपस्या कर रहा था। खानेको अन्न नहीं है—पहरनेको वस्त्र नहीं है—पाँव बूटके टूटे हुए तलेके रास्ते धरणीको चूम रहा है, तो भी वह तपस्वी स्वाधीनतासे भरे हुए लेख लिख रहा है, छाप रहा है, बंडल बाँध रहा है और पोस्ट-आफिसमें डाल रहा है। चेहरेपर किसी भाँतिकी झिझलाहट नहीं। ऊपरसे देखनेमें युवकके समान सुन्दर आकृतिवाला युवक यूरोपमें कोई ही मिले। मुँहपर वह मुस्कराहट है जो कर्तव्य-पालनसे ही उत्पन्न होती है, किन्तु हृदयमें घुसकर देखो तो आँसू और आगके खजाने भरे पड़े हैं। इटलीकी दीन पराधीन दशा-पर निरन्तर आँसू बह रहे हैं और अत्याचारियों और अत्या-चारोंको भस्मसात् करनेके लिये असह्य दावानल जल रहा है। पापका दाह करनेवाले उस भयानक कालानलका अन्त दिखाई नहीं देता। जिसकी छोटी देहमें अनन्त कालानल समा रहा था—आओ पाठक! हम सब मिलकर उस देशभक्त तपस्वी युवा मेजिनीके चरणोंमें प्रणाम करें।

हम आज प्रणाम करते हैं, उस दिन सारे इटलीका युवक-मण्डल उसके सामने सिर झुका रहा था, उसके वचन पर अपने तन, प्राण न्योछावर कर रहा था। जैसे चुम्बक लोहेको खेंचता है, इसी भाँति मेजिनीका नाम जोशीले नोजवानोंको अपनी ओर आकृष्ट करता था—लोहेके समान दृढ़ इच्छा और दृढ़पराक्रम रखनेवाला नवयुवा गेरीबाल्डी भी यदि



उसी चुम्बककी ओर खिंच गया तो आश्चर्यही क्या था ? प्यासा वहीं पहुँचता है जहाँ तालाब हो, भूखा वहीं जाता है जहां अन्न मिले। दैव और भावनाका प्रेरा हुआ गेरीवाल्डी भी उस जगह पहुँच गया, जहाँ उसकी इच्छाएँ पूरी करने का सामान मौजूद था, जहाँ शिष्यको मन्त्रका उपदेश करनेवाला गुरु तैयार बैठा था।

गेरीवाल्डीने मेजिनीसे मिलते ही उसे विचारोंमें अपना गुरु माना और मेजिनीने गेरीवाल्डीको देखते ही उसे अपनी भुजा समझ कर स्वीकार किया। चिरकाल तक गुरु शिष्य मिलते जुलते और विचारोंका परिपाक करते रहे। गेरीवाल्डी देशकी दुर्दशाकी कहानी और उसकी निवृत्तिके उपायोंकी फक्किकाएँ सुनाता रहा। उसके हृदयमें दृढ़ विश्वास होता गया कि प्रत्येक इटालियन नवयुवकका कर्तव्य है कि वह मातृभूमिकी स्वाधीनताके लिये यत्न करे, उस यत्न में यदि विघ्न आये तो उनकी पर्वा न करे—माताका कष्ट छुड़ाते हुए यदि गलेमें फाँसी चढ़े तो उसे फूलोंकी मालाके समान समझे, यदि बन्दूक की गोली शरीरमें विश्राम करने आये तो प्रेमीके भेजे प्रसादकी भाँति उसे स्वीकार करे, यदि देश निकाला हो तो माताके व्याज-कोपकी भाँति उसे कुछ कालके लिये समझ कर निश्चयसे विचलित न हो। प्रति दिन तपस्वीसे वर्तालाप करते हुए गेरीवाल्डीके अन्तरात्मामें भी



स्वाधीनताकी भयंकर आग जल उठी। उसका हृदय माताकी सेवामें बलिदान होनेको उतावला होने लगा। गेरीबाल्डीके भीतर भरी हुई शक्तियाँ विकास पानेके लिये मार्ग ढूँढने लगीं। घटना चक्रके प्रभावसे गेरीबाल्डीकी इच्छा पूर्ण हुई।

इटालियन क्रांतिके इतिहासमें १८३१ का साल विशेषतया स्मरणीय रहेगा। यह क्रान्तिकी सबलता और निर्बलता-दोनोंके दिखाने वाला था। नवयुवक हृदयोंको क्रान्ति अपनी ओर जिस प्रबलतासे खींचती है, १८३१ में उसका अभ्यास भली प्रकार दिखाई दे गया और साथ ही यह ज्ञात हो गया कि एक ऐसी जातिमें जो अभी उन स्वार्थत्यागोंके लिये तैयार नहीं जो क्रान्तिकी सफलताके लिये प्रारम्भिक शर्तें हैं, क्रान्ति को कृतकार्यता नहीं प्राप्त हो सकती।

इटलीकी राजनैतिक शतरंजके दो मुहरे बदल गये। रोममें एक कम-अत्याचारी पोपके स्थानमें अधिक अत्याचारी पोपका अभिषेक हुआ और 'पीडमोंट' की राजगद्दीपर एक पुराने ढर्रेके राजाके स्थानमें नयी ज्योतिसे युक्त राजा आरूढ़ हुआ। इस नये राजाका नाम 'चार्लस एलबर्ट' था। युवराज होनेकी दशामें 'चार्लस एलबर्ट' क्रान्तिकारियोंका सहायक समझा जाता था और उसके विचार वस्तुत उदार थे। जब वह राजगद्दीपर बैठा, देश भरके देशभक्तोंकी आशाएँ लहलहा उठीं। वे लोग इटलीके लिये नए युगकी

प्रतीक्षा करने लगे। इन आशाओं और प्रतीक्षाओंको प्रबल वाक्यके समूहके रूपमें लाकर मेजिनीने चार्लस एलबर्टके नाम एक लम्बा पत्र लिखा, जिसमें राजाको उत्साह, साहस और देश भक्ति का आदेश किया और अपनी आशाएँ प्रकाशित की।

इन्हीं परिवर्तनोंके साथ इटलीके युवकोंके मनोंमें भी परिवर्तन हो रहे थे। मेजिनीके 'युवक-इटली' नामक पत्रने उनमें बिजली सी फैला दी थी, सूखे घासमें एक चिनगारी सी फूँक दी थी। वे क्रियाके लिये और स्वय जल कर औरों को जला डालनेके लिये उतारू हो रहे थे। मेजिनी जानता था कि अभी क्रान्तिका दिन दूर है, किन्तु उसके भड़काये हुए युवक नहीं जानते थे। वे क्रान्तिके प्यासे थे और उस प्यासको अपने या दूसरोंके खूनसे बुझाना चाहते थे। बिना चाहे, दिलमें थोड़ा बहुत चिन्तित होते हुए मेजिनीको देशभक्त युवकोंके दबावसे क्रान्तिका झण्डा खड़ा करना पड़ा।

जनोवासे क्रान्तिकी सेनाएँ रवाना हुई। इन सेनाओंका सेनापति 'रामीरनो' को बनाया गया। मेजिनीकी सम्मतिमें यह चुनाव अच्छा नहीं था, किन्तु मेजिनीको अपने अनुयायियोंका अनुयायी बनना पड़ा। संसारके कार्यक्षेत्रमें प्राय ऐसा ही होता है। जो नेता है वे अपने अनुयायियोंके अनुगामी बन जाते हैं, अन्यथा उनका नेतृत्व ही खतरेमें पड़ जाता है। कमान प्रत्यञ्चाको अपने साथ तभी रख सकता है यदि उसके खेंचे

जानेपर स्वय भी खिंच जाय, अन्यथा दोनोंका साथ टूट जायगा। ऐसी ही दशा नर समाजमें होती है। क्रान्तियोंमें जो भयकर दशाएँ उत्पन्न होती हैं, उनके लिये यह घटनाही कारण होती है। क्रान्तिके नेता जनताको भडका देते हैं। भडककर जनता उनके हाथोंमें नहीं रहती—प्राय नेताओं-को ही जनताके हाथकी कठपुतली बनना पडता है। धन्य हैं वे जो उस समय भी अपनत्वको न छोडकर अनुयायियोंके अनुयायी नहीं बनते, वे या तो विकट दशामें भी असली नेता बन जाते हैं, या अपने आपको कर्तव्यकी आगमें आहुति बना-देते हैं। ऐसे लोग धन्य हैं।

रामोरनो कोई बडा साहसी और प्रतिभाशाली सेनापति न था। अपनी शिथिलतासे उसने प्रारम्भमें ही काम बिगाड लिया। आक्रमण पीडमौंटपर होनेवाला था। उस देशमें क्रान्तिकी सेनाएं प्रविष्ट हों, इससे पूर्वही वहाँके राज्याधिका-रियोंको बू आगयी। फल यह हुआ कि देशभक्तोंकी सेनाको उलटे पाँव भागना पडा। मेजिनी बन्दूक कन्धेपर लिये हमेशा सेनाके साथ रहता था, इस भागाभागीमें बीमार होगया और बेहोशीकी हालतमें वापस लाया गया। गेरीबाल्डीको इस आक्रमणके सम्बन्धमें दो काम मिले थे। उसे एक छोटेसे जहाजका कप्तान बनाया गया था और साथही जनोवाकी सरकारी फौजोंमें अशान्ति फैलानेका काम सौंपा गया था।



जनोवामें उसे अधिक सफलता नहीं मिली। कारण वही शिथिलता थी। वहाँ जानेपर गेरीवाल्डीको पता लगा कि अधिकारियोंको पहिलेसेही सूचना मिल चुकी है और गेरीवाल्डीके नाम वारट निकल चुका है। गेरीवाल्डीका जीवन-क्षेत्रमें प्रवेश होगया—और हुआ भी वारटके साथ। एक प्रबल-योद्धाका इस प्रकारसे संसारमें प्रवेश उचितही था।

पहली क्रान्तिका इतनाही फल हुआ। उसे भारी असफलता-का मुँह देखना पडा। ऐसा क्यों हुआ? जाति तैयार नहीं थी। कच्चे घडेमें पानी भरनेसे परिणाम अच्छा न होगा और लकडीकी कुल्हाडीसे लकडी नहीं कट सकती। बिना तैयारीके क्रान्तिकी सफलता असम्भव है।

राजदण्डका अधिकारी होकर गेरीवाल्डी जेनोवासे भाग निकला।





भाग-दौड़।

"अरक्षित तिष्ठति दैव रक्षितम्"
करे खानाबदोशों की, खुदाही खाकसामानी।

महापुरुषों की प्रतिभा नगरों और ग्रामोंमें नहीं, अपितु जंगलोंमें जागती है। जो महान्-आत्मा स्वय ही जंगलोंमें चले जाते हैं, उनपर प्रकृतिको किसी प्रकारका अत्याचार नहीं करना पड़ता। दयानन्द और बुद्ध वृक्षों और पक्षियोंसे, नदी और नालोंसे, परमात्माके अटल नियमोंका पाठ पढ़ने स्वयही चले गये थे। उन पर प्रकृतिको बलात्कार नहीं करना पड़ा। किन्तु जिन महान्-आत्माओं की स्वाभाविक इच्छा आयादो छोड़नेकी नहीं होती, प्रकृति उन्हें बाधित कर देती है, अवस्थाएं उनके पाँव उखाड़ देती हैं, और जैसे वायुके वेग से उठाया तिनका स्वय ही विस्तृत आकाशका भ्रमण करने लगता है, इसी प्रकार वे महान्-आत्मा भी प्रकृति और अन्न

स्थाओंके धक्केसे प्रेरित होकर जगदीश्वरकी अनुपम सुहावनी वाटिकामें स्फूर्ति पानेके लिये विचरने लगता है।

सोना तपानेसे चमकता है। विपत्तिमें असली और नकली मित्रकी पहिचान होती है। असली घोडा विकट मार्गमें पहिचाना जाता है। महापुरुष भी विपत्तिमें आकर गुण दिखाता है। सङ्कटकी परीक्षामें पड़ कर महापुरुषोंके गुण प्रकाशित और विकसित होते हैं। उनकी असलियत बढियासे बढिया होने लगती है। गुणोंका विकास हो, प्रतिभाका प्रकाश हो और आलस्य या कुण्ठताका विनाश हो—इस उद्देश्यसे प्रकृति-अध्यापिका महापुरुषों को घरबारसे जुदा करती है, माताके सुखपर्यंकसे जुदा करती है, और नित नए संकटोंमें डालती है। मुहम्मद स्वय घर छोड कर नहीं गया, उसे भागना पडा। मेजिनीको राजदण्डके भयसे घरही नहीं जन्मभूमि भी त्यागनी पडी। गेरीवाल्डी भी अब अपना नियमित जीवन बिता चुका। अब वह कार्यक्षेत्रमें प्रवेश करता है। उसके जीवन-नाटक का दूसरा कार्य मय अङ्क का, पहला पर्दा उठतेही हम क्या देखते हैं? उसके नाम वारंट जारी है, चारों ओर वह राजपुरुषोंसे घिर रहा है, उसे निश्चय है कि पकडे जाते ही मुझे गोलीका शिकार होना पडेगा।

गेरीवाल्डीको शीघ्रही ज्ञात हो गया कि उसके चारों ओर मनुष्योंका जाल बिछ रहा है और सामान्य दशाओंमें उस

जालसे बचना कठिन है। यदि गेरीबाल्डी कोई सामान्य व्यक्ति होता तो किस प्रकार विचार करता। "मेरा उद्देश्य क्रान्तिमें सहायता करना था। उस कार्यमें औरोंके दोषसे अकृतकार्यता हुई। मेरा कोई दोष नहीं। अब मैं अपनी जानको खतरेमें क्या डालूं और नीति भी तो यही कहती है कि इस समय हथियार रख दो, शत्रुका साथ दो, मीठी २ बातें कर लो, क्षमा मांग लो और फिर समयपर देखा जायगा।" साधारण-पुरुष इसी प्रकार विचार करता, किन्तु गेरीबाल्डीका हृदय और मस्तक उस मसालेसे नहीं बना था जिसमें भय और कायर नीतिकी चोट असर कर सके। उनकी रचना पक्के फौलाद-से हुई थी। उसने इस प्रकार सोचा होगा—"देशके शत्रुओं-को जीतना मेरा धर्म है, पहले यत्नमें असफलता हुई, क्या इससे अपनी हत्या कर दू? क्या अत्याचारीसे डर जाऊं? नहीं—ऐसा न होगा।" ऐसे ही विचार उस समय गेरीबाल्डी के चित्तम उत्पन्न हुए होंगे।

अपने आपको चारों ओरसे घिरता देखकर गेरीबाल्डी भाग निकलनेका ढंग ढूढने लगा। पास ही एक मालीका घर था, उसीमें हमारा नायक घुस गया। मालिन बेचारी भली थी, गेरीबाल्डीकी कथा सुनकर उसे दया आगयी, वह गेरीबाल्डीको एक कमरेमें ले गयी और उसे एक ग्रामीणका वेष पहना दिया। सायंकालके लगभग आठ बजे उसी वेषमें वह



घरसे निकला और बडी लापरवाहीसे पहाडोंकी ओर चल पडा। नये वेषमें उसे कोई भी पहचान न सका। अगले दस दिन पहाडोंमें ही कटे। नगरों या ग्रामोंको बचाता और पगडडियोंसे होता हुआ वह अपनी जन्म भूमिकी ओर चलता रहा। जहाँ भोजन मिल गया, कर लिया नहीं तो निराहार ही सो रहा; बस, इसी प्रकार दु:खमय जीवन बिताता हुआ वह नाइस नगरके पास आ पहुँचा।

जन्मपुरीके पास पहुँच कर उसकी एक इच्छा माताके दर्शनोंकी हुई, किन्तु साथही विचार उत्पन्न हुआ कि कहीं माता घबरा न जाय, या अपने ऊपर ही बन्धन न पड जायँ। बस, कर्तव्य-परायण राही, घरकी माया ममता छोड नदीको तैरकर पार हो गया। उसने दूसरे किनारे जाकर फ्रांसीसी राजकर्मचारीसे भेंटकी तथा अपना नाम धाम और जनोवासे भागनेका कारण साफ़ साफ़ बतला दिया। गेरीवाल्डीने आशा यह की थी कि फ्रांसीसी राजकर्मचारी उसकी कहानी सुन सहानुभूति प्रकाशित करेगा, किन्तु यहाँ लेनेके देने पड गये 'चौबेजी गये थे छब्बे बनने, रह गये दूबे।' उस राजकर्मचारीने गेरीवाल्डीको कैदी बना लिया और कहा कि पेरिससे आज्ञा आने तक उसे कैदमें रहना पडेगा। कहीं क्रान्तिकारी भगोडा फिर भी न भाग निकले, इसलिये उसे एक कमरेमें बन्द करवा दिया, जिसमें पन्द्रह फीटकी ऊँचाईपर केवल एक

खिड़की थी। भला, १५ फीटकी ऊँचाईसे कूद कर भागेगा ? क़ैद करनेवालोंने यही समझा होगा। उन लोगोंका दूर जाना था कि अन्दरसे दीवारपर चढ़कर गेरीवाल्डी खिड़कीमें पहुँचा, उसने अपने ईश्वरको याद किया और बाहर मैदानमें कूद गया।

दूसरे दिन कई मीलका सफर करके हमारा नायक एक ग्राम में पहुँचा। १८ घंटेका भूखा था, पेट-पूजा करनेका स्थान ढूंढने लगा। एक घरमें एक जोड़ा भोजनका आनन्द लेता दिखाई दिया, बिना सकोचके राही घरमें घुस गया, और घर के मालिकको अपनी भूखकी गाथा कह सुनायी। गृहस्वामीने भी खुले हृदय तथा खुली बाहुओंसे उसका स्वागत किया। भोजन हुआ, गेरीवाल्डी मारे प्रसन्नताके फूला नहीं समाता था। गृहस्वामीकी अतिशय प्रसन्नतापर उसे आश्चर्य हुआ और उसने कारण पूँछा। गेरीवाल्डीका शुद्ध हृदय एक दम उबल पड़ा। उसने हँसते हँसते अपनी सारी कथा कह सुनायी और अन्तमें फ्रांसीसी कारागारसे छूटनेकी प्रसन्नतापर खूब तालियाँ बजायी। अब तो क्षणभरमें गृहस्वामीकी त्यौरी बदल गयी। शुद्ध आकाशमें मानो काले मेघकी रेखा दिखायी दी। दुर्दिन होगया। गेरीवाल्डीने आश्चर्यसे पूँछा कि 'माजरा क्या है ?' गृहपतिने उत्तर दिया कि 'जो बात तुमने अभी स्वीकार की है, उसके कारण मेरा कर्तव्य है कि 'मैं तुम्हें फिर गिरिफ्तार करूँ'

इस अचानक वज्रपातसे क्या गेरीवाल्डी डर गया ? बिस्मार्क की तरह गेरीवाल्डीका सिद्धान्त था कि "पृथ्वीपर ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जिससे मुझे भय हो, मैं केवल ईश्वरसे डरता हूँ" । ऐसा निडर गेरीवाल्डी एक गाँवके गृहस्वामीसे क्यों डरने लगा था । उत्तरमें गेरीवाल्डीने कहा "बहुत अच्छा, तब मुझे गिरिफ्तार करलो, किन्तु अभी समय बहुत है, गिरिफ्तारीका समयभी आ जायगा मुझे पेट भरके खा लेने दो, चाहे मुझे दोहरी कीमत देनी पड़े ।" भोजन समाप्त हुआ, शराब उड़ने लगी । गाँवके बहुतसे और भी युवक इस पान लीलामें सम्मिलित हो गये । पान-लीलाके साथ गान लीला होने लगी । गृहपति, राजनीतिक राही और शेष सारी मण्डली कैद और कैदीकी बातें भूल गये । प्रातःकाल वही गृहस्वामी अपने अतिथिको छः मील दूर तक छोड़ने गया ।

शेष यात्रा निर्विघ्न समाप्त करके गेरीवाल्डी मार्सेल्समें पहुँच गया । उस समय सरकारकी ओरसे उसके नाम मृत्यु का फरमान निकल चुका था । अपना नाम पहले पहल समाचार पत्रोंमें देखकर उसे आश्चर्य हुआ । अबसे उसे अपने आपको अधिक छिपानेकी आवश्यकता हुई, इसलिये उसने अपना नाम 'मुसापेन' रख लिया ।

'जिन ढूंढा तिन पाइयाँ' । भौंरेको हर एक वाटिकामें मधु मिल जाता है, और दार्शनिक बुद्धिवाला पुरुष हर स्थानमें

प्रकृतिके अटल सिद्धान्त ढूढ लेता है। जिसने सेवाका व्रत धारण किया है, वह राह जाता भी सेवाका अवसर प्राप्त कर लेता है। मार्सेल्समें गेरीबाल्डीके सिरपर मौतका सुदर्शनचक्र घूम रहा था, तो भी मनुष्य-सेवाके व्रतोंने अपना मन न छोड़ा। उन दिनों मार्सेल्समें हैज़ेका रोग बड़े जोरोंपर था। हैजा भी ऐसा वैसा नहीं—बड़ा मुहलिक। जिसे बिमारी हुई, वह यमका ग्रास हुआ। कायर लोग इस भयानक-रोगके भयसे घर छोड़कर भाग रहे थे। भयने प्रेमको जीत लिया था। पिता अपने बीमार पुत्रको चारपाई पर छटपटाते छोड़कर भाग निकलता था और माँ अपनी रोगी बेटीका प्रेम-बन्धन तोड़ खिसक जाती थी। बन्धुभाव नष्ट होगया था। कोई किसीका नहीं था। गेरीबाल्डी यद्यपि चाहता था कि शीघ्र कहीं भागकर बे-खतरे होजाय, किन्तु दीनोंकी गुहारने उसे न हिलने दिया। उसने अपने एक और मित्रके साथ मिलकर दीन-दुखियोंकी सेवाका कार्य अपने कन्धोंपर लिया। साक्षियाँ हमें बतलाती हैं कि अपने जीवनकी पर्वाह न करके उसने बीमारोंकी माता और पितासे अधिक सेवा की।

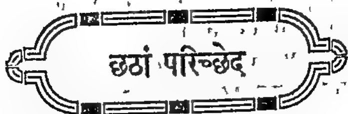
जो हृदय दैवी भावोंसे युक्त हैं, जिनके अन्दर वस्तुत ईश्वरभक्ति और अतएव देशभक्ति अपने विशुद्धरूप से विद्यमान है, उनके प्रेमकी सीमा नहीं होती और उनकी सहानुभूतिकी मात्रा अपरिमित होती है। वे अत्याचारग्रस्तको

देख यह विचार नहीं करते कि यह मेरा है या दूसरेका है। वे जहाँकहीं दु ख और कष्ट देखते हैं, अत्याचार और अनर्थ देखते हैं, उसके निवारणार्थ पिल पड़ते हैं। जो प्रेम या सेवाव्रत 'मैं और मेरे' पर विचार करता है, वह असली नहीं, नकली है। अत्यन्त निकट सम्बन्धसे अपनोंकी सहायता करना मनुष्यता है, मनुष्य मात्रकी सहायताके लिये कटिबद्ध रहना महत्व है और प्राणि मात्रको—मनुष्य पशु पक्षी और कीट पतङ्ग तकको-अपनी सहानुभूतिका पात्र बनाना ऋषित्व है। महत्व और ऋषित्वका प्राणदायक विस्तृत वायुमण्डल 'ममता' के सकुचित खोलमें नहीं समा सकता। गेरीवाल्डी उसी विस्तृत वायुमण्डलमें उड़ान लगाता था, उसी विशुद्ध वायुमण्डल में साँस लेता था।

'तारामैत्रक चक्षूराग, प्रसिद्ध है। आँखें चार हुईं और प्रेमकी फाँसी पड़ गयी। यह प्रेमप्रसाद सबको नहीं मिलता—केवल स्वच्छ हृदय मनुष्य ही इसके अधिकारी होते हैं।' इन्हीं दिनों गेरीवाल्डीको एक ऐसा देशभक्त मित्र मिला, जो इस प्रेमका अधिकारी था। उसका नाम पीट्रोकोली रोस्सटी था। दोनों एक दूसरेको नहीं जानते थे। केवल एक दूसरेका उन्होंने नाम सुन रखा था। गेरीवाल्डी इस मिलापका यों वर्णन करता है—" मुझे उसके खोजनेका परिश्रम नहीं करना पड़ा। परिचित होनेके लिये हमें एक दूसरेकी परख नहीं करनी

यह भूल जाते हैं कि उसी समय उनका बायाँ हाथ एक और व्यक्तिके माथेपर तमचा कसे हुए है। ऐसे लोग स्वाधीनताके पवित्र नामकी रोटी खाते हैं और उसके आधारपर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। किन्तु जो व्यक्ति वस्तुतः स्वाधीनताका प्रेमी है वह किसी व्यक्तिपर, या किसी जातिपर पराधीनताकी श्रृङ्खला देख नहीं सकता, स्वच्छन्द वायु प्रवाहकी भाँति उसकी सहानुभूति, दूरीकी पर्वाह नहीं करती, भगवान् भास्करकी किरणोंकी नाईं उनकी दया और प्रेमकी किरणें हर पदार्थको समान रीतिसे जीवन प्रदान करती हैं। जो व्यक्तियां या जातियाँ वस्तुतः स्वाधीनतासे प्रेम रखती हैं, वे उपनिवेश या अधीन देश रखनेका शौक छोड़ देती हैं। जिनके हृदयमें स्वाधीनताका देवतुल्य भाव वस्तुतः रम गया है, स्वाधीनता ही जिनकी उपास्य देवी है, उनका तन मन और धन उसीके अर्पण हो जाता है। परिवार जाति या देशके बन्धन भी उन्हें बाँध नहीं सकते। महामेघमें लोटती हुई विद्युल्लताकी भाँति उनकी भुजा एकही मारमें योजनोंका सफर पार कर जाती है, और पराधीनताके बन्धन से छूटनेकी इच्छा रखनेवाले मनुष्योंको अभयदान और साहाय्यप्रदान करती है।

गेरीबाल्डी उन्हीं लोगोंमें से था। मार्सेल्समें रहते हुए उसने अमेरिकाके दक्षिणमें एक छोटी सी रियो-



दक्षिण अमेरिकामें युद्ध

अब नाटकका पर्दा बदलता है। गेरीवाल्डीकी अपरिमित—सहानुभूति उसे सुविस्तीर्ण जल राशिके पार पहुँचा देती है। जहाँ कष्ट है वहाँ कष्टका निवारक योद्धा पहुँच जाता है, जहा पराधीनता है, वहाँ पराधीनताका शत्रु गेरीवाल्डी पहुँच जाता है। जो लोग अपनी जातिकी स्वतन्त्रता चाहते हैं और साथ ही दूसरी जातियोंको पॉव तले रौंदते हैं, वे वस्तुत निर्लेप, स्वार्थको निर्लेप परार्थके नामसे पुकारते हैं। वे सकुचित आत्मरक्षाको उदार स्वाधीनताका नाम देते हैं। जो जातियाँ या पुरुष दूसरी जाति या पुरुषकी स्वाधीनताको कुचल सकते हैं, वे स्वाधीनताका नाम न लें तो अच्छा है। उनके मुखमें आकर स्वाधीनता का पवित्र शब्द कलुषित हो जाता है। जब दूसरा शक्तिशाली पुरुष उनके माथेपर तमंचा रखता है, तो वे स्वाधीनताके नामकी मुहारनी शुरू कर देते हैं, किन्तु

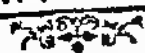
यह भूल जाते हैं कि उसी समय उनका बायाँ हाथ एक और व्यक्तिके माथेपर तमचा कसे हुए है। ऐसे लोग स्वाधीनताके पवित्र नामकी रोटी खाते हैं और उसके आधारपर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। किन्तु जो व्यक्ति वस्तुतः स्वाधीनताका प्रेमी है वह किसी व्यक्तिपर या किसी जातिपर पराधीनताकी शृङ्खला देख नहीं सकता, स्वच्छन्द वायु प्रवाहकी भाँति उसकी सहानुभूति, दूरीकी पर्वाह नहीं करती, भगवान् भास्करकी किरणोंकी नाईं उनकी दया और प्रेमकी किरणें हर पदार्थको समान रीतिसे जीवन प्रदान करती हैं। जो व्यक्तियाँ या जातियाँ वस्तुतः स्वाधीनतासे प्रेम रखती हैं, वे उपनिवेश या अधीन देश रखनेका शौक छोड़ देती हैं। जिनके हृदयमें स्वाधीनताका देवतुल्य भाव वस्तुतः रम गया है, स्वाधीनता ही जिनकी उपास्य देवी है, उनका तन मन और धन उसीके अर्पण हो जाता है। परिवार जाति या देशके बन्धन भी उन्हें बाँध नहीं सकते। महामेघमें लोटती हुई विद्युल्लताकी भाँति उनकी भुजा एकही मारमें योजनोंका सफर पार कर जाती है, और पराधीनताके बन्धन से छूटनेकी इच्छा रखनेवाले मनुष्योंको अभयदान और साहाय्यप्रदान करती है।

गेरीबाल्डी उन्हीं लोगोंमें से था। मार्सेल्समें रहते हुए उसने सुना कि अमेरिकाके दक्षिणमें एक छोटी सी रियो-

ग्राण्डे' नामक रियासत स्वतन्त्रताके लिये ब्राजीलके शासकों से युद्धकर रही है। ब्राजील—दैत्यके सामने 'रियोग्राण्डे' की रिपब्लिक केवल वामनकी हैसियत रखती थी। गैरीवाल्डीका स्वाधीनता-प्रेमी हृदय सहानुभूतिसे प्रेरित होकर उसी ओर खिंच गया। एक छोटासा जहाज खरीदा गया, उसका नाम गुरुके नामपर 'मेज़िनी' रखा गया और शीघ्रही मार्सेल्सले इस छोटेसे अमर-सैन्यका प्रस्थान हुआ।

साहसीका वीर चरित्र विलक्षण घटनाओंसे भरा हुआ होना चाहिये। नहीं तो साहसीका साहस पक्का नहीं होता। यदि बीचमें छोटी २ चोटोंसे वह पक्का न हो जाय, तो असली भयानक चोट आनेपर मिट्टीके घडेकी भाँति वह चूर्चूर हो जायगा। इस यात्रामें भी गैरीवाल्डीके साथ दो ऐसी ही घटनाएं हुईं। एकमें उसके अतुल साहसने काम दिया, दूसरीमें दैवने सहायता दी। पहली घटना यों हुई—अपने लक्ष्य स्थानपर पहुँचनेसे पूर्व गैरीवाल्डीको अपना जहाज एक स्थानपर ठहराना पड़ा। उसका विचार था कि कुछ आराम करके पूरी तैयारीके साथ आगे चला जाय। किन्तु गैरीवाल्डीका नाम क्रान्तिकारियोंकी सूचीमें आ चुका था और यह भी ज्ञात हो गया था कि वह ब्राजीलसे लड़ने आया है। थोड़े ही दिनों पीछे उसे वहाँसे चल देनेका

इशारा कर दिया गया। जिस बन्दरगाहपर जहाज ठहरा था, वहाके एक धनिकसे कुछ रुपये वसूल करने थे। अब धनिकने सुना कि गेरीवाल्डीको भाग जानेकी आज्ञा हुई है तब वह आनाकानी करने लगा। कूच करनेकी रात निकट आ गयी आज्ञाके कारण गेरीवाल्डीको नगरमें जानेसे भय था क्या किया जाय ? गेरीवाल्डीने साहसका अवलम्ब लिया। रात होते ही किनारेपर पहुँचा। ऊपरसे नीचे तक अपने आपको लम्बे कपड़ेसे ढक लिया। दोनो जेबोंमें दो पिस्तौलें डाल लीं और धनिकके घरकी ओर चल दिया। धनिक महाशय तो यह समझ कर कि जहाज अबतक बन्दरगाहसे छूट चुका होगा, अपने द्वार पर खड़े हवा खा रहे थे। इतनेमें गेरीवाल्डीकी लम्बी मूर्ति सामने दिखायी दी। उसके छिपे हुए देहको भी धनिकने पहचान लिया और भाग जानेका इशारा किया। किन्तु भागना कैसा ? गेरीवाल्डी न इधर हुआ न उधर, सीधा धनिकके पास पहुँचा और उसके माथेपर तमचा रख दिया। धनिक कहने लगा 'अच्छा बातचीत कर लो' माथेपर तमचा रखेही रखे गेरीवाल्डी इतना ही कहता रहा —'मेरा धन' आखिर धनिकको कुछ न सूझी, चुपकेसे गिनकर धन गेरीवाल्डीके हाथमें दे दिया। कुछ समय बाद जहाज बन्दरगाहसे रवाना हुआ। दूसरी घटना यों हुई —गेरीवाल्डीका जहाज़ मार्गमें शत्रुके दो जहाजोंसे भिड़ पड़ा। खूब युद्ध



हुआ। सिपाही एक दूसरेके जहाजोंपर चढ़कर युद्ध करने लगे। अन्तको जीत गेरीवाल्डीकी रही। शत्रुके जहाज पीठ दिखा कर भाग निकले, किन्तु वे हमारे नायकको घायल कर गये। गोली गेरीवाल्डीकी गर्दनके किनारेमें घुस गई। देरतक वह मूर्छित दशामें रहा, मूर्छा टूटनेपर भी रोगसे मुक्त न हुआ। तब जहाजको बन्दरगाहपर डेरा डालना पड़ा। पासही नगरमें अस्पताल था, वहाँ उसका पूरी तरह इलाज हुआ। डाक्टरने गलेसे गोली निकाल दी और धीरे धीरे गेरीवाल्डी चंगा होकर चलने फिरने लगा।

सावधान होकर गेरीवाल्डीने देखा तो अपने आपको फिर बन्दी पाया। क्रान्तिकारी और ब्राजीलके शत्रुको दक्षिण अमरीकामें कौन आश्रय देता। जहाँ गेरीवाल्डी ठहरा हुआ था, वह भी एक छोटीसी रिपब्लिक थी, किन्तु रियोग्राण्डेकी रिपब्लिकके साथ उसकी मिताई न थी। अपनेको फिर क़ैदी देखकर गेरीवाल्डी भाग निकलनेके उपाय सोचने लगा। सोचते २ आखिर ढग निकल आया। अभीतक वह केवल नजरबन्द था, हथकड़ियोंका क़ैदी नहीं बना था। एक मित्रको मिलनेके बहाने वह कुछ दूर गया, वहाँ कुछ मित्रोंके यत्नसे उसे एक घोड़ा और एक पथदर्शक मिलगया। अवसर ताक कर वह भाग निकला। दूरतक भाग गया। पथदर्शकने अच्छी सहायाता की। कोई भी विघ्न उपस्थित न हुआ। आगे एक नदी

थी। पथदर्शक उससे पार होनेका मार्ग ढूंढने गया और गेरीबाल्डी घोडेकी पीठ परसे उतर, कुछ दूर जाकर, आराम करनेके लिये लेट गया। कुछ देर होगयी और पथदर्शक न लौटा। कुछ उतावला होकर गेरीबाल्डी उठने लगा कि इतनेमें एक गोली सनसनाती हुई पाससे निकल गयी। उसने लौट कर देखा तो घुडसवारोंका एक दस्ता किरचें ताने हुए उसकी ओर दौडा आ रहा है। अब भागनेकी चेष्टा करना भी व्यर्थ था। गेरीबाल्डी पकडा गया और उस नगरके गवर्नरके सामने पेश किया गया। शासक कुछ तेज स्वभावका आदमी था, गेरीबाल्डीसे पूछने लगा कि 'तुम्हें भागनेमें किस किस ने सहायता दी ?' गेरीबाल्डीने भागनेके लिये अपने सिवा किसीको भी उत्तरदाता न ठहराया। बहुत पूछा गया, किन्तु उसने किसीका भी नाम न लिया। तब तो उसके दोनों हाथ पीठकी ओर बाँध कर उसे छतसे लटका दिया गया। क्रूर शासकने उसे कोडेसे मारा और फिर वही प्रश्न पूछा। वीर केसरीके हाथ बँधे हुए थे। वह शासकको विनयका पाठ पढानेमें अशक्त था, खून उबल उठा, किन्तु हाथ पाँव बँधे हुए थे। और कुछ न हो सका तो गेरीबाल्डीने घृणासे शासकके मुँहपर थूक दिया।

इसके पीछे गेरीबाल्डीपर बडे अत्याचार हुए। उसे इसी भयंकर दशामें घण्टों तक टाँग रखा गया। और भी सब तरह उसे खूब तंग किया गया। किन्तु उस शूरवीरके



एनीटा था। एनीटाको गेरीवाल्डीने इतना ही कहा 'तू मेरी है' और वह उसकी हो गयी। दोनों प्रेमी भुजामें भुजा दिये घरसे बाहर हो गये। यही एनीटा जगत्प्रसिद्ध एनीटा है। जब तक चाँदका नाम रहेगा तब तक चाँदनीके गुण गाये जायँगे। जब तक इतिहासमें गेरीवाल्डीका नाम है, तब तक एनीटा भी पुजेगी। गेरीवाल्डीके साथ एनीटाने भी दीनोंके दुःख हरनेके लिये, और स्वाधीनताकी रक्षा करनेके लिये अपना लहू बहाया था, और जानको खतरेमें डाला था।

जिस छोटी सी रियासतकी रक्षाके लिये गेरीवाल्डी कटिबद्ध हुआ था, उसके जंगी बेड़ेमें पूरे तीन छोटे २ जहाज थे। इन तीनोंके द्वारा वह ब्रजीलके समुद्रमें प्रवास करना चाहता था। इस छोटे से बेड़ेका सेनापतित्व गेरीवाल्डीको सौंपा गया। गेरीवाल्डीने इस अद्भुत असम-युद्धको असाधारण योग्यतासे किया। कई शिकार मारे, कई जहाजोंको तोड़ा फोड़ा और कई बार शत्रुके चंगुलसे बचकर निकल गया। एकबार अकस्मात् उसके जंगी बेड़ेके तीनों जहाज तितर-बितर होगए। वह अकेला ही अपना जहाज लिये, एक छोटे से बन्दरगाहपर पहुँच, साथियोंको आराम देने लगा। इस अवस्थामें उसे सन्देह हुआ कि शत्रु उसपर आक्रमण करेगा। वहीं एक ऊँची भूमिपर अपने जहाजकी तोप लगाकर उसने किला सा तैयार कर लिया और आक्रमणकी प्रतीक्षा करने

लगा। छोटे से जहाजके मुट्ठीभर आदमी किनारेपर रक्षाके लिये तैनात किये गए। शीघ्र ही गेरीवाल्डीके सन्देह सच्चे साबित हुए। कई जहाज ब्राजीलका झंडा फहराते हुए आते दिखाई दिये। युद्ध आरम्भ हो गया। उधर कई तोपें, इधर केवल एक तोप। युद्ध बहुत असमान था, परन्तु गेरीवाल्डी का साहस एकको सवा लाख बना देता था। हर एक योद्धा शेरकी भाँति लड़ने लगा। सभी साहससे लड़ रहे थे, किन्तु उन सबके बीच एक स्त्री थी, जो साहसकी देवी बन रही थी, जिसके निर्भय साहससे वीरोंके हृदय उत्साहित हो रहे थे। वह स्त्री एनिटा थी। गेरीवाल्डीने उसे जुदा रहनेके लिये बहुत समझाया, किन्तु वह कहाँ मानती थी। जहाँ पति है वहाँ पतिकी प्यारी होगी। समुद्रकी उत्ताल तरंगोंमें, तोपके भयकर गोलोंमें और आपत्तिके कठोर कुठाराघातोंमें भी साथ रहकर पतिका साथ देनेके कारण ही एनिटाका नाम आज इतिहास प्रसिद्ध हो रहा है। वह वस्तुत गेरीवाल्डीके लिये गृहिणी, मन्त्री, उपसेनापति और सेविका—यह सब कुछ थी। युद्धमें परमात्मा गेरीवाल्डीका सहायक था। इस युद्धके एक दृश्यका वह स्वय यों वर्णन करता है —" जब एनीटा, हाथ में तलवार लिये, जहाजपर योद्धाओंको उत्साहित कर रही थी, एक तोपका गोला आया, और दो आदमियोंके साथ एनिटाको गिरा गया। मैं उसे मरी हुई पानेकी आशकासे,

लपका, किन्तु उससे पूर्वही वह सुरक्षित दशामें उठ ख
हुई। दोनों आदमी मर गए। मैंने तब उससे नीचे चले ज
की प्रार्थना की। उसने उत्तर दिया—'हाँ मैं जाऊँ!' कि
उन कायर लोगोंको नीचेसे ऊपर निकालनेको जाऊँगी
जान बचानेके लिये वहाँ जा छिपे हैं" ऐसाही उसने कि
भी। शत्रुके जहाज़ोंको निराश लौटना पड़ा।

इसके कुछ दिनों बाद एक और युद्ध हुआ। उसमें
एनिटाने ऐसी ही वीरता दिखायी थी। गेरीवाल्डीके सा
काम करनेवाले शेष दोनों सेनापति मर गये। जहाजसे किना
पर आने जानेके लिये कोई दूत न रहा। यह काम एनिटा
अपने ऊपर लिया। उधरसे शत्रुके गोले दनादन बरस रहे
और एनिटा एक खुली किश्तीमें बराबर जहाजसे किना
और किनारेसे जहाजपर आती जाती रही। जिस परमात्म
ने गेरीवाल्डीको अभयदान दे रखा था, उसीने एनिटा प
रक्षाका हाथ रख छोड़ा था।

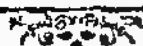
इसी प्रकार युद्धका क्रम या अक्रम जारी रहा, क्योंकि
बड़ी सेनासे मुट्ठी भर सेनाका युद्ध तभी चल सकता है यदि
वह बहुत ही अक्रम हो। कभी २ तो गेरीवाल्डी केवल पन्द्र
सोलह सिपाहियोंका ही सेनापति रह जाता था। फिर भी
कुछ न कुछ करतो ही जाता था। इसी बीच गेरीवाल्डीको
ज्ञात हुआ कि उसे अपना घर बनाना चाहिये। एनिटा ने ग

धारण किया था और उसके लिये विश्राम आवश्यक था। एक गाँवमें किसी किसानका घर खाली पड़ा था, बस वहीं डेरे डाले गए। यथा समय एनिटाने एक बालक उत्पन्न किया। कुछ दिन गेरीबाल्डीको बच्चे और उसकी माताकी आवश्यकताओंके पूरा करनेकी ही चिन्ता रही। वह घोड़ेपर सवार हो दूर दूर चला जाता और आर्केट आदि द्वारा कुछ कमा लाता था। जिस रिपब्लिकके लिये वह लड़ रहा था, वह इतनी निर्धन थी कि उससे कुछ माँगना या लेना उदारनायक को उचित नहीं प्रतीत होता था।

अवस्थाओंने उसे इस आराससे अधिक दिन न बैठने दिया। शत्रु आ गया और इस नये परिवारको भागना पड़ा। कई दिन तो माताको बच्चा गोदमें लिये हीं लिये घोड़ेकी पीठ पर बिताने पड़ें। किन्तु अब इस दशामें एनिटाका निरन्तर पतिके साथ रहना असम्भव था। पतिको फिर रणक्षेत्रमें जाना पड़ा, और एनिटाको उसके एक मित्रके पास ठहरना पड़ा।

छोटे छोटे युद्धोंको हम छोड़ देते हैं। नमूनेके तौरपर अगले परिच्छेदमें एक युद्धका वृत्तान्त पाठकोंको सुनाते हैं, जिससे उन्हें ज्ञात हो जायगा कि गेरीबाल्डी किस प्रकारका युद्ध करनेवाला था।





कुछ घण्टों तक गेरीवाल्डी आगे बढ़ता रहा। उसे ज्ञात न हुआ कि शत्रुके एक दलने उसे देख लिया है। वह चौकन्ना होकर बढ़ रहा था और शत्रुका एक १५०० सिपाहियोंका दल उसे घेरनेके लिये आ रहा था। एक दूसरेको देखनेमें देर नहीं लगी, स्थान खुला था, उसमें छिपना कठिन था, और भागना असम्भव था। भागना गेरीवाल्डीके युद्ध शास्त्रमें लिखा भी नहीं था। शत्रु उसपर आक्रमण करे, इसकी अपेक्षा शत्रु पर आक्रमण करना अधिक उपयोगी समझ कर अपने दो सौ सिपाहियोंके साथ गेरीवाल्डी घूमा और शत्रुके अग्रगन्ता घुडसवारोंपर टूट पडा। शत्रुदलका अगला भाग पहली चोटमें भाग निकला।

अगला भाग तो भाग गया, परन्तु शत्रुका मुख्य दल पीछे आ रहा था। गेरीवाल्डीने खतरा देख लिया। इटालियन दलके एक सिपाहीके लिये शत्रुके पास छ सिपाही थे। असमानता स्पष्ट ही थी, और देशभक्त दलके लिये बडी भयावनी होती यदि उसका मुखिया गेरीवाल्डी न होता। वह गेरीवाल्डी, जो केवल परमात्मासे डरना जानता था, १५०० सिपाहियोंकी क्या पर्वाह करता था। अपने मुट्ठी भर सैनिकों को उसने यों सम्बोधन किया—

"शत्रुकी संख्या बहुत अधिक है, हम थोडे हैं। यह और भी अच्छा है। हम जितने ही कम होंगे, युद्ध हमारे लिये

उतनाही अधिक कीर्तिकर होगा। शान्त रहो। जब तक दुश्मन पास न आवे, गोली मत चलाओ, जब वह पास आ जाय तब किर्चका वार करो"।

वीरता-युक्त शब्दोंने वीरोंके हृदयोंमें बिजली का सञ्चार कर दिया। 'युद्धमें जीतेंगे या मरेंगे' की दृढ़-प्रतिज्ञासे सब वीरोंकी जिह्वायें फड़क उठीं, और वे बढ़ते हुए शत्रुकी प्रतीक्षा करने लगे। शत्रुके सिपाहियोंने लगभग ६० गजकी दूरीसे गोलियाँ चलायीं। समय देख कर इटालियन दलने भी प्रचण्ड आक्रमण किया। पहले ही आक्रमणमें शत्रुका सेनापति मर गया। मंगलाचरण अच्छा हुआ। गेरीवाल्डी भूखे शेरकी भाँति गर्ज कर अपने सूरमाओंके आगे हुआ और अदम्य बल से संग्रामके बीचोबीच जा कूदा।

अचानक गेरीवाल्डीका घोड़ा थकने लगा। न जाने उसे गोली लगी, वह बैठ गया। गेरीवाल्डीको भी भूमि पर गिरना पड़ा। ऐसे पेचीदा समयमें सेनापतिका गिरना अमंगल होता है। गेरीवाल्डी को चिन्ता हुई कि कहीं इटा-लियन-दल उसे मरा हुआ न समझ ले। अपने फेंटेमें से पिस्तोल निकाल उसने आकाशमें दाग दी। यह उसके जीवित होनेका पर्याप्त प्रमाण था। वह थाम लिया गया और इटा लियन-दल और भी अधिक भयकर पराक्रमसे प्रतिपक्षी दल का मर्दन करने लगा।



उधर गेरीवाल्डीके सिपाही शत्रुसे विजय श्री छीन रहे थे, उसी समय एक छोटा सा विरोधी दल वहाँ आ पहुँचा। विरोधी दल छोटा था, परन्तु रोगी मण्डलके लिये पर्याप्त था। विरोधी दलके नेताने अञ्जोनीके पास दूत भेजकर कहलाया कि 'हमलोग आ गए हैं, आपलोग सब ही अपने हथियार रख दें।' अञ्जोनीने जो उसका उत्तर दिया, उसने मामला तय कर दिया। उत्तर यह था कि "इटालियन लोग हथियार रखना नहीं जानते। जाओ, नहीं तो यद्यपि तुम बहुत हो तो भी मैं तुम्हारा खातमा कर दूँगा। जब तक मेरे पास एक आदमी भी रहेगा, हम लडते रहेंगे। और यदि मैं अकेला रह गया तो मैं बारूद में आग लगाकर तुम्हें और अपने आप को जला दूँगा।" इस धमकीसे डरकर विरोधी दल नौ दो ग्यारह हो गया।

इस युद्धमें बडी २ सेनाएँ न थीं, किन्तु थोडी सेनाओंके साथ गेरीवाल्डीने जो काम किया, वह किसी बडे से बडे सेनापतिके साहसिक कार्यसे छोटा न था। प्रतिभाशाली सिपाहीके सिवाय कोई इस असमानता और कठिनतासे पार नहीं पा सकता था। पार पाना भी ऐसा वैसा नहीं, सातगुने शत्रुके दम और पैर उखाड देना, और मैदानके स्वामी बन जाना। और यह सब कुछ अपने लिये नहीं—अपनी नौकरी के लिये नहीं, अपने देशके लिये भी नहीं, अपितु स्वाधी-

नताके लिये, एक छोटी और निर्बल जातिकी सहायता के लिये।

इस घटनासे गेरीवाल्डीका यश चारों ओर फैल गया। रिपब्लिकने उसके प्रति धन्यवादका प्रस्ताव स्वीकार किया। अन्यदेशोंके वासी, जो वहाँ निवास करते थे, उसके दर्शनों से अपनी आखोंको पवित्र करने लगे। वह रिपब्लिककी राजधानी मोएटवीडियोमें आया तो जनताने उसका असाधारण अभिनन्दन किया। वहाँ फ्रांसके कुछ जहाज आये हुए थे, उनके अध्यक्षने गेरीवाल्डीको लिखित बधाई दी। लिखित बधाईको पर्याप्त न समझ कर वह स्वय ही मिलनेके लिये आया। गेरीवाल्डीके घर आकर उसने जो कुछ देखा, उससे महाराज चन्द्रगुप्तके मंत्री चाणक्यका दृश्य याद आ जाता है।

फ्रेंच-सेनापति सायकालके समय उससे मिलने आया। पहले स्थान ढूँढनाही कठिन था। घर ऐसे गरीब भाग में था कि शायद निर्धनसे निर्धन सिपाही भी उधर न रहता, खैर, घर तो मिल गया। दरवाजा खुला पड़ा था। देखनेपर प्रतीत हुआ कि वह बद हो ही नही सकता। उसमें साँकल है ही नहीं। द्वार रात दिन खुला रहता था। वर्षा और हवा अन्दर खुला प्रवेश करते थे। फ्रेंच सेनापतिने अन्दर नजर दौडायी तो भयानक अँधेरा पाया। खैर, फिर भी वह अन्दर घुस गया।



अभी कुछ कदम ही गया होगा कि एक कुर्सीसे ठोकर लगी। आगन्तुक चिल्लाकर कहने लगा :—

"हो गेरीवाल्डी ! क्या तुम्हें देखनेके लिये भी अपनीजान को खतरेमें डालना आवश्यक है ?"

गेरीवाल्डीने सेनापतिकी आवाज तो नहीं पहिचानी, पर शब्द सुनकर अपनी स्त्रीको पुकारा और रोशनी लाकर रास्ता दिखानेको कहा।

पनिटाने उत्तर दिया कि 'मैं रोशनी कहाँसे लाऊँ। बत्ती खरीदनेके लिये घरमें तो कुछ भी नहीं है'

गेरीवाल्डीने कहा ' बहुत अच्छा '। और सेनापतिको अन्दर आनेके लिये निमन्त्रण दिया। फ्रेंच-सेनापतिको आश्चर्य हुआ। वह नहीं समझ सका कि इतना बड़ा विजेता इस दरिद्रतामें रह सकता है। किन्तु गेरीवाल्डीके लिये यह दरिद्रता कर्तव्यका भाग था। जो तपका जीवन वह व्यतीत करना चाहता था, यह निर्धनता भी उसकी अङ्गभूत थी। धनके लिये, राज्यके लिये, या सुखके लिये जो लोग युद्ध करते हैं, वे दुःख नहीं सह सकते, किन्तु संसारको पराधीनताके बन्धनसे छुडानेके लिये जो व्यक्ति अपनी जानको हथेलीपर रखते हैं, वे दुःखका, विपत्तिका और निर्धनताका स्वागत



महाकवि अलफायरी

डीके बायें हाथका खेल है, उसकी धरोहर-पुस्तकमें इटल का ऋण-हिसाब समाप्त हो चुकनेको था। भगवानके ऐस दूत आ रहे थे, जो इटली-वासियोंको स्वतन्त्रताका सन्देश सुना रहे थे। उन दूतोंमेंसे पहला, जिसने इटालियन वीणा की तार हिलायी, महाकवि अल्फ़ायरी था। अंधेरी रातों पहली दियेकी बत्ती अल्फायरीने ही जगायी। इस महाकवि डैएटेके समयसे सोयी हुई सरस्वतीको जगा दिया, और म हुए साहित्यमें नयी रूह फूँक दी। इटलीके मनपर स्वभावत काव्य और नाटकका बहुत प्रभाव पड़ता है, मनोभाव उ पर गहरी चोट करते हैं। अल्फायरी भी नाटक-लेखक था उसने दर्जनसे अधिक दुःखान्त-नाटक लिखे हैं। उनमेंसे कइयोंका नाम ही स्वाधीनता-नाटक है। वस्तुतः अल्फायरी की सब रचनाएँ स्वाधीनताके उपदेशोंसे, स्वाधीनताके गुणों से और स्वाधीनताके सगीतोंसे भरी पड़ी हैं। उनमें स्वाधी नताका यहाँतक प्रवेश है कि ढाँचेमें भी पुराने अलकार शास्त्र के नियमोंपर ध्यान नहीं दिया गया। रचनामें भी रिवाजके बन्धनोंको तोड़ दिया गया है। अल्फायरीके नाटकोंमें हम एक नयी इटली-माताको सुन्दर वेषभूषासे युक्त होकर समा धिस्थलमे उठता हुआ देखते हैं, और आते हुए प्रभातका आशागीत सा सुनते हैं। यह महाकवि स्वाधीनताका प्रथम सन्देशहर था।

दूसरे सन्देशहरका नाम मन्ज़ोनी था। और दृष्टियोंसे यह लेखक अल्फायरीसे बहुत कुछ विपरीत था, उसका अपवाद था। अल्फायरीके आचरण यदि बहुत गर्हणीय नहीं तो स्तुतियोग्य भी नहीं थे। मन्ज़ोनी बड़ा शुद्धाचारी और मुनिवृत्ति था। जहाँ अल्फायरी स्त्रियोंके पीछे भागता था, लोकलज्जाके भयसे अपने आपको चारपाइयोंसे बाँधता था, और अब तक भी कोई नहीं जानता कि जिस कौण्टेस आव्-अल्बनीके साथ वह लगभग बीस साल तक रहा, वह उसकी कौन थी; जहाँ मन्ज़ोनी प्राणेश्वरीका पति था, उत्तम गृहस्थी था और धार्मिक-जीवनका आदर्श था। दोनोंमें यह भेद था, किन्तु इटलीके प्रति दोनोंकी वृत्ति अभिन्न थी। अल्फायरीकी भाँति मन्ज़ोनोको भी इटलीके इतिहासपर विश्वास था, इस लिये भविष्यपर श्रद्धा थी। वह भी इटलीको स्वाधीन और समृद्धिशाली देखना चाहता था। वह भी मातृभूमिकी रुकी हुई उन्नतिपर आठ आँसू बहाता था। उसके काव्य खण्ड और उपन्यास गिनतीमें कम हैं, किन्तु महत्वशाली हैं। उनमें प्रतिभा, शुद्धता और देशभक्तिका अनमोल मेल है, देशमें मन्ज़ोनीके लिये श्रद्धा थी और उसके ग्रन्थोंके लिये आदरका अतिशय था। इटली देश पहले महान् था, अब वह स्वाधीन होकर फिर महान् हो सकता है—ये भाव हैं, जो मन्ज़ोनीके ग्रन्थोंमें ओतप्रोत पाये जाते हैं–इन्हें जनतामें फैलानेके कारण वह इटलीके रचयिताओंमें से माना जाता है।

महावीर गेरीबाल्डी



धुरन्धर लेखक-मनज़ोनी

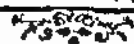
आदर्श प्रेस काशी।

(पृष्ठ संख्या ६६)

दूसरे सन्देशहरका नाम मन्ज़ोनी था। और दृष्टियोंसे यह लेखक अल्फायरीसे बहुत कुछ विपरीत था, उसका अपवाद था। अल्फायरीके आचरण यदि बहुत गर्हणीय नहीं तो स्तुतियोग्य भी नहीं थे। मन्ज़ोनी बडा शुद्धाचारी और मुनिवृत्ति था। जहाँ अल्फायरी स्त्रियोंके पीछे भागता था, लोकलज्जाके भयसे अपने आपको चारपाइयोंसे बाँधता था, और अब तक भी कोई नहीं जानता कि जिस कौण्टेस आव् अल्बनीके साथ वह लगभग बीस साल तक रहा, वह उसकी कौन थी, वहाँ मन्ज़ोनी प्राणेश्वरीका पति था, उत्तम गृहस्थी था और धार्मिक-जीवनका आदर्श था। दोनोंमें यह भेद था, किन्तु इटलीके प्रति दोनोंकी वृत्ति अभिन्न थी। अल्फायरीकी भाँति मन्ज़ोनीको भी इटलीके इतिहासपर विश्वास था, इस लिये भविष्यपर श्रद्धा थी। वह भी इटलीको स्वाधीन और समृद्धिशाली देखना चाहता था। वह भी मातृभूमिकी थकी हुई उन्नतिपर आठ आँसू बहाता था। उसके काव्य खण्ड और उपन्यास गिनतीमें कम हैं, किन्तु महत्वशाली हैं। उनमें प्रतिभा, शुद्धता और देशभक्तिका अनमोल मेल है, देशमें मन्ज़ोनीके लिये श्रद्धा थी और उसके ग्रन्थोंके लिये आदरका अतिशय था। इटली देश पहले महान् था, अब वह स्वाधीन होकर फिर महान् हो सकता है—ये भाव हैं, जो मन्ज़ोनीके ग्रन्थोंमें ओतप्रोत पाये जाते हैं—इन्हें जनतामें फैलानेके कारण वह इटलीके रचयिताओंमें से माना जाता है।

इन तथा इनके समानधर्मा अन्य कवियों तथा लेखकोंसे उपजाई जाकर क्रान्तिकी ज्वाला इधर उधर घूम रही थी, पहले और पीछेकी अन्य घटनाएँ उसकी सहायकारिणी हुईं। नैपोलियनने इटलीको जीतकर स्वतन्त्र कर दिया। चाहे वह स्वयं उसका मुखिया बन गया, किन्तु इटलीको एक बार स्वाधीन होनेका स्वाद चखा गया। इस स्वादने इटालियन लोगोंके चित्तोंमें असन्तोषकी ज्वालाको और जोरसे चला दिया। कुछ दिनोंकी एकता और स्वाधीनताके पीछे जब वायनाकी सन्धिसभाका सर्व दाही प्रस्ताव हुआ, तब इटलीको फिर आस्ट्रियाके अधीन होना पडा। जो केसरी एकबार निर्जन वनमें स्वच्छन्द विहार कर चुका हो वह सहजही काठ घरमें बन्द नहीं किया जा सकता। ये नयी बेड़ियाँ इटलीके अङ्ग प्रत्यङ्गमें चुभने लगीं। आस्ट्रियाका शासन इटलीवासियोंको प्रतिदिन भारीसे भारी प्रतीत होने लगा।

उस समय इटलीकी कई भागोंमें बँटा हुआ था और हर एक भागके शासक अत्याचार, अनुदार विचार और अमानुष व्यवहारमें एक दूसरेको मात करनेके यत्नमें लगे हुए थे। इटलीके सारे भागोंकी एक ही दशा थी। *लम्बार्डी* और वेनिसका शासन अनुदार अत्याचारियोंके सर्दार आस्ट्रियाके प्रधान मन्त्री *मैटर्निच*के प्रतिनिधि ही करते थे। *मैटर्निच*का नाम ही इस बातको प्रमाणित कर देता है कि *लम्बार्डी* और



वेनिसके वासी फूलोंकी सेजपर नहीं सोते थे। नेपल्स और *सिसिली* नामको स्वतन्त्र थे, परन्तु यह जानकर सन्देह दूर हो जाते हैं कि वहाँ स्पेनसे आया हुआ राज परिवार राज्य करता था, और जिस समयका हम वर्णन कर रहे हैं, उस समय वहाँ फर्डिनण्डका राज्य था, जिसकी क्रूरतामें धोखेबाजीका पैवन्द लगा हुआ था। इटलीकी दशा ऐसी गिर गयी थी कि टस्कनीको हम केवल इस लिये खुशी प्रान्त कहते हैं कि वहाँका ग्राण्डड्यूक सैकड़ोंको एकदम गोलियोंका शिकार नहीं बनाता था। सुख और चैन तो वहाँ भी न थे। यही हालत और छोटे छोटे प्रान्तोंकी थी।

दो प्रान्त थे, जिनपर निराश इटलीवासियोंकी दृष्टि आशा सहित पड़ती थी। उनमेंसे पहला रोम था। रोममें चिरकालसे पोपका राज्य चला आता था। केवल एक नगर ही नहीं, इर्द गिर्दका बहुत सा भाग भी पोपकी ही जागीरमें गिना जाता था। पोप रोमन कैथोलिक ईसाइयोंका गुरु था, किन्तु धार्मिक प्रधानतासे उसकी राजनीतिक-प्रधानतामें हानि नहीं आती थी। भेद इतना ही था कि जहाँ अन्य नरपति केवल शासन सम्बन्धी अधिकारोंके बलपर ही प्रजाको कष्ट दे सकते थे, वहाँ रोमका पोप शासन और धर्म, दोनोंके नाम अपनी पालनीय प्रजाका लहू चूस सकता था। केवल लौकिक स्वामियोंका अधीनतामें रहनेवालोंकी अपेक्षा लौकिक-



धार्मिक-स्वामियोंकी प्रजाको अधिक दुःख भोगने पडते थे। इतना होते हुए भी एक बात थी। रोमका पोप आस्ट्रियाके नीचे नहीं था। उसके लिये मेटर्निचकी अँगुलीपर नाचना आवश्यक नहीं था। उसकी धार्मिक स्थिति उसे आस्ट्रियाकी वशंवदतासे ऊँचा उठा देती थी। इस लिये अन्य छोटे २ शासकोंकी अपेक्षा, रोमका शासक, यदि चाहता तो, अपने राज्यमें अधिक सुधार कर सकता था। वह चाहता तो अपने धार्मिक-महत्वके बलपर सारे देशको स्वाधीनताका अमृत पान करा सकता था। यह सुख-सपना पहले पहल प्रसिद्ध दार्शनिक गयोबर्टीने देखा था।

गयोबर्टी बडा भारी दार्शनिक था। उसने दर्शनों पर बहुतसी पुस्तकें लिखी हैं। वे सभी पुस्तकें अपने २ विषयोंका विवेचन इटलीके विशेष सम्बन्धसे करती हैं। उसकी जो सबसे बडी पुस्तक है, उसमें इटलीके भविष्यपर संसारका भविष्य अवलम्बित बताया है। गयोबर्टीका सपना यह था कि रोमके पोपकी प्रधानतामें इटली देश फिर एकबार स्वतन्त्र और एक इटली हो जाये।

इटलीके विचारकोंमें एक और बडा दल था, जिसकी सम्मति थी कि पोप इस भारी बोझके योग्य नहीं है। जब तक पोपको साम्प्रदायिक पक्षपातका संचारी रोग लगा हुआ है, तब तक उसे राजनीतिक प्रधानता देना

नहीं, बल्कि अपराध है। पोपका गौरव धार्मिक कल्पनापर स्थित है, इस लिये ऐसा समय आना कठिन है, जब रोमकी गद्दी पर धार्मिक, पक्षपात हीन पोप बैठे। ऐसी युक्तिश्रृङ्खलासे वे इस परिणामपर पहुँचते थे कि एकता और स्वाधीनताका केन्द्र रोमसे अन्यत्र ढूंढना चाहिये।

रोमसे उठकर उनकी निराशामिश्रित आशा भरी दृष्टि सार्डीनियापर जा पड़ती थी। सार्डीनियाका वर्तमान राजवंश यद्यपि फ्रांससे आया था, तो भी भारतवर्षके राजपूतोंकी भाँति अपने नये घरका सच्चा गृह स्वामी बन गया था। इटलीके समस्त प्रान्तोंमेंसे सार्डीनियाका शासन ही 'उत्तम' कहा जा सकता था। वहाँके तत्कालीन राजा चार्लस एलबर्टके विलक्षण व्यक्तित्व से लोग बहुतसी आशाएँ रखते थे। आशाकी गम्भीरताके साथ प्रायः आशंकाएँ भी निवास किया करती हैं। चार्लस एलबर्टकी निश्चित देशभक्ति आशा उपजाती थी, तो उसका अस्थिर स्वभाव आशंका। उसकी नैसर्गिक नित्य उदारतापर इटालियन देशभक्त जातिकी उम्मीदें बाँधते थे तो उसकी भयजनित अनित्य अनुदारताके झोंके उनके चित्तोंको कँपा देते थे। तो भी अभीष्ट आशा अनिष्ट आशंकाको दबा देती थी। जोशीले मनका स्वभाव ही ऐसा है। वह चाही हुई चीजकी उत्कट कामनामें, अनचाही वस्तुको आँखोंसे ओझल कर देता है। चार्लस एलबर्टके

सिंहासनारूढ होनेके समय मेजिनीने उसके नाम एक लम्बा चिट्ठा लिखा था, जिसमें देश-भक्ति, मनुष्यता, स्वार्थ, लोभ, और भय, इन सभी निमित्तोंको उसके सामने रखते हुए देशभक्तने दोलायमान राजाको स्वाधीनताके मार्गपर स्थिर होनेका आदेश किया था। चार्लस एल्बर्ट हृदयसे सच्चा मातृ-भूमि का भक्त था, किन्तु उसके अन्दर प्राय: युद्ध हुआ करता था। देशभक्तिसे परिणाम भीरुताका, साहससे आशङ्काका और नैसर्गिक उदारतासे सामयिक अनुदारता का। इन्हीं भावात्म युद्धोंके झमेलेमें पडकर वह यत्न करता हुआ भी कृतकार्य नहीं हो पाता था। जयलक्ष्मी सशयात्माको कभी नहीं वरती। जो पर्वतके समान स्थिर हो कर क़दम आगे ही आगे बढाता जाय, जयलक्ष्मी भी उसीका साथ देती है।

इटलीके देशभक्तोंमें इन दो दलोंके अतिरिक्त एक और भी दल था। क्रान्तिका संचालक बल इसी दलका था। यह दल न पोपका मुँह देखता था, न चार्लस एल्बर्ट का, यह प्रजातन्त्र राज्यका पक्षपाती था। मेज़िनी उसका नेता था। मेजिनीका मूलमन्त्र 'परमात्मा और प्रजा' था, और उसकी सम्मति थी कि इटलीका उद्धार प्रजातन्त्र राज्य द्वारा ही होगा। प्रजा ही अपना हित देख सकती है, और लोग उसे धोखा भी दे सकते हैं। मेज़िनीकी सम्मति थी कि इटलीका भला न पोपसे होगा, न चार्लस एल्बर्टसे। उसका सितारा न रोममें

चमकेगा न सार्डीनियामें। इटलीही इटलीका उद्धार करेगा और इटलीमें ही इटलीका सितारा चमकेगा।

इसी दलकी शक्तियाँ क्रान्तिकी ज्वालाको भड़काने वाली हुईं। फ्रांसमें १८३०ई० में जो परिवर्तन आये, उन्होंने इटलीके देशभक्तोंपर गहरा प्रभाव डाला। क्रान्तिकी ज्वाला यूरोपके एक ओरसे दूसरे छोर तक पहुँच गयी। इटालियन वीरोंके हृदयोंमें भी दावानल भड़क उठा। इटलीमें भी क्रान्तिका भयंकर तूफान अपने करतब दिखलाने लगा।

दूसरा परिच्छेद

ज्वाला जागी।

"अदृष्टपूर्वमभवत् लोकोद्धाराय किंचन"

लोकोद्धारके लिये कुछ अद्भुत ही दृश्य उपस्थित हुआ।

गेरीवाल्डीने दक्षिण अफ्रीकामें जो कार्य किया, वह उसके इतिहासमें सुवर्णाक्षरोंमें ही नहीं, मोतियोंके अक्षरोंमें लिखा जाने योग्य है। अपने देशकी स्वाधीनताके लिये लड़ना मनुष्यका कार्य है। जो उसके लिये भी प्राणार्पण नहीं करता, वह पशुके समान है। किन्तु किसी दूसरे देशमें स्वाधीनता देवीका आधिपत्य स्थापित करनेके लिये अपनी आहुति देनेको उद्यत होना देवताओंके योग्य है। गेरीवाल्डी मनुष्य नहीं देव था। *

देव कार्य समाप्त हो गया। शत्रुओंके दलोंको पराजित करके मुनि तुल्य सेनापति अपनी सहधर्मिणी सहित निर्धनता और सादगीके दिन बिताने लगा। काम तो किया, पर प्यास न बुझी। इन सब दिनोंमें गेरीवाल्डीका शरीर दक्षिण अफ्रीकामें डोलता था, किन्तु मन इटलीके नगरोंपर मँडरा



रहा था। उसका उदारताजन्य स्नेह दक्षिण अफ्रीकामें भी था, किन्तु नैसर्गिक प्रेम बारबार उसे जन्मभूमिकी ओर खेंचता था। इटलीकी प्रजाके कष्ट क्रन्दन अपरोक्ष रीतिसे निरन्तर उसके कानोंमें पड रहे थे। इधरका कार्य समाप्त होते ही दिलमें प्यारी मातृभूमिकी धुन बल पूर्वक जागने लगी, रात दिन इटलीकी माला घूमने लगी।

इन्हीं दिनों कुछ ऐसी घटनायें भी उपस्थित हुईं, जिन्होंने गेरीबाल्डी और उसके देशभक्त दलके हृदयोंमें आशाका सचार कर दिया। इटलीके गम्भीर अँधियारीसे आवृत आकाशमें दो एक ऐसी किरणें दिखायी दीं, जिन्हें देखकर देशभक्तोंके हृदय उमड उठे। अमावसकी रातमें छोटासा तारा भी धन्य होता है, घोर मेघावृत नभोमण्डलमें क्षणप्रभा भी सौभाग्यसे आती है। बेचारा राही राह भूलकर तारा और क्षणप्रभाको ही सूर्यसे बढकर मानने लगता है। इटलीके देशभक्तोंने भी छोटे २ चिन्हों को देखकर बडी २ सम्भावनाएं बाँधनी प्रारम्भ कर दीं।

पीडमोण्टके राजा चार्लस एलबर्टने अपने राज्यमें कई आवश्यक समाज सुधार किये। प्रजाको अपने प्रतिनिधियों द्वारा राजकाजमें हिस्सा लेनेका अधिकार कोई छोटा अधिकार नहीं था। प्रजाका हाथ शासनमें होनेसे जैसे भी सुधार हुआ करते हैं, उनका उपक्रम देखकर पन्धाई मठका महन्त

आस्ट्रिया घबरा उठा, और घबराकर इधर उधर हाथ पांव पटकने लगा, और वस न चलता देखकर उसने पोडमौण्ट-को व्यापार रोकनेकी धमकी दी। चार्लस एल्वर्टकी सरकारने उस धमकीका उचित उत्तर दिया। इटालियन लोगोंके हृदय जोशसे उछलने लगे। आस्ट्रियाका सामना करनेवाला प्रान्त भी इटलीमें विद्यमान है, यह विचार ही उन्हें प्रसन्न करनेके लिये पर्याप्त था। इटालियन लोग सोचने लगे—"हम आस्ट्रियाके सामने ऐसे अनाडी बालक ही नहीं हैं। हम उसकी धमकीका उत्तर धमकीसे भी दे सकते हैं" चारों ओर "शाबाश चार्लस एल्वर्ट!" का साधुवाद गूंजने लगा।

इधर रोमकी कथा सुनिये। रोमके पहले पोपका देहान्त हो गया और उसके स्थानपर नया पोप चुना गया। उसका नाम 'नवम पायस' रखा गया। इस नये पोपका पूर्व जीवन साहसिक जीवन था। वह फूलोंमें नहीं पला था। उसने सङ्कुचित धार्मिक स्थितिमें ही अपना जीवन नहीं बिताया था। उसने कई पापड बेले थे और समय २ पर ऐसी २ सम्मतियां प्रकाशित कर चुका था, जिनसे लोग उसे उदार देश भक्त समझने लगे थे। उसके पोप होनेकी लोगोंको आशा भी नहीं थी—किन्तु अनहोनी होगयी! नवम पायस पोप चुना गया। उसके प्रभावका समाचार सुनकर सङ्कुचित विचारोंके साथ मैटर्निचने कहा था कि—"हम पोपके सिवाय और सब

ती थी, बारम्बार डेपुटेशन भेजती थी, तब पोप
र कर देता था, शासकके लिये इससे बढ़कर कोई
त नहीं। प्रजाको यह निश्चय हो जाना कि उनका
सुधार न करेगा, और हलचलके दबावसे सब
, प्रजाके लिये बड़ा हानिकारक है। प्रजा नित
करती रहेगी, नित नई हलचल मचाती रहेगी।
ाकी सीमा न रहेगी। कभी न कभी ऐसा समय
प्रजाकी इच्छा पूरी करना राजा को या शासकको
वेगा। उसकी दुर्बल आत्मा काँप जायगी। तब
-सागर उमड़ पड़ेगा। प्रजाको यह अभ्यास हो
ज़ोरसे आवाज़ देकर अभीष्ट कार्य करा ले। जब
तब अशान्ति असह्य हो जायगी। जो शासक
रता दिखानेमें सकोच करता है, और प्रजाके
नेपर उठा[illegible] आता है, वह अपनी निर्बलताकी

घाले थे। सब विघ्न बाधाओंको पछाड़ कर वीर-दल इटलीकी ओर रवाना हुआ।

मातृभूमिकी ओर चलते हुए इस साहसिक दलकी आशा तन्तुका आधार नया पोप था। उन्होंने आते २ लोगोंसे नवम पायसके चुनावका समाचार सुनकर आशा बाँधी थी, राजनीतिक क्षमाकी घोषणा सुनकर आनन्दके आँसू बहाये थे। अजानी और गेरीवाल्डीने मिलकर एक प्रार्थनापत्र नवीन पोपके नाम लिखा था, जिसमें "स्वाधीनताके अवतार भूत" पोपका अभिनन्दन किया था, और उसके चरणोंमें अपना तन मन धन अर्पण करनेका सकल्प प्रकट किया था' बड़े जोरदार शब्दोंमें इटालियन दलने पोपमें तथा देशमें अपना भक्ति भाव प्रकट किया था, और लिखा था कि "हम लोग आपके सिंहासनके चरणोंमें अपना सर्वस्व भेंट करते हैं। उन्हें आशा थी कि स्वाधीनता बरसाने वाला पोप स्वाधीनताके सैनिकोंकी सेवासे अवश्य लाभ उठाएगा। गेरीवाल्डीके दल को मार्गमें तीन मास लगे। इन तीन महीनोंमें रोमनगरीमें तो मानो शताब्दी बीत गयी। थोड़े दिन तक पोपने उदारतासे स्वाधीनताके नये से नये गुच्छे उपहार स्वरूप दिये, किन्तु समझदार लोग प्रारम्भसे ही सन्देह करते थे। पोप तभी कोई उदार कार्य करता था, जब प्रजाकी सम्मतिका दबाव असह्य हो जाता था। प्रजा सभाएँ करती थीं, शोर-

शोर मचाती थी, बारम्बार डेपुटेशन भेजती थी, तब पोप एक सुधार कर देता था, शासकके लिये इससे बढ़कर कोई भयकर बात नहीं। प्रजाको यह निश्चय हो जाना कि उनका राजा स्वय सुधार न करेगा, और हलचलके दबावसे सब कुछ करेगा, राजाके लिये बडा हानिकारक है। प्रजा नित नया जमाव करती रहेगी, नित नई हलचल मचाती रहेगी। प्रजाकी मॉगकी सीमा न रहेगी। कभी न कभी ऐसा समय आएगा जब प्रजाकी इच्छा पूरी करना राजा को या शासकको असम्भव जॅचेगा। उसकी दुर्बल आत्मा कॉप जायगी। तब प्रजाका रोष सागर उमड पडेगा। प्रजाको यह अभ्यास हो गया है कि जोरसे आवाज देकर अभीष्ट कार्य कराले। जब कार्य न होगा तब अशान्ति असह्य हो जायगी। जो शासक स्वय तो उदारता दिखानेमें सकोच करता है, और प्रजाके कोलाहल करनेपर उदार बन जाता है, वह अपनी निर्बलताकी स्वय दुहाई देता है। शासकको चाहिये कि स्वय ही उदार रहे, प्रजाकी आवश्यकताओंको समझे और प्रजाको यह विश्वास न होने दे कि "हमारा राजा या शासक स्वय उदार नहीं है, उसे हमारा दबावही उदार बनाता है।" अन्यथा राजा या शासकके जीवनकी घडियॉ समयकी धरोहर पुस्तकमें गिन ली जाती हैं, और शीघ्र ही आय व्यय बराबर करके हिसाब चुका दिया जाता है।



पोपकी ऐसी ही दशा हुई। कुछ महीनों तक पोप स्वाधीनताका देव बना-रहा। शीघ्र ही उसका हाथ खिंचने लगा। प्रजाके हलचल मचानेपर फिर उसे उदारताका भगवाँ वेष धारण करना पड़ा था, कागको हंस बनना पड़ा था। पर यह बनावटी बाना कितने दिन चल सकता था। शीघ्र ही पोपके साथ अनुदारता और अत्याचारका सम्बन्ध जुड़ने लगा। गेरीवाल्डी का दल जिस समय इटलीमें पहुँचा, उस समय तक काग अपने काले रूपमें प्रकट हो चुका था, पोपका उदार-खोल उतर गया था। इटालियन दलके अर्पणपत्रका कोई उत्तर भी न मिला था। इस लिये गेरीवाल्डीने बनावटी सूर्यको छोड़, पीडमौण्टके असली सूर्यकी ओर मुँह किया, रोमका मार्ग छोड़ ट्यूरिनका रास्ता लिया।

उस समय पीडमौण्टका सितारा चमक रहा था। समस्त इटलीवासियोंका हृदय चार्लस एल्वर्टकी देशभक्तिपर भरोसा किये बैठा था। चार्लस एल्वर्ट उस समय सारे देशकी आशा-लताका आधार बना हुआ था। गेरीवाल्डी मातृभूमिकी सेवामें अपना सर्वस्व बलिहार करनेका संकल्प कर चुका था, वह केवल उस वेदीकी ढूँढमें था, जहाँ तन मन धनकी आहुति दे सके। साथ ही उसे उस ऋत्विक्‌की भी ढूँढ थी, जो मातृभूमिकी यज्ञकी पूर्ति करे। उसी ऋत्विक्‌की खोजमें पहले वह पोपकी शरण गया, वहाँसे निराश होकर वह चार्लस एल्वर्टके

पास पहुँचा। दैव-दुर्योग कि यहाँ भी उसे निराश होना पड़ा। यहाँ भी गेरीबाल्डीको यह ज्ञात हुआ कि सारे संसारमें देश भक्ति ही उच्च और शुद्ध स्वरूपमें विद्यमान नहीं है। वह जब चार्लस एल्बर्टके पास गया, तब आशाओंसे भरा हुआ था, किन्तु सांसारिक-समृद्धि प्राय विवेक-शक्तिको कुण्ठित कर लेती है। चार्लस एल्बर्टने बड़ी सर्दी दिखायी, उपेक्षाका व्यवहार किया और गेरीबाल्डीको निराश करके भेज दिया। अज्ञान जौहरीने सच्चे रत्नको न पहिचाना और झूँठा समझ कर फेंक दिया। गेरीबाल्डीको चार्लस एल्बर्टसे भारी निराशा हुई, किन्तु इससे मातृभूमिकी सेवामें सर्वस्व अर्पण करनेका उसका संकल्प और भी दृढ़ हो गया। राजभवनसे निराश निकले हुए गेरीबाल्डीको मिलानके ऐसे समाचार सुनाई दिये, जिन्होंने उसकी क्षणिक उदासीको क्षणभरमें ही नष्ट कर दिया।

देशोंके इतिहासमें ऐसे समय आते हैं जब वहाँके वासियों में परिवर्तन सा आजाता है। न जाने कैसे एक बिजली सी चल जाती है, जो कायरोंको बाँकुरा वीर, दुकानदारोंको सिपाही, पादरियोंको आल्हा गाने वाला और निर्बल कायोंको भीमसेन बना देती है। जिनसे कोई लकड़ी उठानेकी भी आशा न रखता था, वे कन्धेपर बन्दूकें धरे फिरते हैं, जो बारह घंटे सोते और फिर भी उनींदा होनेकी शिकायत करते थे, वे रातों जागकर फौजका पहरा देते हैं। ऐसे समय प्राय

आते रहते हैं। जातियोंके इतिहासमें वे पवित्र समझे जाते हैं। इटलीके इतिहासमें वही समय आगया था। ऐसे समयमें ही समुद्रके तलमें पड़े हुए मोती तहपर आ जाया करते हैं और उनपर जमी हुई काई धुल जाया करती है। एक एक सिपाहीको सेनापति बनाना ऐसे ही समयोंके हाथमें होता है।

यूरोप वृक्षपर जडमूलसे हिला देनेवाले कुल्हाडेका पहला वार फ्रांसमें हुआ। ऐसा प्रायः होता ही आया था। चिरकालसे फ्रांस यूरोपका मर्मस्थल बना हुआ था। २४ फ़रवरी १८४८ के दिन फ्रांसकी राजगद्दीपरसे उस *लूई फिलिप* को गिरा दिया गया था। जो कुछ वर्ष पूर्व आदर पूर्वक राज-तिलकसे सम्मानित किया गया था। एक सिंहासन हिलनेसे समस्त यूरोपमें कँपकँपी फैल गयी। बर्लिनमें क्रान्तिकी ज्वाला जल उठी, और तो क्या, अनुदारताके मठ वायनामें भी जबरदस्त धक्का पहुँचा और अत्याचारके लाटपादरी *मैटर्निच* को राजधानी छोडकर भागना पडा। मैटर्निचके अधःपात और वायनाके जागनेसे क्रान्तिके प्रवाहको रोकने वाले सबसे बडे बन्द फाट दिये। चारोंओर जागृतिकी आहट पहुँचने लगी।

इटलीके इतिहासमें 'मिलान' का नाम स्मरणीय रहेगा। उसने इस नयी क्रान्तिकी चिनगारीको सबसे पहले लगाया। १३ मार्चको मिलानके बाजारोंमें संयुक्त स्वाधीन इटलीकी

झंडियाँ घूमने लगीं, नगरवासियोंने मिलकर स्वाधीन मिलान की घोषणा दे दी। उस समय मिलानमें स्वाधीनताकी घोषणा देना सहल काम नहीं था। आस्ट्रियाके अत्याचारोंका गढ़, 'लम्बार्डी' था, मिलान उसका मुख्य नगर था। उस समय मिलानमें आस्ट्रियाके लगभग बीस हजार सिपाही विद्यमान थे और पुराना अनुभवी प्रसिद्ध सेनापति 'रैटडकी' उनका नेता था। इस सेना और इस सेनापतिकी उपस्थितिमें नगर वासियोंका स्वतन्त्र इटलीकी घोषणा देना वस्तुत उस परम साहसका कार्य था, जो शुभ उद्देश्योंपर दृढ रहने वालोंको जगदीश्वरकी कृपासे प्राप्त होता है। मिलानके पाँच दिन प्रसिद्ध हैं। रैटडकी नहीं जानता था, मिलानवासी भी नहीं जानते थे, कि घर द्वारके किन कोनोंमेंसे जातीय सिपाही निकल रहे हैं। जिन्होंने कभी तलवारका एक हाथ नहीं फिराया था, वे पुराने खिलाड़ियोंकी भाँति जानपर खेल रहे थे। क्रान्तिका भली प्रकार आरम्भ १८ मार्चको हुआ, और २२ मार्चको रैटडकी अपनी सेनाओंको लेकर मिलानसे भाग निकला। पुरानी शिक्षित सेनाका साहस न हुआ कि स्वाधीनताके मदसे मस्त जातीय शेरोंका सामना कर सके।

मिलान एक नगर था, आस्ट्रियाका विस्तृत साम्राज्य था। बिना सहायताके एक नगर कब तक ठहर सकता था। वहाँ की सामयिक सरकारने सहायताके लिये पोप और चार्लस

एल्बर्टसे प्रार्थना की। पोपकी ओरसे जो उत्तर मिला उसने कागपरसे इसके पर उतार दिये। लोगोंको ज्ञात हो गया कि इस साम्प्रदायिक पादरीसे स्वाधीनता पानेकी आशा वैसी ही है जैसी खारी समुद्रसे शहद पानेकी आशा। पोपने साफ इनकार कर दिया।

चार्लस एल्बर्ट पहले तो कुछ देर दोलायमान रहा, किन्तु आखिर मार्च की २५ तारीखको उसके पाँच हजार सिपाहियों ने आस्ट्रियाकी सीमामें प्रवेश किया।

गेरीवाल्डी मिलानके उत्थानका समाचार सुनतेही उधरको रवाना हुआ। स्वाधीन नगरीमें स्वाधीनताके दूतका शानदार स्वागत हुआ। स्वाधीनताका मुनि मेजिनी पहलेसे ही वहाँ पहुँचा हुआ था और सेनामें ध्वजा उठानेका कार्य करने लगा था। मिलानके अधिकारियोंने गेरीवाल्डीकी सहायताको धन्यवाद सहित स्वीकार किया और उसे स्वयसेवकों की सेना तय्यार करनेका अधिकार दिया। देखते ही देखते गेरीवाल्डीने, देशभक्त इटालियन नौजवानोंका एक अच्छा समूह इकट्ठा कर लिया, और पीडमौण्ट से बढ़ती हुई सेनाओं की सहायताके लिये प्रयाण किया।

उस समय सारे इटली देशमें एकही शब्द था। सारे देशवासी एक ही रगमें मस्त थे। वह रग आशाका सुहावना रग था। हरेक इटालियन दूसरेसे यही कहता था कि "वह

दिन आ गया, जिसकी वर्षोंसे अभिलाषा थी।" नगर अपने आप चार्लस एल्बर्टको निमन्त्रण दे रहे थे, पोपके हटाते हटाते भी रोम की सेनायें मिलानकी सहायताके लिये रवाना की गयी थीं, कोई नगर और ग्राम नहीं था जहाँसे स्वयंसेवकोंका समूह देशके शत्रुसे लड़नेके लिये न चल दिया हो।

कार्य प्रारम्भ तो बड़ी कृतकार्यतासे हुआ, किन्तु आगे कई रुकावटें आने लगीं। पोपने ठीक मौकेपर कोरा जवाब दे दिया, चार्लस एल्बर्टने कई बार अनुचित विलम्बसे अपना काम बिगाड़ लिया, और मिलानमें इस प्रश्नपर झगड़ा होने लगा कि नगरोंको पीडमौण्टके साथ मिला दिया जाय या जुदा प्रजातन्त्र राज्य स्थापित किया जाय। भयके समयमें ऐसे विवाद हानिकारक हुआ करते हैं। बहुत झगड़ेके बाद मिलानकी सामयिक सरकारने यही निश्चित किया कि नगरको पीडमौण्टके साथ मिला दिया जाय। किन्तु तब तक अपनी भूलोंसे चार्लस एल्बर्ट विजयके अवसर खो बैठा था। प्रेम और युद्धमें समय ही सब कुछ है। समय चूकते ही हृदय और शत्रुके जीतनेका अवसर जाता रहता है। शीघ्र ही रैटजकी को पर्याप्त सहायता मिल गयी, उधर वायनामें भी क्रान्तिकी समाप्ति हो गयी और पाँच मासके पीछे ९ अगस्तको चार्लस एल्बर्टने अपनी हार मान ली।

यह हार क्यों हुई? जोशकी कमी नहीं थी, स्वार्थ-त्याग

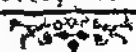


पल्वर्टसे प्रार्थना की। पोपकी ओरसे जो उत्तर मिला उसने कागपरसे इसके पर उतार दिये। लोगोंको ज्ञात हो गया कि इस साम्प्रदायिक पादरीसे स्वाधीनता पानेकी आशा वैसी ही है जैसी खारी समुद्रसे शहद पानेकी आशा। पोपने साफ इनकार कर दिया।

चार्लस पल्वर्ट पहले तो कुछ देर दोलायमान रहा, किन्तु आखिर मार्च की २५ तारीखको उसके पाँच हजार सिपाहियों ने आस्ट्रियाकी सीमामें प्रवेश किया।

गेरीवाल्डी मिलानके उत्थानका समाचार सुनतेही उधरको रवाना हुआ। स्वाधीन नगरीमें स्वाधीनताके दूतका शानदार स्वागत हुआ। स्वाधीनताका मुनि मेजिनी पहलेसे ही वहाँ पहुँचा हुआ था और सेनामें ध्वजा उठानेका कार्य करने लगा था। मिलानके अधिकारियोंने गेरीवाल्डीकी सहायताको धन्यवाद सहित स्वीकार किया और उसे स्वयंसेवकों की सेना तय्यार करनेका अधिकार दिया। देखते ही देखते गेरीवाल्डीने देशभक्त इटालियन नौजवानोंका एक अच्छा समूह इकट्ठा कर लिया, और पीडमौण्ट से बढती हुई सेनाओं की सहायताके लिये प्रयाण किया।

उस समय सारे इटली देशमें एकही शब्द था। सारे देशवासी एक ही रंगमें मस्त थे। वह रंग आशाका सुहावना रंग था। हरेक इटालियन दूसरेसे यही कहता था कि "यह



दिन आ गया, जिसकी वर्षोंसे अभिलाषा थी" नगर अपने आप चार्लस एलबर्टको निमन्त्रण दे रहे थे, पोपके हटाते हटाते भी रोमकी सेनाएँ मिलानकी सहायताके लिये रवाना की गयी थीं, कोई नगर और ग्राम नहीं था जहाँसे स्वयंसेवकोंका समूह देशके शत्रुसे लड़नेके लिये न चल दिया हो।

कार्य प्रारम्भ तो बड़ी कृतकार्यतासे हुआ, किन्तु आगे कई रुकावटें आने लगीं। पोपने ठीक मौकेपर कोरा जवाब दे दिया, चार्लस एलबर्टने कई बार अनुचित बिलम्बसे अपना काम बिगाड़ लिया, और मिलानमें इस प्रश्नपर झगड़ा होने लगा कि नगरीको पीडमौण्टके साथ मिला दिया जाय या जुदा प्रजातन्त्र राज्य स्थापित किया जाय। भयके समयमें ऐसे विवाद हानिकारक हुआ करते हैं। बहुत झगड़ेके बाद मिलानकी सामयिक सरकारने यही निश्चत किया कि नगरको पीडमौण्टके साथ मिला दिया जाय। किन्तु तब तक अपनी भूलोंसे चार्लस एलबर्ट विजयके अवसर खो बैठा था। प्रेम और युद्धमें समय ही सब कुछ है। समय चूकते ही हृदय और शत्रुके जीतनेका अवसर जाता रहता है। शीघ्र ही रैडस्की को पर्याप्त सहायता मिल गयी, उधर वायनामें भी क्रान्तिकी समाप्ति हो गयी और पाँच मासके पीछे ९ अगस्तको चार्लस एलबर्टने अपनी हार मान ली।

यह हार क्यों हुई? जोशकी कमी नहीं थी, स्वार्थ-त्याग

की कमी नहीं थी। फिर कृतकार्यता क्यों न हुई ? इसके मुख्यतया तीन कारण थे। चार्लस एल्बर्ट भलामानस था, परन्तु समयको नहीं पहचानता था। जो समयको नहीं पहचान सकता था, वह सेनापति बननेके अयोग्य था। अस्थिर-मति पुरुष कभी युद्धमें विजय नहीं पाया करते। चार्लस एल्बर्टको विश्वास था कि पोप उसकी सहायता करेगा। किन्तु ठीक समयपर आकर रोमके अध्यक्षने उसे सूखा उत्तर दे दिया और इटेलियनोंके हृदय तोड़ दिये। तीसरा कारण यह था कि अभी तक इटलीवासियोंने एकताका पाठ पूरी तरह नहीं पढ़ा था। देश भक्तिके नामपर तो एक होना सीखा था, परन्तु क्रियाक्षेत्रमें जैसी विचार और यत्नकी एकता चाहिये वह इटलीवासियोंने नहीं सीखी थी। बस, इन्हीं तीन कारणोंसे क्रान्तिका यह परिच्छेद सुखान्त नहीं हुआ।

चार्लस एल्बर्टके हार माननेपर गेरीवाल्डीको भी आज्ञा हुई कि वह स्वय-सेवक-दलको लौटा लाए। गेरीवाल्डीके दलको रणक्षेत्रमें आये अभी अधिक समय न हुआ था, तो भी उसने कई वीरताके कार्य किये थे। थोड़ी सी संख्यामें होते हुए भी शत्रुको कई जगह कठिनाईमें डाला था। इतना शीघ्र युद्ध समाप्त होनेका समाचार सुनकर गेरीवाल्डीको बड़ा दुःख हुआ। उसका हृदय नहीं हारा था उसकी तो

प्यास अभी चमकी ही थी। चार्लस एल्बर्ट या मिलान सरकारकी आज्ञाकी कोई पर्वाह न करके वह बहुत दिनों तक आस्ट्रियन सेनाओंसे लड़ता रहा। थोड़ेसे आदमियोंकी सहायतासे नगरोंपर छापे मारता रहा, और अपने सुरक्षित निकल जानेके मार्ग निकालता रहा। आस्ट्रियन सेना उसका बलपूर्वक पीछा कर रही थी। वह पीडमौण्टकी ओर लौटने लगा तो उसे ज्ञात हुआ कि पराजयकी आशा न माननेके कारण उसका वहाँ जाना आज्ञासे बन्द कर दिया गया है, उसने अपना रास्ता बदल लिया। कम होते साथियोंको दिलासा देता हुआ, और बढ़ते हुए शत्रुओंका सामना करता हुआ वह स्विट्जरलैण्डकी सीमाके पास पहुँच गया। अब उसके पास न तो गोला बारूद था न खाने पीनेका सामान, किन्तु हाँ, उसके पास अजित और अजेय आत्मा अवश्य थी, उसीके भरोसे अनेक कष्ट सह कर वह असहाय युद्ध करता रहा। अन्तको लड़ना व्यर्थ समझ कर, साथियोंको फिर कभी मिलनेकी आशा दिला कर उसने दलका तितर बितर कर दिया और स्वयं थकी माँदी और निराहार अवस्थामें स्विट्जरलैण्डकी सीमामें पहुँच गया।

तीसरा परिच्छेद

वेनिसका पिता

"स पिता, पितरस्तेषां केवलं जन्महेतवः।"

(कालिदास)

उनके पिता तो केवल जन्मके हेतु थे, वास्तविक पिता वही था।

सन् १८४८ के मार्च मासकी १७ वीं तारीख थी। वेनिस नामके प्रसिद्ध नगरके निवासी समुद्र तटपर खड़े हुए, आनेवाले जहाजकी प्रतीक्षामें थे। जहाज बन्दरगाह ट्रीस्टे से आरहा था और आस्ट्रियाके समाचार ला रहा था। जनता समाचार सुननेके लिये उत्सुक खड़ी थी। इतनेमें एक जहाज दूरसे आता दिखाई दिया। लोगोंकी उत्सुकता बढ़ने लगी। जहाज पास आया और उसपरसे एक फ्रांसीसी व्यापारीने चिल्लाकर कहा "वायनामें राज्य पलट गया। इटलीकी स्वाधीनता स्वीकार की गयी। प्रेसको स्वतन्त्रता मिलगयी। जातीय रक्षक सेनाको अधिकार प्राप्त होगया।" ये शब्द जनताके लिये पर्याप्त थे। जन-समूह

वहाँसे दौडता हुआ आस्ट्रियन शासकके द्वारपर पहुँचा। वहाँ जाकर सबने कहा 'मेनिन' और 'रोमेसियो' को बन्दीगृहसे छोड दो' शासक आस्ट्रियन था, इन दो देशभक्त इटालियनोंको कैसे छोडता। वह बेचारा सोच विचारमें पड गया। द्वारपरसे औरभी जोरसे शब्द आने लगा—'छोड दो, छोड दो' शासकका नाम कौण्ट पाफी था। उसका चित्त उसे जवाब देने लगा। शोर और भी बढ़ने लगा। पाफी डर गया और यह कहते हुए कि—'मैं वह कार्य करता हूँ, जो मुझे नहीं करना चाहिये" दोनों कैदियोंके छोडनेकी आज्ञा दे दी।

आँख झपकनेमें विलम्ब लगता है, वह जन समूह उससे भी पूर्व बन्दीगृहकी ओर बढ़ चला। वहाँ जाकर दोनों देशभक्तोंको छुडा लेना कुछ मिनटोंका ही काम था। मैनिन और रोमेसियो बाहर आये। उन्हें देखकर लोगोंकी खुशीका पारावार न रहा। इनदोनोंको प्रेमपूर्ण जोशीले युवकोंने कन्धोंपर उठा लिया। मैनिन इतने दिनोंके कारागृह-वाससे निर्बल और पीला हो रहा था। लोगोंने उसे ऊँचा उठा लिया, और कुछ कहनेकी प्रार्थना की। चारों ओरसे 'कुछ कहिये' 'कुछ कहिये' का शोर मच गया। इस निर्बल दशामें देशभक्तको कुछ बोलना पडा। उसने कहा —

"मैं नहीं जानता कि मुझे किन महान् कारणोंसे स्वाधीनता मिली है, किन्तु इतना मुझे प्रतीत हो रहा है कि बीते



हुए कुछ महीनोंमें राष्ट्रीयभाव और देशभक्तिकी ज्वाला बहुत तीव्र हो गयी है। किन्तु यह मत भूलो कि सच्ची और स्थिर स्वाधीनता प्रबन्धपर ही आश्रित रह सकती है। और यदि तुम उसके योग्य बनना चाहते हो तो प्रबन्धके रक्षक बनो" क्षणभर ठहरकर उसने फिर कहा '—" किन्तु भगवानके निर्देशसे ऐसे समय आते हैं, जब राज्यक्रान्ति केवल अधिकार ही नहीं, कर्तव्य भी हो जाता है।"

लोगोंने मैनिनके शब्दोंको ऐसे सुना जैसे भक्तलोग अपने पूज्यदेवकी वाणी सुनते हैं। पाठक महोदय! आप प्रश्न करेंगे, 'वेनिसके निवासी जिसके इतने भक्त हैं वह मैनिन कौन है!' अच्छा, इस अद्भुत देशभक्त की पूर्व-गाथा सुनिये।

डैनियल मैनिन एक ऐसे यहूदी पिताका पुत्र था, जिसने ईसाई-मत स्वीकार कर लिया था। लड़कपनसे ही उसकी बुद्धिकी तीव्रता लोगोंको आश्चर्यमें डालती थी। १७ सालकी आयुमें वह ग्रेजुएट होकर 'डाक्टर आव ला' अर्थात् राजनियमों का आचार्य भी बन गया। ठीक उमरका होकर उसने वकालत प्रारम्भ की और बड़ा नाम पाया। उसका स्वास्थ्य पहलेसे ही अच्छा नहीं था। शरीर दुबला पतला था, किन्तु माथा विशाल था, आँखें ओजस्विनी और भावपूर्ण थीं, ओंठ कोमलतायुक्त-दृढ़ताको लिये हुए थे। युवक वकीलके चित्तमें देशभक्तिकी अग्नि बड़े जोरसे धधक रही थी। जब कोई ऐसा

मुकद्मा सामने आता, जिसमें किसी इटालियनको आस्ट्रियन शासकोंसे शिकायत होती तो मैनिन झट उसे अपने हाथमें लेता और फिर ऐसी योग्यता और निर्भयतासे निपाहता कि देखनेवाले वाह वाहकी ध्वनिसे आकाश गुँजा देते थे।

धीरे धीरे मैनिन प्रसिद्धि पाने लगा। इटलीके और विशेषतया वेनिसके लोग उसे अपना रक्षक मानने लगे। इसी समय सारे देशमें जातीय-जागृतिका उफान आया, और नवयुवक कानोंमें स्वाधीनताकी वीणा बजने लगी। उस समय मैनिनके साथ देशभक्त कवि टोमेसियोने मिलकर एक आवेदन पत्र बनाया जिसमें इटालियन प्रजाकी शिकायतोंका पूरा ब्योरा लिखकर प्रकाशित किया। अन्य विदेशी शासकोंकी भाँति आस्ट्रियन शासक भी छुईमुईकी भाँति कोमलाग बने हुवे थे। जरा सी चोट उन पर गहरा प्रभाव करती थी। गिरा हुआ तिनका उनकी काया पर वज्रका सा आघात करता था। उनकी त्वचा अनुभवशील हो गयी थी। इस आवेदन पत्रमें उन्हें राजद्रोह और गुप्त मन्त्रणाकी बू आने लगी। बस, हुक्म हुआ, और दोनों देशभक्त गहरे कारागारमें डाल दिये गये।

जोशमें भरे हुए वेनीशियन-जनसमूहने इसी जोड़ेको कारागारसे मुक्त कराया था। मैनिनका आदेश सुन फट अपने २ घरोंको चले गये और मैनिन लोगोंके उभरे हुए जोश



का दिव्य दृश्य देखता हुआ भविष्यकी चिन्तामें मग्न हो गया। आगे क्या करना चाहिये, स्वाधीनताकी प्राप्ति कैसे करनी चाहिये, इसपर रातभर विचार करनेके पीछे उसने निश्चय किया, और दूसरे ही दिनसे कार्य प्रारम्भ हुआ।

मैनिनने वेनिसके आस्ट्रियन-शासकको कहला भेजा कि नगरकी रक्षाके लिये नगरवासियोंका एक रक्षक-दल तय्यार करो। शासक पहले दिन मैनिनकी शक्ति देख चुका था, वह उसके विरुद्धाचरण करनेसे डर गया, और दो सौ नागरिकों की भर्तीकी आज्ञा दे दी। आज्ञासे तात्पर्य था, संख्या अनपेक्षित थी। एकदम तीन हजार नागरिक भर्ती हो गये। आस्ट्रियन शासक इस नदीके प्रवाहको न रोक सका। आन की आनमें इटालियन नौजवानोंकी एक राष्ट्रीय सेना तय्यार हो गयी, और हुई भी आस्ट्रियन शासकके हुक्मसे। दैवकी गति विचित्र है। सारे रक्षक दलको बुला कर मैनिनने कहा "आप लोगोंमेंसे जो सर्वथा मेरा कहना माननेको उद्यत नहीं, वे जा सकते हैं" तीन हजारमेंसे कोई भी नहीं गया।

सङ्क्रामक रोगकी भाँति असन्तोषका रोग भी फैलने लगा। सेनामें जितने इटालियन थे वे भी धीरे धीरे क्रान्तिकारियोंकी ओर आने लगे। बैरकोंमें सिपाहियोंको इटालियन देशभक्तों पर गोली चलानेकी आज्ञा दी गयी तो उन्होंने आज्ञा देनेवालों को ही बन्दूकका निशाना बनाया।

ऐसी दशा देखकर आस्ट्रियन कर्मचारियोंके दिल दहलने लगे। उधर बाहरसे सहायता देने वाली आस्ट्रियन-सेना आ पहुँची। सन्देह हुआ कि शायद वेनिसपर शीघ्र ही गोला-बारी प्रारम्भ होगी। मैनिन और उसके साथी विचार करने लगे कि उस दशामें क्या करना होगा? मैनिनको ईश्वरीय ज्ञान हुआ, एक दम स्फूर्ति हुई। सरकारी गोदाममें गोला बारूद बहुत है पर उसे लावे कौन? बिल्लीके गलेमें घंटी बाँधे कौन? मैनिनने निश्चय किया कि सरकारी गोदाम लूटना ही होगा। उसने नागरिक-सेनाके सेनापतिसे पूछा। वह प्रस्तावकी भयकरतासे इतना विस्मित हुआ कि जिह्वा भी न चला सका। औरोंने भी सन्तोष-दायक उत्तर नहीं दिया। केवल एक सेनापतिने अपना बटैलियन मैनिनके सपुर्द किया, बस, वही बस था। मनिनने अपनी तलवार म्यानसे निकाली, अपने जवान सोलह सालके लड़केको बुलाया और केवल दो सौ सिपाहियोंके साथ गोदामपर धावा बोल दिया।

वहां मामला पहले ही तय्यार था। सिपाही हरदम बलवा करनेको तय्यार थे। मैनिनके जाते ही गोदामके अध्यक्षने चाबी उसके हाथमें दे दी। गोदामसे निकाल कर हथियार वेनिस-निवासियोंको बाँट दिये गये।

इस कार्यसे मैनिन वेनिस-वासियोंके लिये और भी

नगरकी दीवारोंके बाहर जमा हो रही थीं। उधर चार्लेस एल्वर्ट फिर आस्ट्रियासे पराजित हो चुका था। नगरमें अन्नकी कमी हो रही थी, प्लेग और महामारीके यमदूत घरोंमें घूमने लगे थे, और हर दम डर था कि तोपोंके गोले घरोंको बरबाद करने लगेंगे। वेनिसनिवासी केवल एक पिता मैनिन-पर विश्वास किये, उसे सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् माने हुए स्वाधीनताकी रक्षाके लिये डटे हुए थे। वे समझते थे कि हमारा मैनिन जब तक जीता है, हम हार नहीं सकते। जब नगर निवासियोंमें जराभी अशान्ति फैलती थी, मैनिन उनके सामने आता था, और आकर दो चार उत्साहके वाक्य कह देता था। बस जनताका सन्तोष हो जाता था॥

आखिर बाहरसे गोले पड़ने प्रारम्भ हुए। घर जलने लगे जीना कठिन होने लगा। फिर भी लोग मैनिनका मुँह देखकर स्थिर रहे। किन्तु मैनिनका हृदय भविष्यपर विचार करके काँपने लगा। जब रक्षाका कोई उपाय नहीं, तब व्यर्थ नगर-वासियोंकी जानें क्यों गँवायी जायँ। मैनिनका दिल टूटने लगा, उसे निराशा होने लगी। जिस उद्देश्यकी लब्धिके लिये तनकी पर्वा न की, जानको हथेलीपर रखा, और अतुल स्वार्थत्याग दिखलाया, अवस्थाओंके वशीभूत होकर उसे त्यागना पड़ा। निस्सन्देह मैनिनने उसे त्याग दिया। उसका अकृतकार्य यत्न अधूरा ही रह गया, किन्तु उस अकृतकार्य



तत्वदर्शी—गयोवर्टी





जा रहे हैं। महलोंकी रक्षिका पुलिस सोयी हुई प्रतीत होती थी। रात ही रातमें वे तीन गुप्त राही लम्बा सफर कर गये। पौ फटते २ रोमकी सीमा पार करके नेपल्सके राज्यमें घुसनेमें किंचिन्मात्र भी अन्तर न रह गया। सीमापर पहुँच कर यह जर्मन दोनों साथियोंको वहीं छोड़कर आगे चला गया। छोड़े हुए साथियोंका वेष साधारण राहियों जैसा था, किन्तु जरा ध्यानसे देखनेसे ज्ञात होता था कि यह उनका वास्तविक वेष नहीं था। यह वेष अपने आपको छिपानेके लिये बनाया गया है। इस जोड़ेको अधिक समय प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी, शीघ्र ही उन्हें समाचार मिला कि नेपल्सका राजा फर्डिनण्ड बड़ी सज-धजके साथ इस गुप्त-युगलके स्वागतके लिये आ रहा है। इस समाचारके पहुँचते ही उस जोड़ेने अपने बनावटी वस्त्र उतार डाले और रातके चोर प्रभातके पोप बन गये। शाबाश! भगोड़े चोर नहीं, यह अपने महलसे भागे हुए धर्मपत्नी सहित महाराज पोप हैं, जो अपनी प्रजाको गिड़ छुड़ाकर नेपल्सके राजाकी शरण आये हैं। बात यह हुई कि रोमके इस नये पोपने अपने सिंहासनारोहणके समय अपनी प्रजाको बड़ी २ आशाएँ दिलायी थीं। लोगोंने "स्वतन्त्रता दायक पोप" 'बन्धनोंसे छुड़ानेवाले पोप' नाम रख लिये थे। कुछ दिन लोक प्रिय होनेमें पोपको ... आवा रहा, किन्तु शीघ्र ही पुराने सस्कार जाग



रोमका स्वर्णदिन ।

" चार दिनोंकी चाँदनी, फिर अन्धेरा पाख "


सन् १८४८ का नवम्बर मास था। रोमका इतिहास प्रसिद्ध नगर आवेशके मदमें मस्त था । सारे नगरवासी स्वाधीनताके रंगमें रंगे हुए थे। दिनको और रातको, गली और कूचेमें स्वाधीनताके राग गाते हुए इटालियन वीरोंके समूह दिखायी देते थे। बूढ़े लोगों की रगोंमें भी लहूकी लहर दौड़ रही थी। ऐसा प्रतीत होता था, मानो अनन्त-कीर्तिकी कबरमें किसी औषधके प्रयोगसे फिर चेष्टा उत्पन्न हुई है।

प्रजा जाग रही थी और गा रही थी, उधर रोमके अधिपति और ईसाइयोंके गुरुदेवता पोपके भवनके किसी गुप्त मार्गमेंसे एक जर्मन राजदूत एक बुजुर्गसे दीखनेवाले सज्जन को स्त्री सहित भगाये लिये जा रहा था। ऐसा प्रतीत होता था। मानो ये तीनों धर्माचार्य पोपके घरमें चोरी करके भागे

उठे, आस्ट्रियाका त्योरीदार चेहरा सामने घूमने लगा और पोप अपनी पहली उदारतापर पछताने लगा। पोपका दिल बेईमान होने लगा और प्रजाकी जागी हुई चाह प्रतिदिन बढ़ने लगी। ऐसी दशामें रगडका होना स्वाभाविक था। अविश्वासका बाजार गर्म हो गया; पुलिस और प्रजाके झगड़े नियमके रूपमें परिणत होने लगे।

ऐसी दशामें तग आकर पोपने लोकमतके विरोधी अभिमानी कौएट राउसीको अपना मुख्य-सचिव बनाया। मुख्य सचिव बननेके दो मास पीछे यह गर्वमूर्ति कौएट कैपीटलकी सीढियोंपर एक जोशीले हाथका शिकार हुआ। यह हत्या रोमके लिये क्रान्तिकी घोषणा थी। प्रजाने आनकी आनमें पोपके महलको घेर लिया और प्रजासत्तात्मक-राज्यका शोर मचा दिया। इसी झमेलेमें सेना और प्रजामें गोलियाँ चलगयीं और प्रजाके क्रोधका पारा सीमाको पार करने लगा। भय बढ़ता देख कर पोपने प्रजाकी इच्छा माननेका वादा किया यह वादा भी पहले बीसियों वादोंकी तरह झूठा था और केवल समय बितानेके लिये किया गया था। पोप भी जानता था और प्रजा भी जानती थी कि वादेकी कीमत उतनी भी नहीं है जितनी उस कागजकी है, जिसपर कि वह वादा लिखकर सुनाया गया है। प्रजाका जोश कम न हुआ और वह वादा पूरा करानेके लिये राजद्वारपर डटी रही। उस

समय पोपका हृदय हार गया। पादरीके बनावटी सैनिक वेषमेंसे वही लम्बा चोला दिखाई देने लगा, और आधे ईसाई-जगत्का आचार्य वेष बदलकर कैसे चोरीसे भाग गया, यह ऊपर लिखा आ चुका है।

दूसरे दिन प्रातःकाल पोपके भागनेका समाचार रोम में फैल गया। समाचार सुनकर सारी नगरीने मानो सुख साँस लिया। बँधा हुआ हिरना फाँस छूटनेपर जैसा प्रसन्न होता है, रोमवासी पोप के बन्धन से छूट-कर वैसेही प्रसन्न हुए। पोप के जाते ही रोम-वासियोंने रोममें रिपब्लिक (प्रजातन्त्रशासन) की घोषणा कर दी। प्रतिनिधि-सभा ही सर्व प्रधान होगयी। उसके नये चुने हुए प्रतिनिधियोंमें हमारे दो चिरकालसे परिचित व्यक्ति भी थे, एक मेज़िनी और दूसरा गेरीबाल्डी। रोममें हलचलका समाचार सुनते ही वे देशभक्त दौड़ते हुए इटलीकी प्राचीन राजधानीमें आ पहुँचे। गेरीबाल्डीको हमने मिलानके मामलोंसे असन्तुष्ट छोड़ा था। स्विजरलैंडमें जाकर वह कुछ समय बीमार रहा, फिर स्वस्थ होकर वेनिसके देशभक्तोंकी सहायताके लिये रवाना हुआ। रास्तेमें ही उसे रोमकी हलचलका समाचार मिला। वेनिसकी अपेक्षा रोमके नामका आकर्षण अधिक प्रबल था। गेरीबाल्डी उसे न रोक सका और मार्ग बदलकर रोममें पहुँच गया।

चकित आँखोंसे उस ढेरको देखा, और आशंकाभरे साधुवादसे आकाशको गुँजा दिया। सारा सभ्य संसार तमाशाई हो गया। तमाशेमें कार्यका सारा भार तमाशा करने वालोंपर होता है-तमाशाइयोंका काम केवल ताली पीटना और वाह वाह करना होता है। इस पवित्र-युद्धका सारा भार भी मुट्ठी भर रोम वासियों और बाहरसे आये हुये कुछ जोशीले इटालियनोंपर ही पडा। साहसिक शेरकी भाँति कमरें कसकर ये वीर भी सन्नद्ध हो गये और 'करें या मरें' का दृढ संकल्प करके इन वीरोंने फ्रांस, आस्ट्रिया और नेपल्सके गरम आवभगतकी तय्यारियाँ प्रारम्भ कीं। रोमके शासनके लिये एक त्रिमूर्ति चुनी गयी, जिसका केन्द्र और जीवन्त जीव मेजिनी था। लोग कहते हैं, क्रान्तिके समय देशों या नगरोंमें नियम नहीं रहते। आँखों देखी कहने वाले कहते हैं, कि उस स्वाधीनताके छोटेसे युगने



स्वतन्त्राकी ढाल ।

"अभीदमेकमेकोऽहमस्मि किमु द्वा किमु त्रय करन्ति ।"

(ऋग्वेद)

एकके बराबर तो मैं एक हूँ ही—दो या तीन भी मेरा नहीं बिगाड़ सकते।


पहला शत्रु फ्रांस था। सेनापति औडिनो मुँहपर मीठे शब्दोंकी नक़ाब चढ़ाये, रोमकी ओर बढ़ रहा था। पग २ पर वह यही घोषणा देता था कि 'हमारी सेना रोमपर आक्रमण करने नहीं, बल्कि उसे बचाने आयी है' किन्तु औडिनोके कार्य उसके वाक्योंको झूठ साबित कर रहे थे। वह जहाँ पहुँचता था वहाँ प्रेस बन्द करा देता था और आत्मीय-सेनाके हथियार रखा देता था। रोमन रिपब्लिकके कर्ता धोखेमें नहीं आये, वे कपड़ेके अन्दर छिपी हुई छुरीकी धारको देख रहे थे। रिपब्लिकने निश्चय किया कि फ्रेंच फौजोंका सामना किया जाय और इसकी सूचना

प्रजाको देते हुए कर्ता लोगोंने परमात्मा और सत्यके नामपर जनतासे एकता और सहायताके लिये अपील की। वह हृदयोंसे निकली हुई अपील हृदयोंमें लगी, व्यर्थ नहीं गयी। रोमकी छोटीसी रिपब्लिककी प्रजा मर कर भी स्वाधीनताकी रक्षा करनेके लिये उतारू हुई। प्रजा तय्यार थी, आवश्यकता एक ही वस्तुकी थी। नेता कहाँ था? शासनका नेता मेज़िनी विद्यमान था, किन्तु-रक्षाका नेता कहाँ था?

अकस्मात् रोमके बाजारोंमें शोर मच गया कि 'वह आ गया, वह आगया' वह कौन आगया, यह पूछनेकी आवश्यकता नहीं रही सब देशभक्तोंके हृदय जान गये कि स्वतन्त्रताकी ढाल गेरीबाल्डी आ पहुँचा! बाज़ार दर्शनाभिलाषियोंसे भर गये। प्रजाके हृदय आशासे उछलने लगे और उन्हें स्वाधीनताकी रक्षाका कार्य उस नरसिंहकी उपस्थितिमें एक खिलवाड़ प्रतीत होने लगा। एक दर्शक उस समयके दृश्यका यों वर्णन करता है.—

"वह रहस्य-मय विजेता, कीर्तिकी अद्भुत चमकसे घिरा हुआ था। वह न राजसभाके विचारोंको जानता था और न जानना चाहता था। जिस दिन रिपब्लिकपर आक्रमण होने वाला था, उसी दिन वह रोममें घुसा। रोमन लोगोंके आत्माओंने स्वयं ही जान लिया कि एक वही व्यक्ति है जो शत्रुके आक्रमणोंको रोक सकता है। बस, उसका सामने आना था

कि सारा जन समूह आशा और रक्षाका एक मात्र आधार समझ कर उसीकी ओर झुक पड़ा"।

दृढ हृदय और स्थिर हाथसे, गेरीबाल्डीने शत्रुके प्रहार रोकनेके लिये अपनी ढाल पकड़ी। जोशीले देश भक्त उसके चारों ओर एकत्र होने लगे। उनके जोशका कोई अन्त न था। किन्तु फ्रांसकी शिक्षित और प्रसिद्ध सेनाके सन्मुख मुट्ठी भर रोमन-देशभक्तोंका खड़ा होना असम्भव प्रतीत होता था। क्या कहीं तोपका सामना बन्दूक कर सकती है ? हाँ, एक दशामें यह भी सम्भव है। यदि बन्दूक शेरके हाथमें हो, तो पाँसे पलट सकते हैं। यहाँ भी यही दशा हुई।

औडिनोके पास सेना थी-लड़ाईका सामान था, किन्तु विजयका मूल कारण जोश नहीं था। केवल दूसरी रिपब्लिकका ध्वंस करनेके लिये सिपाहियोंको कोई जोश नहीं हो सकता। लड़ाईका प्रारम्भही उसके लिये अनिष्ट हुआ। उसने शत्रुकी देख रेख करनेके लिये कुछ सेनाके साथ अपने भाईको आगे भेजा। उसकी एक रोमन सेनासे भेंट हो गयी। औडिनोकेभाईने रोमका रास्ता माँगा, रोमनोंने इनकार किया। इस पर फ्रेंच सेनाने गोलियाँ चलायीं। जवाब में रोमन सिपाहियोंने गोलियों की वर्षा कर दी। औडिनोका भाई एक ही वारमें दुम दबाकर भाग गया,।

फ्रेंच-सेना भाग गयी। यह बड़ी बेइज्जतीकी बात थी। औडिनो अभी आक्रमणके लिये तय्यार नहीं था, किन्तु भागने के कारण फ्रांसके नामपर धब्बा लग गया था। उसे न धोना भी असम्भव था। औडिनोने दूसरे दिन धावा बोल ही दिया। एक सेनापति बड़ीसे बड़ी भूल जो कर सकता था, औडिनोने वही की। शत्रुके बलको थोड़ा समझना और तय्यारीके बिना केवल भाग्यपर भरोसा करके आक्रमण करना, सेनापतिके लिये घातक भूल होती है, औडिनोने वही की। उसने यह न समझा कि रोम अपने प्राणोंको लिये, अपनी स्वाधीनता और अपने देशके लिये लड़ रहा है। रोमका बच्चा बच्चा सिपाही है। उसने यहभी न सोचा कि रोमके देशभक्तोंको समरमें चलाने वाला मुखिया कौन है। गेरीवाल्डी अपने प्रभावसे अपाहिजोंको भी युद्धभूमिमें लड़ा सकता था। औडिनो ने उसके बलका विचार नहीं किया।

औडिनोने आक्रमण किये, किन्तु वे आक्रमण जीवनसे रहित थे। गेरीवल्डीने जो प्रत्याक्रमण किये, वे उत्साह और जीवनसे भरे हुए थे। औडिनोके सिपाहियोंके केवल शरीर आक्रमण कर रहे थे, रोमन लोगोंकी आत्मा और शरीर दोनों ही आक्रमण कर रहे थे। परिणाम वही हुआ जो होना चाहिये था। एकही दिनमें फ्रेंच सेनाके दम उखड़ गये, कई हजार मरवा कर और कई हज़ार क़ैद करा कर, औडिनोने समझा

कि शत्रु तुच्छ नहीं है। उसे लेनेके देने पड़ गये और यह सन्देह होने लगा कि कहीं सारी सेनाको ही भू-शायी न होना पड़े। युद्धके तीसरे प्रभात जब गेरीवाल्डी अपनी सेनाओं को युद्धके लिये तय्यार करने लगा तो उसे पता लगा कि औडिनोने युद्धकी शान्तिके लिये सफ़ेद झण्डी भेज दी है।

गेरीवाल्डीने शत्रुको पराजित किया था। पराजित शत्रु का ध्वंस कर देना युद्ध-कलाका पहला नियम है। गेरीवाल्डी ने भी तीव्र-गतिसे औडिनोका पीछा किया। किन्तु अवस्थाओंने उसकी इच्छा पूर्ण न होने दी। वह भागती हुई फ्रेंच-सेनाको पाकर आक्रमणकी तय्यारियोंमें लगा हुआ था, उसी समय रोमसे युद्ध बन्द करके लौट आनेकी आज्ञा हुई। विजयी सेनाका सेनानी गेरीवाल्डी रोमन लोगोंका साधुवाद लेता हुआ रोममें लौट आया।

किन्तु वीरको विश्राम कहाँ? जब तक संसारमें अँधेरा है, तब तक सूर्य्यको आराम नहीं मिल सकता। जहाँ राक्षस हों, वहाँ वज्रधरको पहुँचना पड़ता है। गेरीवाल्डी अभी रोममें पहुँचा ही था, जब उसे समाचार मिला कि नेपल्सका राजा सोलह हजार सिपाहियोंके साथ रोमन रिपब्लिक पर आक्रमण करनेके लिये बढ़ता आ रहा है। राज-सभाकी ओरसे, गेरीवाल्डीको आज्ञा हुई कि वह नेपल्सकी सेनाको रिपब्लिकसे बाहर कर दे। गेरीवाल्डीकी मनोकामना पूरी

हुई। शेरको दाढ़ हिलानेके लिये मानो शिकार मिला। यह स्वतन्त्रताकी ढाल, अभी फ्रेंच-तलवारको तोड चुकी, नेपल्स की निर्बल बर्छीकी नोककी ओर झुकी।

नेपल्सकी सेना बहुत थी। नेपल्सके राजाको अपनी सेना का भरोसा था और साथही उसे फ्रांसकी सेनाओंका भी विश्वास था। जिनपर विश्वास था, वे मुँहकी खाकर वापस हो गये। जब फ्रेंच सेनाके पराजयका हाल सुना तो नेपल्सके सिपाहियोंमें सनसनी सी फैल गयी। मारीचको सब जगह राम ही राम दिखायी देता था। अच्छी लड़ाई होनेसे पूर्वही आक्रमणकारी सिपाहियोंके दिमागमें गेरीवाल्डी की विचित्र-मूर्ति भयंकर भूतकी भाँति घूमने लगी।

इस समय गेरीवाल्डीके जीवनमें एक महत्वपूर्ण घटना उपस्थित हुई। वह नेपल्सकी सेनाको बाहर निकालनेकी तदबीरें सोच रहा था। उसी समय वह रोममें बुलाया गया और रोजलीको उसके ऊपरका अधिकार दिया गया। गेरीवाल्डीके मित्रोंको यह बुरा लगा और उन्होंने इसे अपमान समझा। गेरीवाल्डीने जो उत्तर दिया वह सभी देश भक्तोंको याद करने योग्य है। उसने कहा —

"मैं केवल आत्मप्रेमसे सम्बन्ध रखने वाली बातोंसे प्रभावित नहीं होता। जो मनुष्य मुझे शत्रुके सामने तलवार खींचनेका अवसर देता है, चाहे फिर मुझे एक साधारण

सिपाहीकी तरह लड़ना पड़े, यह मेरे धन्यवादोंका पात्र है। मैं राष्ट्र-रक्षककी हैसियतसे भी देशसेवाको उद्यत था और इसी लिये डिवीजनके जनरलके पदको धन्यवाद-सहित स्वीकार करता हूँ।"

जो लोग जरासी बातमें आत्मापमान समझ कर देश सेवासे मुँह मोड़ लेते हैं, उन्हें इस वीरोक्तिपर विचार करना चाहिये।

रोमकी दस हजार सेना नेपल्सकी सोलह हजार सेनाको बाहर निकालनेके लिये नगरसे बाहर हुई। इस देशभक्त सेनाका जीवन प्राण और वास्तविक अगुआ गेरीबाल्डी आगे आगे चला।

नेपल्सका कायर राजा सिंह-सेनाका सामना करनेका साहस न करके पीछेको लौटने लगा। गेरीबाल्डीके जोशीले सिपाही रात दिन उस भागती सेनाको तंग करने लगे। आखिर बहुत पीछे हट कर नेपल्सका राजा विलेट्री नामके ग्राममें दुर्ग बना कर बैठ गया। वहाँ उसने अपने आपको कुछ सुरक्षित समझा और रोमनसेनाकी प्रतीक्षा करनी प्रारम्भ की।

गेरीबाल्डीने भी निश्चय किया कि चाहे कुछ हो, वह इसी दुर्गमें नेपल्सकी सेनाकी समाप्ति करेगा। नेपल्सके कमसे कम पाँच हजार सिपाही विलेट्रीमें पड़े हुए थे, गेरीबाल्डीके पास

केवल उन्नीस सौ आदमी थे। नेपल्सकी सेना दुर्गमें थी, गेरीवाल्डी मैदानमें था। फिर भी भगवानका नाम लेकर गेरीवाल्डीने इसी ग्रामको शत्रुकी श्मशान-भूमि बनानेका निश्चय किया। किलेमें बन्द शत्रुको मारना कठिन जानकर गेरीवाल्डीने उसे दीवारसे बाहर खींचनेके लिये कुछ थोडेसे सिपाही भेजे। शत्रुने जब थोडेसे आदमियोंको पास आये देखा तो वह लोभ सवरण न कर सका। हाथ आये शिकारको कौन छोडना चाहता है? नेपल्सकी सेनाका कुछ भाग किलेकी दीवारसे निकलकर आगे बढ़ने लगा, गेरीवाल्डीके सिपाही पीछे लौटने लगे। सहजमेंही जीत होते देख नेपल्सकी सेना धीरे २ किलेसे बाहर हो आक्रमण करने लगी। शत्रुकी सेना बढती आयी, रोमकी सेना उनका रास्ता छोड़ने लगी। अहो! यह तो बडा सरल मार्ग है। नेपल्सके सिपाही आगे ही आगे बढने लगे। बढते हुए उन्हें यह ख्याल नहीं आया कि वे मृत्युकी दाढोंमें घुस रहे हैं।

आध घण्टा युद्धके पीछे शत्रुके सेनापतिने ५०० घुडसवारों को आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। गेरीवाल्डीने शत्रुके घुड-सवारोंको अनिवार्य वेगसे आते हुए देखा और क्षणभरमें फैसला कर लिया कि अब 'मारेंगे या मरेंगे'। उसके पास केवल ५० घुडसवार थे, उसने इस मुट्ठी भर सेनासे ५०० शत्रुके सवारोंका सामना करनेका विचार किया। '५०० से ५० भिड

गये। यह भिड़ना एक पत्थरका पहाड़के साथ टकरानेके समान था। ५०० के समूहका बल ही ५० को चितकर देनेके लिये पर्याप्त था। क्षण भरमें शत्रुके सवारोंका धक्का रोमन सिपाहियोंपर लगा। औरोंका क्या कहना था, स्वयं गेरीबाल्डी घोड़ेके साथ भूमिपर जा रहा, किन्तु यह दशा क्षण भर ही रही। झट गेरीबाल्डी खड़ा हो गया और अपनेको शत्रुमें घिरा देखकर चारों ओर तलवार बरसाने लगा। थोड़ी ही देरमें उसका घोड़ा भी सावधान हो गया और अपने सवारको पीठपर लेकर बिजुलीकी तरह सेनामें निर्भय विचरने लगा।

नेपल्सके सवार मुट्ठी भर रोमन सवारोंको मरा जान आगे बढ़ गये। उनके पीछे ही पीछे पैदल सेना भी बढ़ी। बढ़ते गये पर चारों ओरसे घिर गये। इधर उनके गुजर जाने पर रोमके सवार सावधान हो गये, उधर दोनों ओर बिखरे हुए रोमन सवारोंने गोलियोंकी बाढ़ झोंकी। अनुकूल अवसर जान गेरीबाल्डीने अपने सेनापति रोजलीके पास दूत भेजा और सेनाकी सहायता माँगी। रोजली सारी सेनाके साथ पास ही था। उसने उत्तर भेजा कि "अभी सहायता, नहीं भेज सकता क्योंकि सिपाहियोंने भोजन नहीं किया" यह उत्साह-हीन कोरा जवाब सुनकर भी गेरीबाल्डीका दिल नहीं टूटा। उसने शत्रुका क्षय जारी रखा।

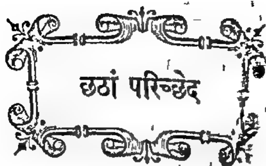


इसी समय दैवने सहायता दी। रोमका सेनापति मनारा दो मीलसे लडाईका शब्द सुन रहा था। यह सेनापति गेरीवाल्डीका भक्त था। उसने रोजलीसे आज्ञा माँगी और युद्ध स्थलपर आ पहुँचा।

इस नयी सेनाने युद्धका फैसला कर दिया। रोमन सेनाका वेग असह्य हो गया। नेपल्सकी सेना धीरे २ किलेकी दीवारोंमें घुसने लगी। मैदान गेरीवाल्डीके हाथ रहा। दूसरे दिन प्रातःकाल जब गेरीवाल्डीने विलेट्रीमें अपने कुछ सिपाही समाचार लेनेके लिये भेजे, तो गाँव खाली पाया। नेपल्सका कायर राजा, दो हजार सिपाहियोंकी मारसे डरकर अपनी १५००० सेनाको समेट लम्बा हो गया।

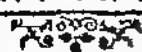
इस विजयसे स्वतन्त्रताकी वज्रमय ढालका यश चारों ओर फैल गया।





दीपक बुझ गया

"मरण जीवितोपमम्"



नेपल्सकी सेनाएं भाग गयीं, किन्तु इसी समयमें फ्रांसकी सेनाको बहुत सी सहायता पहुँच गयी। औडिनोने जो शान्ति की थी, वह केवल सहायता पानेके लिये ही की थी। फ्रांससे सेनाकी ओर सहायता पाते ही औडिनोकी तोपोंके मुँह खुल गये, रोमन लोगोंको सूचना मिल गयी कि 'शत्रु आरहा है'।

जहाँ शत्रु था, वहाँ गेरीवाल्डी था। अपने बाँके वीरोंकी सेनाको लिये हुए नरसिंह रोमकी रक्षाके लिये आ उपस्थित हुआ। इतिहास साक्षी है कि थोड़ी सी सेनासे गेरीवाल्डीने रक्षाका वह कार्य किया जो असम्भव था। फ्रांसकी भयंकर तोपें रात दिन रोमन दिवारोंपर गोले बरसाती रहीं, फ्रांसकी सेनाएँ आक्रमणपर आक्रमण करके स्थान छीनने लगीं, गेरीवाल्डीके वीर-योद्धा कम होने लगे, पर गेरीवाल्डीने हिम्मत नहीं हारी। शत्रुका सामना बढ़िया था। उसके पास सिपाही बहुत थे और साथ ही गेरीवाल्डी सेनापतित्वमें रोजलीके अधीन था। इन सब प्रतिकूल दशाओंके होते हुए यह पहलेसे ही स्पष्ट था कि रोमकी सेनाएं हारेंगी। हारसे बचनेका एक ही उपाय था, कि रोमके सारे योग्य निवासियोंको सिपाही बनना पड़ता। परन्तु यह कार्य बिना आज्ञाके नहीं हो सकता था। गेरीवाल्डीने इस समय प्रस्ताव किया कि रोमकी रक्षाका भार किसी एक ही आदमीको सौंप दिया जाय और शेष सब निवासी उसकी आज्ञाका पालन करें।

गेरीवाल्डीका विचार था कि ऐसा प्रबन्ध हो जानेपर रोमकी रक्षाके लिये कमसे कम एक लाख सिपाही तय्यार हो सकते हैं। एक लाख सिपाहियोंकी लाशों परसे गुजरना फ्रेंच सेनाके लिये टेढी खीर होता। यह प्रस्ताव जरा चौंकाने वाला था, किन्तु इसे माने विना कार्यसिद्धि भी तो असम्भव थी। स्वतन्त्रताकी रक्षाका काम जितना पवित्र है, यह उतना ही दुष्कर है, और स्वार्थत्यागापेक्ष है। रिपब्लिकके कर्ता लोग जिस समय इस अद्भुत परन्तु आवश्यक प्रस्तावको न मान सके। उसी समय रोमका पतन निश्चित हो गया था। गेरीवाल्डी इस बातको जानता था—पर साहस-हीन होना किसे कहते हैं यह वह नहीं जानता था। तोपों और बन्दूकोंकी दिन रातकी बोछारमें बैठकर भी गेरीवाल्डी रोमकी रक्षाके उपाय करने लगा।

जहाँ शक्तिमें इतना भेद हो, वहाँ रक्षाका काम कितने दिनों तक हो सकता है। फ्रांसकी सेनाका भयकर बादल दिन प्रति दिन पास ही पास आने लगा; शत्रुके क्षयकारी गोलों-की बाढ़ रोमके घरोंकी छतोंपर फट २ कर प्रलयकाल मचाने लगीं, और रक्षाका काम क्षण क्षणमें कठिनसे कठिन होने लगा। तो भी रोजलीकी आज्ञारूपी जञ्जीरोंसे बँधी हुई स्वतन्त्रताकी ढाल अपने स्थानपर डटी रही, और रिपब्लिककी कार्यकर्तृ सभा दिन रात सभाभवनमें बैठ कर आती हुई आपत्तिके समाचार सुनने लगी।

आखिर वह समय आ गया। २६ जून (१८४६) के सायं काल रोमके सेनापतियोंको ज्ञात हो गया कि अब शत्रु सिपाही नगरमें प्रवेश करेंगे। शत्रुकी तोपोंने रोमकी तोपोंके मुँह बन्द कर दिये थे, नगरकी कोटमें कई स्थानोंपर छेद हो गये थे, और गोला बारूद समाप्त हो चुका था। भयकर रात आयी, उस रात भर सारे नगरमें कोई भी न सोया। सायं कालसे ही फ्रेंच सेनाकी सारी तोपोंने भयकर आग बरसाना प्रारम्भ कर दिया था। अधी राततक भूमि और आकाशमें गोले ही गोले दिखाई देते थे। अकस्मात् वर्षा बन्द हुई और रातकी भयानक शान्तिमें टूटी हुई दीवारके रास्ते फ्रेंच सेनाने रोममें प्रवेश किया।

वह घडी आ गयी, जिसमें असली और नकली वीर पहिचाने जाते हैं। गेरीवाल्डी इसी घडीकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब आपत्ति सिरपर आती है तब महापुरुषोंके हृदय और भी महत्व-पूर्ण हो उठते हैं। शत्रु घरमें घुस रहा हो, उस समय सोच विचारका काम नहीं रहता। उस समय वीरका काम दीवारके पीछे छिप कर गोली मारना नहीं है, अपितु, या तो शत्रुको मार भगाना, या स्वय धराशायी होना है। म्यानसे नगी तलवार निकाल, इटलीकी स्वतन्त्रताका गीत गाकर, और एक छलाग मार कर गेरीवाल्डी अपने वीर देशभक्तोंके आगे २, अन्दर घुसते हुए शत्रुओंपर विद्युली

की तरह टूट पडा। उस समय 'कहाँ और क्या' का प्रश्न नहीं रहा, उस समय मरने और मारनेका प्रश्न था। वीरके हृदयमें एक ही विचार था कि रोमकी स्वतन्त्रता तो नहीं रही, पर नाम रह जाय। कोई यह न कहे कि गेरीबाल्डी जीवित था और फिर शत्रुने रोमको ले लिया। भूखे बाघकी भाँति गेरीबाल्डी फ्रेंच सेनापर जा पडा। जिन्होंने उस समय गेरीबाल्डीको देखा, वे कहते थे कि उन्होंने सेनापतिको इतना महान् पहले कभी नहीं देखा। उसकी तलवार बिजुलीकी तरह चमक रही थी, वह जिसपर पडती थी यमाज्ञाका काम करती थी। नया शिकार पिछले शिकारका लहू धो देता था। न जाने उस दिन गेरीबाल्डीने कितने मारे। उसके मित्र इसी प्रतीक्षामें थे, कि उसपर कब किसी शत्रुका वार हो, और उसके सिरको धडसे जुदा करे, किन्तु ऊपरसे कोई हाथ उसकी रक्षा कर रहा था। तलवारोंकी मार काटमेंसे भी गेरीबाल्डी बिना किसी बडे घावके निकल आया।

इसी समय गेरीबाल्डीको आज्ञा मिली कि वह राज सभामें आकर सभाको युद्धकी दशा समझावे। लहूसे भरी तलवार म्यानमें थी, सारा शरीर लहूसे तरबतर हो रहा था, कपड़े गोलियों और प्रहारोंसे छिदे पडे थे, इसी दशामें गेरीबाल्डी सभामें प्रविष्ट हुआ। सेनापतिको इस रूपमें देखकर सारी राजसभा खडी हो गयी और देर तक तालियों द्वारा उसका

दीपक बुझगया

तक तक मेजिनी और गेरीबाल्डीकी देशभक्तिका स्तोत्र दिग्दिगन्तमें उच्चरित होगा और तब तक लोग फ्रांस, औडिनो और तीसरे नेपोलियनकी स्मृतिपर सौ सौ धिक्कार दिया करेंगे।





आदर करती रहो। गेरीबाल्डीने उस समय सभाको समझाया कि "अब नगरकी रक्षाका कोई उपाय नहीं है, हाँ, स्वतन्त्रताकी रक्षाका एक उपाय है। वह यह कि रोमको फ्रासके हाथोंमें छोडकर हम लोग अन्यत्र चले जायँ। जहाँ हम जायँगे वहीं रोम होगा। इस प्रकार रोमका नगर जायगा, पर स्वतन्त्रता नहीं जायगी।"

गेरीबाल्डी यह राय देकर फिर अपने सिपाहियोंमें जा मिला और जहाँ तक हो सका, फ्रेंच सेनाकी बढती रोकने लगा। किन्तु, एक नाला महानदीका रास्ता काट कर उसे नहीं रोक सकता। रोमके सिपाही वीरतासे लडे, पर फ्रेंच सेनाके प्रवाहको न रोक सके। फ्रेंच सेना बढती गयी, गेरीबाल्डी और उसके साथी मरते और मारते हुए इंच इंच भर स्थान छोडते गये।

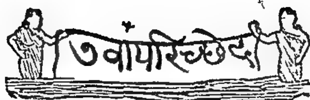
अन्तमें राज-सभाने समझ लिया कि युद्ध हो चुका, अब लडना अपनी हत्या करना है। रोते हुए प्रतिनिधियोंने हथियार रख देनेका प्रस्ताव स्वीकार किया, और फ्रेंच सेनापतिके पास भेज दिया। रोमने हथियार रख दिये और स्वतन्त्रताका जलता हुआ दिया कुछ समयके लिये फिर बुझ गया।

दिया बुझगया। पर, अपनी स्मृति पीछे छोड गया। जब तक संसारमें स्वतन्त्रता और स्वार्थत्यागका आदर है तब तक रोमकी स्वतन्त्रताके उन दिनोंके गीत गाये जायँगे, तब

रुधिरकी आहुतियाँ दिये विना स्वतन्त्रता नहीं मिली। सबसे उत्तम सुख मोक्ष या मुक्ति है, वह अपना तन त्याग किये विना नहीं मिलता। जो मनुष्य फूलोंकी सेजपर सोकर उन्नति चाहे, और जो जाति गदेलोंपर आराम करके स्वतन्त्रता चाहे, उस जैसी भूल किसीने नहीं की। लोरीका सुख तत्काल होता है परन्तु कड़वी दवाई पीछेसे सुख पहुँचानेवाली होती है। गेरीवाल्डी और मेजिनी आदि देशभक्त अपनी जातिको अत्याचारोंकी शृङ्खलाओंसे छुड़ाया चाहते थे। अतः उनके भाग्योंमें कैदखाना, निर्वासन, भूख और दरिद्रता लिखे थे। इस बातको वे भी जानते थे, और जानकर भी मोक्षके मार्गको नहीं छोड़ना चाहते थे। महात्माओंका यही तो महत्व है।

रोम पराजित हो गया, किन्तु नरकेसरी पराजित नहीं हुआ।

जब रोमका झण्डा गिर गया, तब गेरीवाल्डीने चौकमें अपने अनुयायियोंको इकट्ठा किया। अभी वह घावोंसे घिरा हुआ था। स्वाधीनताका लाल टीका अभी उसके माथेपर दिखाई दे रहा था, और उसके कपड़े अब भी मानो स्वाधीनताको शरीरमें प्रवेश करनेका सरल मार्ग देनेके लिये मुँह खोले हुए थे। उसकी आखोंमें क्रोधका खून था, और शोकके आँसू थे। एकत्रित वीरोंमेंसे एक भी ऐसा नहीं था जिसकी आँखें सूखी हों और हृदय शोकाग्निसे दग्ध न हो रहा



आपत्तिमें धैर्य ।



" विपदि धैर्यम् "

महापुरुषोंका स्वभाव है कि वह विपत्ति में धैर्य रखते हैं ।



पुराने कथकडोंने कथाएँ गढते हुए एक बात कभी नहीं भुलायी । जो वस्तु जितनी अधिक मूल्यवती है, उसके पानेके लिये उतना ही अधिक कष्ट होता है । उससे फलका महत्व आँचा जाता है । सुन्दरी स्त्री को प्राप्त करना होगा तो बडे कष्ट सहने पडेंगे । मोतीको पाने के लिये कई दैत्य दानवोंका सामना करना पड़ेगा । वस्तुत यह नियम सत्य है । ससारके वास्तविक सुख और असली रत्न पानेके लिये शरीरको और मनको खपाना पडता है । इतिहासने यह स्पष्ट कर दिया है । कोई अनूठा आविष्कार बिना दो चार बलिदानोंके नहीं हुआ और किसी जातिको

रुधिरकी आहुतियाँ दिये बिना स्वतन्त्रता नहीं मिली। सबसे उत्तम सुख मोक्ष या मुक्ति है, वह अपना तन त्याग किये बिना नहीं मिलता। जो मनुष्य फूलोंकी सेजपर सोकर उन्नति चाहे, और जो जाति गद्देलोंपर आराम करके स्वतन्त्रता चाहे, उस जैसी भूल किसीने नहीं की। लोरीका सुख तत्काल होता है परन्तु कड़वी दवाई पीछेसे सुख पहुँचानेवाली होती है। गेरीबाल्डी और मेजिनी आदि देशभक्त अपनी जातिको अत्याचारोंकी शृङ्खलाओंसे छुड़ाया चाहते थे। अत उनके भाग्योंमें कैदखाना, निर्वासन, भूख और दरिद्रता लिखे थे। इस बातको वे भी जानते थे, और जानकर भी मोक्षके मार्गको नहीं छोड़ना चाहते थे। महात्माओंका यही तो महत्व है।

रोम पराजित हो गया, किन्तु नरकेसरी पराजित नहीं हुआ।

जब रोमका झंडा गिर गया, तब गेरीबाल्डीने चौकमें अपने अनुयायियोंको इकट्ठा किया। अभी वह घावोंसे घिरा हुआ था। स्वाधीनताका लाल टीका अभी उसके माथेपर दिखाई दे रहा था, और उसके कपड़े अब भी मानो स्वाधीनताको शरीरमें प्रवेश करनेका सरल मार्ग देनेके लिये मुँह खोले हुए थे। उसकी आँखोंमें क्रोधका खून था, और शोकके आँसू थे। एकत्रित वीरोंमेंसे एक भी ऐसा नहीं था जिसकी आँखें सूजी हों और हृदय शोकाग्निसे दग्ध न हो रहा



हो। उन्हें सामने देखकर नायकने कहा—"मैं तुम्हें नये युद्ध और नये यश दिलाऊँगा। जो मेरे साथ चलना चाहे वह अपना होगा, किन्तु उसका मूल्य परिश्रम और खतरा है। मैं तुमसे मातृभूमिसे प्रेमके सिवाय कुछ नहीं माँगता, और बदलेमें न वेतन दे सकता हूँ, न आराम दे सकताहूँ, और न नियम पूर्वक खाने को भोजन ही दे सकता हूँ। जो इस भाग्यसे सन्तुष्ट न हो वह पीछे रह सकता है। रोमके दरवाजेमें अब हम तब तक नहीं घुस सकते जब तक फ्रेंच लोग यहाँ हैं। हम फ्रेंच सेनाके लहूमें अपनी अँगुलियाँ भिगो चुके, अब चलो, चलकर आस्ट्रियन लोगोंके रुधिरमें अपने हाथ डुबोएँ"।

चारों ओरसे जोश और उत्साहके शब्दोंमें उसका उत्तर मिला। लगभग पाँच हजार अनुयायी उसके घोड़ेके पीछे हो लिये। उसकी सहधर्मिणी एनिटा पुरुष वेष में उसके साथ थी।

यह स्वतन्त्रताकी सेना रोमसे बाहर निकल कर एक ओर को चल दी। इस सेनाके पास न धनथा, न अन्न था, न भारी समय विभाग था, बस, एक नायक था, और दूसरा देश प्रेम था। यह दो ही शक्तियाँ उन्हें खींच कर ले चलीं।

इस सेनामें भरती होनेके लिये नायकमें भक्ति और देश प्रेम ही पर्याप्त थे, परन्तु उसमें स्थिर रहनेकेलिये अतुल सहन शक्ति और असीम स्वार्थत्यागकी आवश्यकता थी न खाना, न पीना और सिरपर दिन रात जानका खतरा। यह सेना रोमसे



निकली और दोनों ओरसे भेडियोंके झुंड उसे नोचनेके लिये रवाना हुए। ओडिनोकी सेना एक ओरसे और आस्ट्रिया-की सेना दूसरी ओरसे स्वतन्त्रताके मुसाफिरोंको घेरनेका यत्न करने लगीं। उनके भयसे भोजनके अभावके साथ विश्राम-का अभाव हुआ। दिन रात भागना ही भागना उनका काम था। इस अतिशय कष्टके आनेपर स्वाधीनताकी सेना छुँटने लगी, प्रतिदिन सौ सौके जत्थे जुदा होने लगे। एक स्थानपर अकस्मात् रातको यह सेना आस्ट्रियन सिपाहियोंसे घिर गयी, उस समय सबका भागना कठिन था। नायकको केवल दो सौ सिपाही लेकर ही भाग जाना पड़ा। धीरे २ उनमेंसे भी कई थक कर, कई बीमार होकर या निरुत्साहित होकर पृथक् होते गये। अन्तमें एनिटा और दो तीन साथियों को साथ लिये हुए गेरीबाल्डी आस्ट्रियाके शिकारी कुत्तोंसे प्राण बचाता हुआ भागने लगा।

यह कष्ट ही पर्याप्त था, परन्तु दैव इतनेसे ही सन्तुष्ट न हुआ। एनिटाको कई महीनोंका गर्भ था। रात दिनके अन-वरत कष्टप्रद सफरने उसकी तबीअत बहुत खराब कर दी। प्रतिदिन वह यात्राके अयोग्य होने लगी, उसका घोड़ेपर सवार रहना भी कठिन हो गया। पर एनिटा वीरांगना थी, सच्ची सती थी। उसने जिस वीर पतिको हृदय दिया था, उसके योग्य बनना वह अपना कर्त्तव्य समझती थी। आपत्ति



और खतरेमें वह सदा पतिके साथ रहती थी। गेरीवाल्डी अपनी मातृ-भूमिसे उतर कर यदि किसी वस्तुको चाहता था, तो एनिटा को। वह उसे कभी आँखोंसे ओझल नहीं होने देता था। दोनोंका प्रेम आदर्श भूत था। एनिटाका कष्ट गेरीवाल्डी-को दुःखित करने लगा। रोमकी दीवारोंमें घुसे हुए आक्रमण-कारी शत्रुकी भयंकर तोपें जिसके हृदयको नहीं हिला सकी थीं, एनिटाके दुःखने उसे हिला दिया, किन्तु उपाय कोई नहीं था। आस्ट्रियन कुत्ते बू लेते हुए पीछा कर रहे थे और एक रात भी विश्राम नहीं लेने देते थे।

आखिर दशा बहुत बिगड़ने लगी। गेरीवाल्डीका हृदय काँपने लगा। जब गेरीवाल्डीने रोमकी रक्षाके लिये तलवार पकड़ी और आगकी भट्टीमें छलाँग लगायी, तब एनिटाने उसकी मंगल कामनाकी, उसका हाथ पकड़ कर रोका नहीं। जब रोमका पतन होनेपर एक व्यक्तिने फ्रांस, आस्ट्रिया और नेपल्स, तीनोंको खुला चैलेंज देकर जंगलका रास्ता लिया, तब किसीने उसे मूर्ख कहा और किसीने कम समझ पुकारा, किन्तु एनिटा—सती एनिटाके मुँहसे एक शब्द नहीं निकला। स्वतन्त्रताकी देवीकी भाँति मनुष्य वेषमें घोड़ेपर सवार हो पतिकी छाया बनना ही उसने अपना कर्तव्य समझा। गेरीवाल्डीके चित्तमें भी एनिटा और स्वतन्त्रतामें कोई भेद भाव न रहा था। वह एनिटाको शरीरधारिणी स्वतन्त्रता समझने

लगा था। वहीं एनिटा दिन प्रतिदिन, क्षण प्रतिक्षण निर्बल होने लगी। उसने इशारा करके बतला दिया कि इसमें आगे जानेकी शक्ति नहीं है। यह स्पष्ट प्रतीत होने लगा कि समय-से पूर्व ही प्रजनन काल उपस्थित हुआ है।

अब कहीं लेटानेके स्थानकी खोज हुयी। पासही एक किसानकी कुटिया थी, उसमें एनिटा लेटायी गयी, परन्तु अब कुछ नहीं हो सकता था। नवजात बालक और उसकी माताकी आयुका समय शेप नहीं था। इस भूमिपर स्वतन्त्रता न पाकर सती एनिटा उस लोकको पधारी जहाँ अत्याचारीके बन्धनोंकी पहुँच नहीं है, जहाँ सच्चे आत्माओं-को दु ख झेलने नहीं पडते और जहाँ सिरपर ताज रखे हुए डाकू सती स्त्रियों और सत्पुरुषोंको देशनिकाला नहीं दे सकते। एनिटा वहीं चली गयी और अपने प्यारे पतिके हृदयमें अमिट वेदना और मुखपर दु खकी रेखाएं छोड गयी।

प्यारी हृदयेश्वरी मर गयी, पर गेरीबाल्डीको उसके गाडने मात्रका समय मिला, उसकी कब्रपर आँसू बहाने तक-का अवसर न मिला। आस्ट्रियाके सिपाही सिरपर आ पहुँचे। गेरीबाल्डीको भागना पडा। शिकार हाथसे गया देख, आस्ट्रियनोंने अपना क्रोध उस किसानपर निकाला, जिसने मरते हुए रोगीको आश्रय दिया था। उस बेचारेको फाँसी दी गयी और उसकी लाश उसके घरपर लटका दी

गयी। अधिकारके पर्देमें पापके निवासका क्या इससे अच्छा उदाहरण मिल सकता है ?

दुःखकी पराकाष्ठा हो चुकी, अब और क्या था ? गेरीवाल्डी दम तोड आस्ट्रियनोंके पञ्जेसे भाग निकला और पीडमौएटके स्वतन्त्र-राज्यकी सीमामें पहुँच गया। गेरीवाल्डीके नाम और तेजको सराहनेकी शक्ति पीडमौएटमें भी नहीं थी, वहाँसे उसे इशारा दिया गया कि उसका इटली छोड जाना ही अच्छा है। देशका सच्चा पुत्र देशसे निकाला जाकर दूसरी बार अमरीका पहुँचा और न्यूयार्कमें मोमबत्तीका काम करके दिन बिताने लगा। देशभक्तोंकी यही दशा होती है। मेजिनीको भी लण्डनमें लड़के पढाकर जीवन बिताना पडा था।

कुछ दिन अमरीकामें रहकर गेरीवाल्डी दक्षिण अमरीकामें चला गया। वहाँ उसके कई पुराने मित्र और भक्त थे। लग भग दो साल वहींपर बिताकर गेरीवाल्डी समुद्रके सफरके लिये चल पडा। वह व्यापारी कम्पनियोंके एजएटका काम करके अपना पेट भरने लगा।

इधर इटलीकी भी अवस्थायें कुछ बदलने लगीं, पीडमौएटके राजा पुरानी दब्बू नीतिको त्याग स्वतन्त्र आकाशमें उडारी लगाने लगे। इस लिये गेरीवाल्डी इन्हीं समुद्र यात्राओंमें इटलीके बन्दरगाहोंपर भी उतरने लगा। १८५४ में उसने मातृभूमिमें लौट आनेका निश्चय कर लिया और सार्डीनिया

कैपररा नामक द्वीपमें एक छोटा सा खेत खरीद लिया। तलवारके धनीने समय विपरीत देखकर तलवारके स्थानमें हल पकड़ लिया।



तीसरा भाग



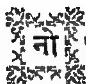
स्वाधीनताकी लब्धि





दो नये व्यक्ति

"सूर्याचन्द्रमसाविव"



नोवाराका युद्ध क्षेत्र था। आस्ट्रियाकी सेनासे हार कर चार्लस एल्बर्टकी सेनाएँ निरुत्साहकी दशामें पडी थीं। चार्लस एल्बर्ट भी चिन्ताके सागरमें गोते खा रहा था।

मामला यों हुआ। पहिली हारके पीछे पीडमौएट और आस्ट्रियाके अन्दर कुछ समयके लिये शान्ति हो गयी थी। शान्तिकी बात चीत होने लगी परन्तु शान्ति होती कैसे ? आस्ट्रिया चाहता था कि वह इटलीका स्वामी हो, पीडमौएट यह आपत्ति स्वीकार नहीं कर सकता था। कुछ समयके पीछे फिर सेनाएं हिलने लगीं और युद्ध आरम्भ हो गया। दैव पीडमौएटके विरुद्ध ही रहा और २३ मार्च (१८४६) को नौवाराके मैदानमें आस्ट्रियाकी पूरी जीत हुई, पीडमौएटकी लडाकू सेनाका बड़ा भाग नष्ट हो गया।

एक योद्धाके लिये जो सबसे बडा अपराध है, वह चार्लस एल्वर्ट कर बैठा, वह हार गया। आस्ट्रियाने जो शर्तें पेश कीं, उन्हें मानना एक मानी राजाके लिये असम्भव था। हारा हुआ राजा सोचता रहा। देर तक सोचनेपर भी वह अपने आपको अपमान जनक शर्तें माननेके लिये तैयार न कर सका। एक बार फिर जोश आया और चार्लस एल्वर्ट अपने मन्त्रियोंसे पूछ उठा 'क्या अब भी हम आस्ट्रियासे लडाई कर सकते है ?' चारों ओरसे यही उत्तर मिला कि 'नहीं' चार्लस एल्वर्टने फैसला कर लिया। उसके हृदयने पुकार कर कह दिया कि 'तुम देशको स्वतन्त्र नहीं करा सकते। यह काम तुम्हारे बसका नहीं।' चार्लस एल्वर्टने राज्यसे त्यागपत्र दे दिया और अपने पुत्र विक्टर इम्मैनुअलको गद्दीपर बैठा दिया।

चार्लस एल्वर्टकी इच्छाएँ अच्छी थीं, वह इटलीको स्वतन्त्र करना चाहता था, वह अपना शरीर इटलीके नामपर वारनेको तय्यार था—किन्तु दो दोष उसका साथ न छोडते थे। उसके अन्दर स्थिरता नहीं थी और आत्मविश्वासका अभाव था। ये दो दोष उसके सब गुणोंको निकम्मा बना देते थे। उसने अपने यत्नोंको विफल होना देखा और चिरपरिश्रमसे तय्यारीकी हुई सेनाका संहार होते देखा। इन दृश्योंने उसका जी तोड दिया। अपने ऊपर भाग्यका प्रकोप समझ कर उसने यही उचित समझा कि पुत्रको गद्दीपर बिठा दे।

उसने सोचा कि यदि मेरे दुर्भाग्य ही इटलीके स्वतन्त्र होनेमें बाधक है, तो उन्हें रास्तेसे हटा देना ही अच्छा है।

विक्टर इम्मेनुअल राजा बनाया गया। राज्यारोहणके समय वह अभी युवक था। २६ वर्षकी आयु, गठा हुआ शरीर, चढी हुई मूछें, मध्यम कद और स्थिर तेजस्वी आँखें उसे नवयुवकको स्वतन्त्रता देनेके कार्यके सर्वथा योग्य बनाती थीं। आस्ट्रियन सेनापतिका उसने निर्दयतासे सामना किया। जब विजयीने उसे अपमान-जनक शर्तें माननेके लिये दबाना चाहा तो उसका उत्तर उसके समान वीरके योग्य था। उसने कहा—

"इन शर्तोंके माननेसे पूर्व मैं एक सौ राजमुकुट खोनेके लिये तय्यार हूं। जो मेरे पिताने कहा, उसपर मैं दृढ़ हूँ। यदि तुम चाहते हो कि मौत देने वाला युद्ध करो तो ऐसा ही हो। मैं जातिको युद्धके लिये जगा दूंगा और तुम देखोगे कि मेरा देश भी जाग सकता है। यदि मुझे गिरना ही होगा, तो मैं बिना शर्तके गिरूंगा। मेरा कुल देश निकालेका रास्ता जानता है, पर बेइज्जतीका रास्ता नहीं जानता"

वे ही मनुष्य संसारमें कृतकार्य हो सकते हैं जो हारके समय भी ऐसा उत्तर दे सकें। जो मनुष्य गिरकर चकनाचूर हो जानेकी सम्भावनाका बोझ सिरपर उठाता है, वह ऊँचे पहाड़की चोटीपर चढ सकता है। वह कायर है, जो चोट या

खतरेसे डरता है, वह कभी बड़े कार्यके या भारी बोझ उठानेके लायक़ नहीं। 'देशके वे हितैषी देशके मध्यम दर्जेके मित्र हैं, जो उसे राजमार्गपर दौड़ाना चाहते हैं। उन्नतिका मार्ग सीधा साफ सपाट राजमार्ग नहीं है। वह गढ़ोंसे, टीलोंसे, खोहोंसे और झाडियोंसे भरा हुआ पहाडी रास्ता है। उसमें अग्रसर होना उनका काम नहीं जो आराम कुर्सीपर लेट कर स्वतन्त्रताकी स्कीमें बनाते हैं। राष्ट्रीय उन्नति करनेवाले वे लोग होते हैं जो लेख लिखनेसे पहले जेलमें जानेकी तय्यारी कर लेते हैं और हथियार उठानेसे पूर्व अपना कफन तय्यार रखते हैं। विक्टर इम्मैनुअल वैसे ही पुरुषोंमेंसे था। आस्ट्रियन सेनापतिको इस नयी शक्तिके सामने झुकना पड़ा और ऐसी शान्ति हो गयी जो पीडमौण्टके लिये वैसी अपमान-जनक नहीं थी।

शान्ति हो जानेपर नये राजाने उदारताका आदर्श सामने रखकर राज्य करना प्रारम्भ किया। मेस्सिमो डी. एज़ेग्लिओ प्रधान सचिव बनाया गया। यह देशभक्त अब आयुमें बड़ा हो गया था, और सारे देशमें अपनी अनेक प्रकारकी शक्तियोंके लिये पूजनीय समझा जाता था। वह योद्धा था, विद्वान् था, लेखक था और राजनीतिज्ञ था। राजाने इस उदार विद्वान्को महामन्त्री बनाकर जातिका विश्वास कमा लिया।

नये मन्त्रि मण्डलने जातिके घावोंपर मरहम पट्टी करना प्रारम्भ किया। चिरकालसे देशभक्तोंकी शिकायत थी, कि धर्माधिकारियोंका राज्यके कार्यमें अनुचित अधिकार है। पादरी मण्डलके महाविरोध होनेपर भी राजा और मन्त्रि मण्डलने राजनियमसे ये अधिकार उड़ा दिये। सारे देशमें इससे हलचल सी मच गयी। इसी समय एक शक्तिशाली मन्त्रीका देहान्त हो गया। डी. एज़ेग्लिओने उसके स्थानमें कावूर नामके एक सज्जनको मन्त्रि-मण्डलमें नियुक्त कर लिया।

जब कावूरका नाम राजाके सामने आया तो उसने डी एज़ेग्लिओको ये शब्द कहे—"जरा सावधान रहना। यह कावूर तुम सबका शासन करेगा, यह तुम्हारा फैसला कर देगा और स्वयं मुख्य-सचिव बन जायगा।" सचमुच विक्टर इम्मैनुअल भविष्य-वादी था। पाठको! तुम भी जरा सावधान रहना, यह नया महापुरुष कहीं हमसे बिना पहचाने ही न निकल जाय। चलो देखें यह कौन था।

कावूर एक उच्च घरानेमें पैदा हुआ था, किन्तु छोटा भाई होनेके कारण अपना मार्ग स्वय ही बनाता रहा। छोटी उम्रसे ही उसकी वृत्तियाँ विलक्षण हो रही थीं। यह पहले सेनामें भरती हुआ, उस दशामें यह देशकी स्वतन्त्रताके युद्धके लिये इतना उतावला होरहा था कि सेनाविभाग उसे नहीं सह सकता था। सेनासे जुदा होकर उसने अपने पितासे कह कर

लेरीमें कुछ भूमि ख़रीद ली और वहीं एकान्तजीवन बिताने लगा। इस एकान्त स्थानमें खेती करता हुआ कावूर एक ही चिन्तामें मग्न था। देशकी राजनीतिक दशा कैसे सुधारी जाय, जातिका आलस्य कैसे तोडा जाय, ये प्रश्न उसके चित्तमें निरन्तर घूम रहे थे। पीडमौएटके राजपक्षको वह बहुत अनुदार और संकुचित विचारोंवाला समझता था और मेजिनी आदिके प्रजातन्त्र-वादको वह अक्रियात्मक मानकर त्याज्य समझता था। इस प्रकार उस समय विद्यमान दोनों ही शक्तियोंको वह देशके उद्धारमें असमर्थ पाता था। राजनीतिक प्रश्नोंका अनुशीलन करनेके लिये इन्हीं दिनों उसने इङ्गलैण्ड और फ्रांसकी सैरें भी की थीं। इन्हीं दिनों अपने मित्रको पत्रमें लिखा था "मैं जानता हूँ कि मैं एक दिन इटलीका मुख्य राज-सचिव हूँगा।"

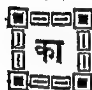
चार्लस एल्बर्टने स्वतन्त्र-राज्य-संस्थाकी स्थापना की, तो समाचार पत्रोंको भी कुछ स्वाधीनता मिली। अवसर अच्छा जान कावूर पीडमौएटकी राजधानी ट्यूरिनमें आगया और वहाँ 'जागृति' के नामसे एक समाचारपत्र निकाल दिया। शीघ्र ही यह पत्र तेज और उदार विचारोंका पक्षपोषक समझा जाने लगा और राजा तथा प्रजा, इसकी शक्तिको मानने लगे।

दूसरा परिच्छेद

राजनीतिके दाँव

"मथर्थं विना स्वप्नेऽपि चेष्टते चाणक्य"

चाणक्य मतलबके विना स्वप्नमें भी नहीं हिलता।


वूर राजनीतिज्ञ था। उसका पेशा ही राजनीति था। राजनीतिके प्रत्येक अंगमें वह चतुर था। मन्त्रिमण्डलमें आनेके कुछ ही देर बाद उसके साथियोंको ज्ञात होने लगा कि "हम किसी ज़बरदस्त प्रवाहमें बह रहे हैं गतिमें स्वतन्त्रता नहीं है।" कावूरकी शक्तिका अन्त नहीं था। स्टीम ऐंजिनकी भाँति वह अर्थ सचिवोंको अपने पीछे घसीटता जाता था।

कावूर मुख्य मन्त्रीका भी अधिक ध्यान नहीं रखता था। किसी प्रस्तावको पास करानेमें बहु सम्मतिका होना आवश्यक है। कावूरने देखा कि मन्त्रिमण्डलके साथ सभाकी अधिक सम्मतियाँ नहीं हैं। सभामें उस समय कई दल थे। कावूरने उन्हीं

मेंसे दलके नेता रैटजीके साथ गुप्त सन्धि कर ली, जिसके द्वारा उस धर्मके लिये दोनों दलोंकी एकता हो गयी। यह प्रबन्ध ऐसी गुप्तरीतिसे किया गया कि मुख्य सचिवको भी पता न लगा। जब एक दिन सभामें विवाद होते २ यह बात अनायास ही प्रकाशित हो गयी तो मुख्य सचिवको बड़ा रोष हुआ। थोड़े ही दिनों बाद कावूरने रैटज़ीको कौंसिलका सभापति चुनवा दिया, इससे उसकी मुख्य सचिवसे और भी बिगड़ गयी। इन दशाओंमें कावूरने त्यागपत्र देना ही उचित समझा।

त्यागपत्र देकर वह इग्लैंड और फ्राँसका दौरा लगाने चला गया। उस दौरेमें उसने इन दोनों देशोंकी राजनीतिक अवस्थाओंका खूब अनुशीलन किया और राजनीतिज्ञोंसे भी भेंट की। इस दौरेने उसके विचारोंको और भी विस्तृत और उदार कर दिया।

जब कावूर दौरेसे लौटा तो एजग्लिओका मन्त्रिमण्डल डाँवाडोल हो रहा था। वह युद्धमें लगे हुए एक घावसे पीड़ित हो रहा था। राजाको उसने यही सलाह दी कि कावूरको मन्त्रिमण्डल बनानेके लिये कहा जाय। कावूरको इन्कार करनेकी आवश्यकता न थी।

इस समय उस राजनीतिक जीवनका प्रारम्भ हुआ जो वर्षों तक इटलीवासियोंकी आशाओंका केन्द्र रहा, जिसे प्रजा



" मैं इटलीके लिये क्या कर सकता हूँ " बातचीत होती रही और मेल बढता गया, अन्तको १८५८ ई० में वह दिन आगया जब आश्चर्यित संसारने सुना कि पीडमौएट और आस्ट्रियामें युद्ध होगा और फ्रांस पीडमौएटकी सहायता करेगा।

जिस दिनसे कावूरने राज्यकी बागडोर ली थी, उस दिनसे वह इसी युद्धकी तैय्यारियाँ कर रहा था। वह मानता था कि इटलीकी सफलताका शत्रु आस्ट्रिया ही है। वह यह भी जान गया कि शीघ्र या विलम्बसे पीडमौएटको आस्ट्रियासे युद्ध करना पडेगा। इसी अवसरके लिये उसने सारी जातिका विश्वास कमाया था, इसी अवसरके लिये उसने क्रीमियन युद्धमें इटलीके सिपाहियोंका व्यय किया था, इसी अवसरके लिये उसने नैपोलियन जैसे अविश्वासपात्र मनुष्यको काबू किया था। अवसर समीप आया जान, कावूरने एक ऐसा काम किया जिसने देशभक्त इटालियनोंके हृदयोंको एक दम जीत लिया। उसने देशभक्तोंके शिरोमणि नरकेसरी गेरीवाल्डीको बुलाया और उसे एक सेनापतिका पद पीडमौएटकी सेनामें दिया।

युद्धके लिये दोनों ही उतावले थे। सार्डीनिया चाहता था कि जितना शीघ्र हो सके, आस्ट्रियाके पंजेसे इटलीको छुडावें, और आस्ट्रिया चाहता था कि यथा सम्भव जल्दी इस नये उठते हुए शत्रुका मानमर्दन किया जाय। भूखे बाघोंकी

ण्याई दोनों ही देश एक दूसरे पर टूट पडे। अकेला सार्डीनिया आस्ट्रियाके सामने निर्बल होता, परन्तु फ्रासकी सेनाओंके साथ मिलकर इटालियन वीर आस्ट्रियाको पराजित करनेके लिये तैयार हुए।

युद्ध पहले दिनसे ही आस्ट्रियाके विपरीत पड़ने लगा। मित्रदलकी सेना गाँवपर गाँव और नगरपर नगर जीतने लगी। इस जीतमें गेरीवाल्डीके स्वच्छन्द सिपाहियोंका भी बडा हाथ था। वे अपनी शेष सेनासे एक या दो पडाव आगे रहते थे। अभी आस्ट्रियाके सेनापति सुदूरवर्ती शत्रुसैन्यके समाचार ही सुन पाते थे, कि गेरीवाल्डीके सैनिक उनकी सेनापर छापा जा मारते थे। जहाँ शत्रुको शत्रुकी बू भी नहीं आती थी वहाँ गेरीवाल्डीके भाले आ चमक्ते थे।

दो बडे २ युद्ध हुए, उनमें मित्र दलको विजय प्राप्त हुई। सोलफरीनोंके युद्धमें स्वय आस्ट्रियाका सम्राट आया था, परन्तु कुछ न कर सका। उसके आगे देखनेमें मित्रोंका मार्ग निष्कण्टक प्रतीत होता था। इटालियन देशभक्त समझ रहे थे कि अब शीघ्र ही इटलीका शेष भाग आस्ट्रियाके पञ्जेसे छूट जायगा। परन्तु तीसरे नैपोलियनके दिलका हिसाब किसीने नहीं लगाया था। न जाने उसके हृदयमें क्या भाव घूम रहे थे। वह इटलीको स्वतन्त्र नहीं करना चाहता, केवल अपने गौरवका सिक्का जमाना चाहता था। इस अन्तिम विजयके पीछे

विस्मित यूरोपने सुना कि नैपोलियनने युद्ध बन्द कर दिया है और शान्तिकी शर्तें तय करनेके लिये आस्ट्रियाके सम्राटको निमन्त्रण दिया है। विजयके समयमें यह युद्धावसान कैसा? और अभी आस्ट्रियाकी सेनाएँ इटलीकी भूमिसे तो नहीं हटीं, फिर शान्ति कैसी? सबके सामने यही प्रश्न घूमने लगे।

सार्डीनियाकी सलाह भी नहीं ली गयी और फ्रांस तथा आस्ट्रियाके सम्राटोंने सन्धि भी कर ली। सन्धिकी शर्तोंसे इटलीकी स्वतन्त्रता एक कदम भी आगे नहीं बढ़ी। इटलीवासियोंने युद्ध इस लिये प्रारम्भ किया था कि हमारा देश स्वतन्त्र होगा, किन्तु नौका मँझधारमें ही रह गयी। देशभक्तोंने निराश होकर देखा कि उनके सिपाहियों और पैसोंका व्यय व्यर्थ ही हुआ। कावूरका जो कार्य प्रारम्भमें ऐसा सफल होता प्रतीत होता था, वह एक सम्राट्की विश्वास-घातितासे केवल चनेके कूदनेके समान निरर्थक और साहस-मात्र प्रतीत होने लगा। लेनेके देने पड़ गये। विक्टर इम्मैनुअल और कावूर लज्जित हुए और गेरीवाल्डी जैसे देशभक्त झूठे राजाओं और विश्वासघाती सम्राटोंको भूमण्डलसे नाम शेष कर देनेकी प्रतिज्ञा करने लगे।



तीसरा परिच्छेद

कल्पनाशक्तिसे भी दूर

"तत्सम केनचिल्लोके न दृष्ट नापि च श्रुतम्"

उसके समान संसारमें न किसीने देखा और न सुना।

अब हम गेरीवाल्डीके जीवनको उस घटनाका वर्णन करते हैं, जो कल्पना शक्तिकी दौड़से भी दूर है। गुरु गोविन्दसिंहने कहा था कि वह एकको लाखसे लड़ा सकता है। गेरीवाल्डीमें भी यही शक्ति विद्यमान थी। वह बालकको युवासे और युवाको सेनासे भिड़ा सकता था। उसने अब तक कई काम किये, जो विचित्र थे, परन्तु उनमेंसे कोई भी ऐसा अद्भुत न था, जैसा अब प्रारम्भ होता है। उस समय के लोग प्रारम्भमें इस कार्यको मूर्खता या जल्दबाजी कहते थे, आज हम उसे साहस और धीरताकी पराकाष्ठा समझते हैं।



कार्य क्या था ? पीडमौण्टने फ्रांसकी सहायतासे युद्ध किया, गेरीवाल्डीने एल्प्स पहाड़के शिकारियोंकी सहायतासे शत्रुके दाँत खूब खट्टे किये, और इटालियन वीरोंने वीरताके नमूने दिखाये, किन्तु तीसरे नेपोलियनकी विश्वासघातिताने सारी शूरता और सारे स्वार्थत्यागपर पानी फेर दिया। इटली निराश और थकी हुई सी दशामें होकर उदास हो गया। लोगोंकी हिम्मतें टूटने लगीं। इस घटनाके पीछे एक दूसरी घटना हुई। नेपोलियनके साथ सुलहनामा करके कावूरने मध्य इटलीका बहुत सा भाग पीडमौण्ट राज्यके साथ मिला लिया, परन्तु उसके बदलेमें सैवाय और नाईस नामके दो नगर फ्रांसको दे दिये। गेरीवाल्डी नाईसका रहने वाला था। इस सौदेसे गहरा खेद हुआ। कावूरको इटलीके नगर फ्रांस को दे देनेका क्या अधिकार था ? सारा देश इस घटना से विचलित सा हो गया। गेरीवाल्डीके चित्तमें दिन प्रतिदिन निश्चय होने लगा कि इटलीकी स्वतन्त्रताका यह मार्ग नहीं है। इस तरह धीरे २ राजनीतिकी चालोंसे प्यारा देश अत्याचारियोंसे न छूटेगा। कार्यसिद्धिके लिये कुछ और भी चाहिये।

इटलीके दक्षिणमें सिसली नामका एक द्वीप है। वह उस समय नेपल्सके बोरबौन वंशीय राजाके अधीन था। नेपल्सका अपना राज्य भी इटलीके दक्षिण भागमें था, और

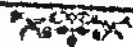


काफी बडा था। इस समयका नेपल्सका राजा फ्रांसिस आदर्श अनुदार राजा था। उसकी न प्रजासे कोई सहानुभूति थी और न वह कोई सहानुभूति चाहता था। घोरचीन राजाओंके दिमाग पत्थरके बने होते हैं, उनपर बाहर की छोटी मोटी चोटका कोई असर नहीं होता। हाँ जब कोई बडी सी जबर्दस्त चोट लगे तो उनपर प्रभाव होता है, और प्रभाव भी ऐसा वैसा नहीं, पत्थरके टुकडे २ हो जाते हैं। राजा फ्रांसिसपर भी इटलीमें बहती हुई स्वाधीनताकी लहरोंका कोई असर नहीं हुआ था। उसकी प्रजा विदेशी अत्याचारके नीचे कराह रही थी, सारे इटली देश और यूरोपके कान नेपल्ससे उठते हुए आर्तनादकी ओर लगे हुए थे, किन्तु मन चार्लस न हिलता था, न डोलता था, बस, पोपके चरणोंमें सिर नवाकर अपने आपको सुरक्षित समझ रहा था और सुखकी नींद सोता था।

अचानक उसकी सुख नींद टूट गयी। जो समाचार उसने सुना, उसपर पहले विश्वास न किया। समाचार यह था कि गेरीबाल्डी केवल एक हज़ार सेना लेकर सिसिलीके किनारेपर आ उतरा है। फ्रांसिसके पास हजारों फौजें थीं, सैकडों तोपें थीं, बडा भारी जहाजी बेडा था और भरा हुआ ख़जाना था। यह निर्धन सिपाही केवल एक हजार सिपाहियोंको लेकर सिसिलीमें क्या कर सकेगा? अवश्य ही यह समाचार झूठा है। ज़रूर ही समाचार भेजने वालोंने धोखा दिया है।

कार्य क्या था ? पीडमौण्टने फ्रांसकी सहायतासे युद्ध किया, गेरीवाल्डीने एल्प्स पहाडके शिकारियोंकी सहायतासे शत्रुके दाँत खूब खट्टे किये, और इटालियन वीरोंने वीरताके नमूने दिखाये, किन्तु तीसरे नेपोलियनकी विश्वासघातिताने सारी शूरता और सारे स्वार्थत्यागपर पानी फेर दिया। इटली निराश और थकी हुई सी दशामें होकर उदास हो गया। लोगोंकी हिम्मतें टूटने लगीं। इस घटनाके पीछे एक दूसरी घटना हुई। नेपोलियनके साथ सुलहनामा करके कावूरने मध्य इटलीका बहुत सा भाग पीडमौण्ट राज्यके साथ मिला लिया, परन्तु उसके बदलेमें सैवाय और नाईस नामके दो नगर फ्रांसको दे दिये। गेरीवाल्डी नाईसका रहने वाला था। इस सौदेसे गहरा खेद हुआ। कावूरकोइटलीके नगर, फ्रांस को दे देनेका क्या अधिकार था ? सारा देश इस घटना से विचलित सा हो गया। गेरीवाल्डीके चित्तमें दिन प्रतिदिन निश्चय होने लगा कि इटलीकी स्वतन्त्रताका यह मार्ग नहीं है। इस तरह धीरे २ राजनीतिकी चालोंसे प्यारा देश अत्याचारियोंसे न छूटेगा। कार्यसिद्धिके लिये कुछ और भी चाहिये।

इटलीके दक्षिणमें सिसली नामका एक द्वीप है। वह उस समय नेपल्सके बोरबौन वंशीय राजाके अधीन था। नेपल्सका अपना राज्य भी इटलीके दक्षिण भागमें था, और



हथियार लो ! और अत्याचारीको मार भगाओ"। नित्यप्रति सिसिलीनिवासी गेरीबाल्डीकी सेनामें भर्ती होनेके लिये आने लगे।

दोनों सेनाओंकी मुठभेड़ कलाराफोमी नामके गाँवमें १५ मईको हुई। प्रारम्भमें प्रतीत होता था कि देशभक्तोंका दल ऐसे पिघल जायगा, जैसे धूपके आनेपर बर्फ पिघल जाती है। शत्रुकी सेना कमसे कम चार हजार थी, गेरीबाल्डीके बहादुर एक हजार थे। मैदान साफ था, इसलिये किसी विशेष चतुराईके लिये अवसर नहीं था। गेरीबाल्डीके लिये एकही रास्ता खुला था। वह रास्ता सीधे वार का रास्ता था। देशभक्त शेरोंका दल सगीनकी मारसे दुश्मनकी कतार काटकर पालेमोकी ओर बढ़ सकता था, इसके बिना नहीं। सीधेकी लड़ाईमें संख्या बड़ी चीज होती है। जब मरने मारनेका ही प्रश्न हो तो फिर चार जने एकको मार ही सकते हैं। देशभक्त मरने लगे, पर रास्ता निकलता नजर न आया। गेरीबाल्डीके महारथियोंमें से एक बिक्सियो भी था। बिक्सियो युद्धके आरम्भसे ही घनी मारकाटमें लड़ रहा था, ऐसा पेचदार मामला देखकर वह गेरीबाल्डीके पास आया और कहने लगा—"सेनापते ! शायद हमें पीछे हटना पड़े"।

ये शब्द गेरीबाल्डीके कानोंमें तीरकी तरह लगे। उसने बिक्सियोको ऊपरसे नीचे तक देखा, और थोड़ी देर तक

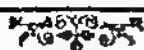
किन्तु लोग धोखा देनेपर तुले हुए हैं। नित्य ऐसे ही अविश्वसनीय समाचार राजाके पास पहुँचने लगे। ११ मई (१८६०) को गेरीवाल्डी मसीला नामक नगरमें आ उतरा। किसीको सपना भी नहीं था कि वह सिसिलीपर आक्रमण करना चाहता है। जब यह विचित्र समाचार यूरोपमें फैला तो पहले किसीको विश्वास न हुआ। जब विश्वास हुआ तो सबने वीर गेरीवाल्डीकी मूर्खतापर सर्द आह भरी, और समझा कि अब शीघ्र ही उसका अन्त हो जायगा। भला इस दुस्साहस का भी कहीं ठिकाना है?

धीरे २ नये समाचार आने लगे और लोगोंको विस्मयमें डालने लगे। फ्रांसिसने और सारे यूरोपने शीघ्र ही सुना कि गेरीवाल्डीने सिसिलीकी राजधानी पालेमोंकी ओर पयान किया है। द्वीपमें नेपल्सके कमसे कम ५० हजार सिपाही थे। द्वीपमें आनेके समय गेरीवाल्डीके साथ केवल एक हजार सिपाही थे। द्वीपपर पहुँचते ही उसने वहाँके निवासियोंके नाम घोषणापत्र जारी किये। घोषणापत्रोंमें गेरीवाल्डीने सिसिलीवासियोंको बतलाया कि वह उन्हें अत्याचारीके फन्देसे छुड़ाकर आदर्श इटालियन राजा विक्टर इम्मैनुअलके सुपुर्द करने आया है। विक्टर इम्मैनुअल इटलीका भावी राजा होगा, सिसिली सारे देशसे मिलकर उसीके अधीन होगा। उसके घोषणापत्रोंकी टेक यही थी कि 'हथियार लो! हथियार लो!

हथियार लो ! और अत्याचारीको मार भगाओ'। नित्यप्रति सिसिलीनियासी गेरीवाल्डीकी सेनामें भर्ती होनेके लिये आने लगे।

दोनों सेनाओंकी मुठभेड़ कलाराफीमी नामके गाँवमें १५ मईको हुई। प्रारम्भमें प्रतीत होता था कि देशभक्तोंका दल ऐसे पिघल जायगा, जैसे धूपके आनेपर बर्फ पिघल जाती है। शत्रुकी सेना कमसे कम चार हजार थी, गेरीवाल्डीके बहादुर एक हज़ार थे। मैदान साफ था, इसलिये किसी विशेष चतुराईके लिये अवसर नहीं था। गेरीवाल्डीके लिये एकही रास्ता खुला था। वह रास्ता सीधे मार का रास्ता था। देशभक्त शेरोंका दल सगीनकी मारसे दुश्मनकी कतार काटकर पालेमोकी ओर बढ़ सकता था, इसके बिना नहीं। सीधेकी लड़ाईमें संख्या बड़ी चीज होती है। जब मरने मारनेका ही प्रश्न हो तो फिर चार जने एकको मार ही सकते हैं। देशभक्त मरने लगे, पर रास्ता निकलता नजर न आया। गेरीवाल्डीके महारथियोंमें से एक बिक्सियो भी था। बिक्सियो युद्धके आरम्भसे ही घनी मारकाटमें लड़ रहा था, ऐसा पेचदार मामला देखकर वह गेरीवाल्डीके पास आया और कहने लगा—"सेनापते ! शायद हमें पीछे हटना पड़े"।

ये शब्द गेरीवाल्डीके कानोंमें तीरकी तरह लगे। उसने बिक्सियोको ऊपरसे नीचे तक देखा, और थोड़ी देर तक



लिये ढूँढनेपर भी असम्भव प्रतीत होने लगा। राजा फ्रांसिस की सेनामें भाजड पड गयी। ग्राम और नगर सहज ही में वशीभूत होने लगे।

ये सब समाचार जब नेपल्सके राजाके पास पहुँचे तो वह किंकर्तव्य-विमूढ होगया। अकस्मात् उसने क्या सुना कि गेरीवाल्डीकी सेनाएँ नेपल्सके बहुत पास ही हैं। अभी यह समाचार उसकी समझमें भी नहीं आया था कि उसे दूसरा समाचार मिला कि गेरीवाल्डी राजधानीमें प्रविष्ट होगया है। अत्याचारी कायर हुआ ही करते हैं। कायर फ्रांसिसने घबरा कर अपने मन्त्रियोंसे पूँछा कि 'मेरे सिपाही मुझे त्याग कर दुश्मनसे क्यों मिल रहे हे? उन्होंने मेरे लिये लडनेकी प्रतिज्ञा की थी।' मन्त्रियोंने उत्तर दिया कि यह सारा दोष उस मनुष्योंके जादूगर गेरीवाल्डीका है, उसका जादू जिसपर चल जाता है वह अपना मालिक नहीं रहता। राजाने जब देखा कि न वह अपनी प्रजापर भरोसा कर सकता हे और न सेनापर तब उदारताका ढोंग रचने, लगा। कभी स्वतन्त्रता-पूर्ण राज्यसस्था देनेकी घोषणा देने लगा। और कभी अनुदार मन्त्रिमण्डलके परिवर्तनका प्रसन्नता-दायक समाचार देशमें घुमाने लगा। पर यह सब कुछ पानीपर लकीर डालने के समान व्यर्थ हुआ। जिसने दसवार प्रतिज्ञा भग की हो, उसकी प्रतिज्ञापर कौन विश्वास कर सकता है। प्रजाने

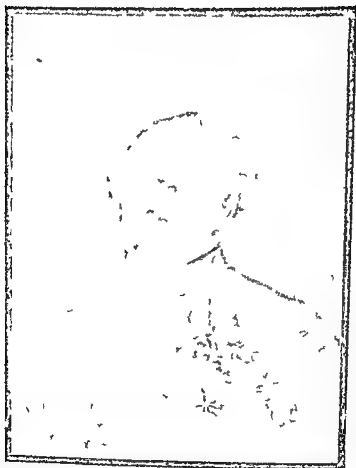


महावीर गेगीवारडी



नीति धुरन्धर–क़ानूर





वीर छत्रपति राजा विक्टर इम्मैनुअल

तांसिसकी घोषणाओंका उस कागज जितना भी मूल्य नहीं समझा, जिनपर वे लिखी हुई थीं।

गेरीबाल्डी राजधानीमें घुसेगा। यह समाचार नगरमें पहले ही फैल चुका था। लोग पापोंके काटनेवाले देवताके देखनेकी आशा और प्रतीक्षामें टकटकी लगाये हुए थे। उस दिन घर घरमें विवाहोत्सव प्रतीत होता था। नगरवासियोंके गृहोंके द्वार सुन्दर २ वायवों, फूलों, पत्रों और वन्दनवारोंसे खूब सजाये हुए थे। दोपहरके समय जो रेलवे ट्रेन आयी, उसमें गेरीबाल्डीके बहुतसे लाल आफटोंवाले अनुयायी भी आये थे। यह समाचार कानोंकान नगरमें फैल गया। बस फिर क्या था? सारा नगर मानो स्टेशनपर टूट पड़ा। गेरीबाल्डी अपने सिपाहियोंसे भिन्न भेष नहीं पहनता था, जनता उसे ढूंढने लगी। जिसकी आकृति कुछ भी गेरीबाल्डीसे मिलती थी, लोगोंने उसीके गलेमें मालाएँ पहरानी प्रारम्भ की। जोशमें नगरनिवासियोंने उस दिन न जाने कितने गेरीबाल्डी बना दिये। बेचारे सिपाही इन्कार करते २ तंग आगये।

इतनेमें समाचार फैल गया कि गेरीबाल्डी अपने मुख्य अफसरोंके साथ दूसरे द्वारसे नगरमें पहुँच गया है। लोग उधर ही को दौड़े, वहाँ सचमुच ही जनता-लोचन चातकोंका मेघ उमड़ रहा था। गेरीबाल्डी गाडीमें लोगोंके अभिनन्दनों और स्वागतोंका उत्तर देता हुआ आगेको बढ रहा था। लोगोंके

जोशका कोई ठिकाना नहीं था। स्त्रियाँ और पुरुष सब एक ही आवेशसे पूर्ण थे। जिन वृद्धोंकी आँखोंमें शोक और हर्षके जलबिन्दु वर्षोंसे सूख चुके थे, वे मानो कहींसे माँगकर आँसू ले आये। हर्षके आँसू आँख आँखमें दिखाई दे रहे थे। नवयुवकोंका जोश और भी बढ़ा। गेरीवाल्डीकी गाडीके घोडे खोल दिये गये और दर्शकोंने गाडी खींच कर राजकीय भवन तक पहुँचायी।

शामको लोगोंने ऐसा शब्द सुना, मानो कोई सेना नगर से जा रही है, राजा फ्रांसिस वास्तविक नरेशके आनेपर राजधानी छोडकर जा रहा था। राजधानीसे नकली राजा चला गया और उसी समय नेपल्स स्वतन्त्र हो गया। दूसरे दिन राजा विक्टर इम्मैनुअलके नामपर गेरीवाल्डी नेपल्स और सिसिलीका शासक आघोषित होगया।

यूरोपने आश्चर्य भरे हर्षके साथ यह समाचार सुना। फ्रांस और आस्ट्रियाकी छातीपर साँप लोट गया और पीडमौण्टका मुख्य सचिव कावूर सोचने लगा कि अब न जाने आगे क्या होगा। नेपल्सके आगे रोमके पोपका राज्य था। गेरीवाल्डी कई बार घोषणा कर चुका था, कि वह तब तक म्यानमें तलवार नहीं डालेगा जबतक रोमको भी पोपके पंजेसे नहीं छुडा लेगा। सब देशभक्त सेनाके हितैषी रोमकी सीमाको लाँघ जानेके समाचारकी ही प्रतीक्षा कर रहे थे,

परन्तु हितैषियोंको इसमें भय भी था। रोम इस समय फ्रांस और आस्ट्रिया दोनोंकी रक्षामें समझा जाता था। रोमकी सीमामें पाँव रखते ही गेरीवाल्डीको दोनों महाशक्तियोंका सामना करना पड़ेगा। कावूर जानता था कि उस समय सम्भव है, सिसिली और नेपल्स भी हाथसे निकल जावें, इस लिये उसने गेरीवाल्डीकी दिग्विजयको यहीं समाप्त करने का निश्चय किया।

गेरीवाल्डी पहले ही दिनसे विक्टर इम्मैनुअलके नामपर सारा कार्य कर रहा था। उसे समाचार भेजा गया कि राजा विक्टर इम्मैनुअल उससे नेपल्समें मिलनेके लिये आ रहा है। यह सूचना स्वतन्त्रताके दूतके लिये पर्याप्त थी। उसने भी राजाके इस आदेशमें जो आज्ञा भरी हुई थी, उसे सिर झुकाकर स्वीकार किया। नेपल्सम इटलीके भावी राजाके स्वागतकी तय्यारियाँ होने लगीं।

१६ अक्तूबरके दिन गेरीवाल्डीको समाचार मिला कि राजा आ रहा है। गेरीवाल्डी अपने मुख्य २ अफसरोंके साथ राजाका स्वागत करनेके लिये आगे बढ़ा। राजा दूरबीन लगाकर लाल कुर्तीके जवानोंमें उनके नेताको पहिचानता आ रहा था। ज्योंही उसने गेरीवाल्डीको पहिचाना, त्योंही घोड़े को एड़ी लगायी। थोड़ी देरमें दोनों वीर एक दूसरेके सामने पहुँच गये। दोनों ओरके सिपाही एकस्वरसे 'राजा विक्टर

इम्मैनुअलका जयजयकार' पुकार उठे। गेरीवाल्डी एक कदम आगे बढ़ा और उसने अपनी टोपी उठाकर काँपते हुए स्वरमें कहा 'इटलीके राजा' उत्तरमें राजाने टोपी तक हाथ उठाकर गेरीवाल्डीको ओरको बढ़ा दिया और कहा 'धन्यवाद'। दोनं मातृभूमिके भक्तोंके हाथ मिल गये। दोनों के हृदय ही जानं थे कि सच्ची देशभक्तिका आदर किसे कहते हैं।

दूसरे दिन गेरीवाल्डीने नेपल्सका राज्य विक्टर इम्मैनुअल को सौंप दिया और स्वयं छुट्टी चाही। राजाने उसे बहुत मना किया परन्तु उसने यही उत्तर दिया कि इस समय मेरा काम हो चुका, अब मैं जाऊँगा ही। राजाने उसे प्रिंस या कुँवरकी पदवीसे विभूषित करना चाहा, इटलीकी सेनामें पहले मार्शल (सेनानी) का पद देना चाहा और पाँच लाख सालाना भेंट करनी चाही। किन्तु गेरीवाल्डी इन चीजोंका भूखा नहीं था। एक सच्चे राजनीतिक सन्यासीकी भाँति उसने सब चीजोंसे इन्कार कर दिया और केवल अपने कपरेरा द्वीपमें जानेकी छुट्टी माँगी। अन्तमें उ [illegible]
दिलासा अवश्य दिया कि "अब मैं जाता हूँ, [illegible]
पर खतरा होगा तब [illegible] पुराने [illegible]
लिये हाजिर [illegible]

राजनीतिक [illegible] उदाहर [illegible]
उन उदाहरणोंम [illegible] उद [illegible]

है। यह परिच्छेद एक और आवश्यक घटनाका वृत्तान्त लिखे बिना पूरा नहीं हो सकता। अपने भाग्योंका अन्तिम निश्चय करनेके लिये राजधानीसे कुछ दूर नेपल्सके राजाने कैपुआ नामक नगरमें लगभग एक लाख सिपाही एकत्र किये और नेपल्सको फिर वापिस लेनेका निश्चय हुआ। जो युद्ध हुआ, उसमें देशभक्त सेनाका विजय हुआ। नेपल्सके राजाकी सारी सेना कैपुआ नगरमें घिरगयी। इस समय कैपुआ जीतनेका सरल मार्ग यह था कि कैपुआपर गोले बरसाये जाते, किन्तु गेरीबाल्डी इसे स्वीकार नहीं करता था। वह कहता था कि नगरपर गोले बरसानेमें निरपराधी इटालियन भी मरेंगे और मेरे लिये एक भी निरपराधी इटालियनका रुधिर नहीं बह सकता। देर तक वह इसी निश्चयपर जमा रहा, किन्तु नेपल्सकी सेनाके सेनापतिकी ढिठाईने कोई और मार्ग ही न देखा। आखिर नगरपर गोले बरसाने पड़े, किन्तु उस दिन गेरीबाल्डीका चित्त अन्दर ही अन्दर रोता रहा। वह खिड़कीमेंसे जलते हुए कैपुआ नगरको देखकर सर्द आहें भरता रहा। अन्तको कैपुआसे तो सफेद झण्डा खड़ा हो ही गया, परन्तु गेरीबाल्डीके हृदयमें भी बड़ा गहरा घाव लगा।





अपमान और मानके दृश्य

" ज्ञातयो नो भयावहा ।"

हमें अपने जातिवालोंसे ही भय है ।

कपरेरामें पहुँचकर गेरीवाल्डीने विचित्र दृश्य देखा। वह द्वीपको पथरीले जंगलके रूपमें छोड गया था, अब उसके स्थानमें रम्य नन्दन-वन दिखाई देता था। जहाँ वह केवल झोपडी छोड गया था, वहाँ आराम देने वाला बँगला खडा था। द्वीपकी काया ही पलट गयी थी। गेरीवाल्डी यह परिवर्तन देखकर बडा आश्चर्यित हुआ और उस मित्रकी ढूँढ करने लगा, जिसके प्रेमका सारा नमूना था। उसे अधिक नहीं ढूँढना पडा। बीचके बडे कमरेमें पहुँचकर देखा तो सामने राजा विकृर इम्मैनुअलका एक बडा चित्र लटक रहा है। समस्या हल हो गयी। उसे ज्ञात हो गया कि राजा का उससे कितना प्रेम है।



वह नहीं सह सका। यह ठीक था कि राजनीतिक दृष्टिसे रोम-पर आक्रमण करना बुद्धिमत्ताका कार्य नहीं था। गेरीवाल्डी और उसके स्वयंसेवक मिलकर फ्रांस और आस्ट्रियासे नहीं लड सकते थे, किन्तु गेरीवाल्डीकी विशेषता यह थी कि वह राजनीतिसे ऊपर उठा हुआ था। रोम स्वतन्त्र होना चाहिये, बस, इतना उसके लिये पर्याप्त था, आगेका ईश्वर स्वामी है। गेरीवाल्डीको अपनी स्वयंसेवक सेनापर इतना विश्वास था कि वह उनकी सहायतासे फ्रांस और आस्ट्रियाकी सम्मिलित शक्तिको पराजित करना एक साधारण बात समझता था। पाठको! गेरीवाल्डीके कामको आप साहसिक कार्य कहें तो कहें-अचिन्तित कार्य कहें तो कहें, परन्तु इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि उसका कार्य एक वीर, एक ईश्वरविश्वासी और एक मनुष्यके योग्य कार्य था, मूर्खताका नहीं।

उसने घोषणा कर दी, और हजारों स्वसेवक इटलीके नगरों और ग्रामोंसे इकट्ठे होने लगे। शीघ्र ही हजारोंकी स्वाधीनता-सेना एकत्र हो गयी। पुरानी ही रीतिके अनुसार गेरीवाल्डी सिसिली पहुँचा और वहाँ प्रजाके स्वागतों और अभिनन्दोंके उचित उत्तर देता हुआ आगे बढ़ने लगा। यह समाचार यूरोपमें बिजलीकी तरह फैल गया। फ्रांस-आस्ट्रिया और पीडमौण्टकी राजधानियोंमें सनसनी फैल गयी। इनके राजमन्त्रियोंमें तार दौडने लगे। विक्टर इमैनुअल अपने आपको



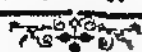
हुआ पर निराशा नहीं हुई। वह पीडमौण्टकी सेनासे झगड़ना नहीं चाहता था। उसने यही निश्चय किया कि उसके स्वयसेवक आँख बचाकर निकल जायँ। राजकीय सेनाएँ सीधे रास्तेपर उसका पीछा कर रही थीं, गेरीवाल्डी ने पहाड़ोंका रास्ता पकड़ लिया। राजकीय-सेनाओंने वहाँ भी उसका पीछा किया। गेरीवाल्डीकी सेनाएँ एस्प्रोमौण्ट नामके ऊचे भूतलपर पडी हुई थीं। वहाँ समाचार मिला कि राजकीय सेनाएँ आरही हैं। अब बिना इन सेनाओंको मिले निकल जाना कठिन था। सेनापतिने अब राजकीय सेनाओंकी प्रतीक्षा करने का ही विचार किया। अपनी सारी सेनाको उसने आज्ञा दी कि कोई गोली न चलावे। राजकीय सेनाएँ बन्दूकें ताने हुए उसकी ओर बढने लगीं और स्वयसेवकदलको घेरने लगीं। तब भी गेरीवाल्डी शान्त भावसे खडा रहा और यही आज्ञा देता गया कि 'गोली मत चलाओ, गोली मत चलाओ, इतनेमें राजकीय सेनाओंने गोलियाँ चलानी प्रारम्भ कीं। गेरीवाल्डीने फिर पुकार कर कहा— 'मेरे सिपाहियो! गोली मत चलाओ' इतनेमें दो गोलियाँ आकर उसकी टाँगोमें लगीं। चोटसे वह गिरा नहीं, परन्तु अपने आपको ऊँचा करके, टोपी उतार कर फिर उसने कहा कि 'इटली दीर्घायु हो। कोई गोली मत चलाना' उसके कई साथियोंने उसे सहारा देकर एक वृक्षके नीचे बैठाया।

उसे वहाँ बैठे देर न हुई थी कि उसका पुत्र मोनही भी एक गोली की चोट खाकर लेट गया। फिर भी गेरीवाल्डीकी वही आज्ञा रही कि 'गोली मत चलाओ'। विधाता की माया देखिये। जिस गेरीवाल्डीने राजा विक्टर इम्मेनुअलको गत वर्ष दो देश जीत कर दिये, वह आज उसीके सिपाहियोंकी गोलीसे आहत होकर शय्या-शायी हुआ।

राजाकी आज्ञाके अनुसार सब स्वयंसेवकोंके हथियार ले लिये गए और वह गेरीवाल्डी जिसे दस गुने शत्रुभी नीचा नहीं दिखा सकते थे, विना वार किये अपने देशवासियोंके हाथ कैदी हो गया

यह समाचार वायु वेगसे दिग्दिगन्तरोंमें फैल गया। गेरीवाल्डी इटलीमें ही नहीं, सारे यूरोपमें पूजा जाता था, उसके कैदी और घायल होनेके समाचारने यूरोपको कँपा दिया। इङ्गलैण्ड, फ्रांस और इटलीके बड़े २ डाक्टर बिना बुलाये ही घाव देखनेके लिये पहुँचने लगे। सारे इटली देशमें तो मानो भूकम्प आ गया। जहाँसे कैदी गेरीवाल्डीकी सवारी निकलती थी वहाँ गलियाँ और सड़कें निवासियोंसे भरी नजर आती थीं। ग्राम २ और नगर २ में पीडमोण्टके इस कामसे असन्तोष प्रकट करनेके लिये सभाएँ होने लगीं।

घाव पहले बहुत भयंकर जान पड़ता था। गोलीको टटोलना कठिन प्रतीत होता था। बहुत परिश्रमसे डाक्टर



लोगोंने उसे निकाला और हमारे नायककी तबीअत अच्छी होने लगी। लोगोंके असन्तोष और विरुद्ध मतसे डर कर पीडमौएटकी सरकारको रोमके आक्रमणमें योग देनेवाले सब स्वयंसेवकोंको क्षमा करनी पड़ी। उस क्षमाके अनुसार गेरीवाल्डीभी कारागारसे मुक्त हो गया। ऐसा कठिन क़ैदी शायद आज तक किसी सरकारने नहीं-किया होगा। देशभक्त क़ैद हो, और वहभी देशभक्त द्वारा। फिर क़ैदी भी कैसा? जिसके नाम पर हजारों लोग जान देनेको तय्यार हों। इस क़ैदीको छोड़ कर सचमुच पीडमौएटकी सरकारने अपने आपको धन्य माना। यह घटना १८६२ में हुई।



जीवनके अन्तिम दृश्य और दीप निर्वाण

"निर्वातमुवातलम्"

पृथ्वी वीर शून्य हो गयी।



इस घटनासे यूरोपमें गेरीबाल्डीका गौरव कुछ कम हुआ? कई लेखकोंका ऐसा विचार है, किन्तु वह अशुद्ध विचार है। इस दुर्घटनाने उसे लोकमतमें और भी ऊंचा चढा दिया, प्रजाके चित्तमें उसके लिये प्रेमभाव और भी बढ़ा दिया। केवल इटलीमें ही नहीं, अन्य देशोंमें उसकी स्वर्गीय देवताकी भाँति पूजा होने लगी।

इस पूजा मात्रकी परीक्षाका समय भी शीघ्र ही आ गया। १८६४ की वसन्त ऋतुमें बहुतसे मित्रोंकी सलाहसे गेरीबाल्डीने इङ्गलैण्डकी यात्राका विचार किया। वह यात्रा मानो विजय की सवारी थी। गेरीबाल्डी अब साधारण पुरुष नहीं समझा



जाता था। वह सभ्य-संसारमें देशभक्ति, स्वतन्त्रता, शुद्धता और साहसका आदर्श समझा जाता था। सारा देश उसका स्वागत करनेके लिये तय्यार हो गया। जिन्होंने गेरीबाल्डीका इङ्गलैण्डमें और विशेषतया लन्दनमें स्वागत देखा, वे लिखते हैं कि ऐसा समारोह किसी राजा महाराजाके स्वागतमें नहीं देखा गया। जवान और बूढे, पुरुष और स्त्री, सभी उस स्वागतमें भाग लेते थे। प्रातःकालसे सायकाल तक इटलीके स्वतन्त्रता-दाताका समय अभिनन्दन पत्र लेने और उनके उत्तर देनेमें बीत जाता था। लोगोंके जोशोंका कोई ठिकाना न था।

गेरीवाल्डीका पहले विचार था कि वह सारे देशमें दौरा लगावे, किन्तु इस समय अंग्रेजी-सरकार उसके इस शानदार स्वागतसे घबरा गयी। सरकारको यह भी भय हुआ कि शायद कोई राजनीतिक दल गेरीवाल्डीके नामका फायदा उठाना चाहता है। चुपकेसे गेरीवाल्डीको सुझा दिया गया कि वह अपना दौरा बन्द करदे तो अच्छा है।

उसे यह सलाह नापसन्द नहीं थी। उसका स्वास्थ्य अब दिनों दिन अवनतिपर था। पिछले दिनोंके कष्टों और उपवासोंका प्रभाव शरीरपर अब पड़ने लगा था। इङ्गलैण्डमें अभिनन्दनोंकी भरमारके मारे वह तंग हो रहा था। सरकारको इस सूचनाको उसने अपने लिये पुण्यागत समझा, और बीचमें ही यात्रा छोड़कर कपरराकी ओर प्रयाण कर दिया।

यहाँ जाकर गेरीबाल्डीको सेहत ठीक करनेके लिये बहुत समय लगा। उसका स्वास्थ्य बहुत ही गिर गया था। वर्ष का अन्त होते होते उसका स्वास्थ्य ठीक हो गया। कुछ दिनों फिर इटलीके जीवनमें समय आया जब जातिको गेरीबाल्डीकी आवश्यकता हुई। १८६६ का जर्मनी और आस्ट्रियाका युद्ध प्रसिद्ध है। इस युद्धमें प्रशियाकी सेनाओंने आस्ट्रियाका मान मर्दन करके जर्मन-साम्राज्यकी नींव डाली थी। इटलीने प्रारम्भसे ही प्रशियाका पक्ष लिया था। युद्ध प्रारम्भ होनेपर राजा विक्टर इम्मेनुअलने गेरीबाल्डीको बुलाया और एक बृहती सेना देकर आस्ट्रियापर धावा करनेके लिये रवाना किया। यह युद्ध पूर्व युद्धों जैसा नहीं था। इसमें गेरीबाल्डीकी नयी बनी हुई स्वयंसेवक सेनाओंको आस्ट्रिया की सुशिक्षित-सेनाओंका सामना करना था। कार्यक्रम ऐसा बनाया गया था कि आस्ट्रियापर जल और स्थल दोनों भागोंसे धावा किया जाय। धावा किया गया, परन्तु जलीय धावेको भारी अकृतकार्यता हुई। इस अकृतकार्यताने स्थलीय धावेपर भी प्रभाव डाला और गेरीबाल्डीको इस धावेमें सफलता न हुई। उसके एक और घाव लग गया, उसने भी युद्धकी सफलतामें रुकावट डाली।

गेरीबाल्डीको कृतकार्यता न हुई, परन्तु इटलीका कार्य सिद्ध होगया। प्रशियाने सेडोवाके मैदानमें आस्ट्रियाको



जाता था। वह सभ्य-संसारमें देशभक्ति, स्वतन्त्रता, शुद्धता और साहसका आदर्श समझा जाता था। सारा देश उसका स्वागत करनेके लिये तय्यार हो गया। जिन्होंने गेरीबाल्डीका इङ्गलैण्डमें और विशेषतया लन्दनमें स्वागत देखा, वे लिखते हैं कि ऐसा समारोह किसी राजा महाराजाके स्वागतमें नहीं देखा गया। जवान और बूढ़े, पुरुष और स्त्री, सभी उस स्वागतमें भाग लेते थे। प्रातःकालसे सायंकाल तक इटलीके स्वतन्त्रता-दाताका समय अभिनन्दन पत्र लेने और उनके उत्तर देनेमें बीत जाता था। लोगोंके जोशोंका कोई ठिकाना न था।

गेरीबाल्डीका पहले विचार था कि वह सारे देशमें दौरा लगावे, किन्तु इस समय अंग्रेजी-सरकार उसके इस शानदार स्वागतसे घबरा गयी। सरकारको यह भी भय हुआ कि शायद कोई राजनीतिक दल गेरीबाल्डीके नामका फायदा उठाना चाहता है। चुपकेसे गेरीबाल्डीको सुझा दिया गया कि वह अपना दौरा बन्द करदे तो अच्छा है।

उसे यह सलाह नापसन्द नहीं थी। उसका स्वास्थ्य अब दिनों दिन अवनतिपर था। पिछले दिनोंके कष्टों और उपवासोंका प्रभाव शरीरपर अब पड़ने लगा था। इङ्गलैण्डमें अभिनन्दनोंकी भरमारके मारे वह तंग हो रहा था। सरकारकी इस सूचनाको उसने अपने लिये पुण्यागत समझा, और बीचमें ही यात्रा छोड़कर कपरराकी ओर प्रयाण कर दिया।

यहाँ आकर गेरीबाल्डीको सेहत ठीक करनेके लिए बहुत समय लगा। उसका स्वास्थ्य बहुत ही गिर गया था। वर्ष का अन्त होते होते उसका स्वास्थ्य ठीक हो गया। कुछ दिनों फिर इटलीके जीवनमें समय आया जब आनिको गेरीबाल्डीकी आवश्यकता हुई। १८६६ का,जर्मनी और आस्ट्रियाका युद्ध प्रसिद्ध है। इस युद्धमें प्रशियाकी सेनाओंने आस्ट्रियाका मान मर्दन करके जर्मन-साम्राज्यकी नींव डाली थी। इटलीने प्रारम्भसे ही प्रशियाका पक्ष लिया था। युद्ध प्रारम्भ होनेपर राजा विक्टर इम्मैनुअलने गेरीबाल्डीको बुलाया और एक बृहती सेना देकर आस्ट्रियापर धावा करनेके लिये रवाना किया। यह युद्ध पूर्व युद्धों जैसा नहीं था। इसमें गेरीबाल्डीकी नयी बनी हुई स्वयंसेवक सेनाओंको आस्ट्रिया की सुशिक्षित-सेनाओंका सामना करना था। कार्यक्रम ऐसा बनाया गया था कि आस्ट्रियापर जल और स्थल दोनों मार्गोंसे धावा किया जाय। धावा किया गया, परन्तु जलीय धावेको भारी अकृतकार्यता हुई। इस अकृतकार्यताने स्थलीय धावेपर भी प्रभाव डाला और गेरीबाल्डीको इस धावेमें सफलता न हुई। उसके एक और घाव लग गया, उसने भी युद्धकी सफलतामें रुकावट डाली।



ऐसा पछाडा कि आस्ट्रियाको जर्मनीकी गद्दी तो छोडनी ही पड़ी, साथ वेनिस भी इटलीको वापिस देना पडा।

इस लडाईमें गेरीवाल्डीकी असफलताका कारण क्या था? कारण यह था कि शेरको जञ्जीरोंमें बांधकर हिरनोंपर छोडा गया था। अबतक गेरीवाल्डी हमेशा स्वतन्त्रतासे युद्ध करता रहा था। यह पहला ही अवसर था कि उसे युद्ध विभागके मन्त्रीकी आज्ञामें रहकर युद्ध करना पडा। वह अपनी इच्छाके अनुसार काम नहीं कर सकता था। वह एक नगरकी ओर बढता था, तो मन्त्रीकी आज्ञा उसे दूसरी ओर भगा देती थी। वह आक्रमण करना चाहता था, तो युद्ध सचिव उसके रक्षापरक होनेका निर्देश करता था। इस पराधीनतामें स्वतन्त्रतासे लडना गेरीवाल्डीके लिये सम्भव नहीं था। और सेनापति गेरीवाल्डीसे ईर्ष्या करते थे और उसके सिपाहियोंके भोजनादि तकका प्रबन्ध अच्छी तरह नहीं किया गया था।

इस युद्धके पीछे कुछ दिन विश्राम करके अनथक गेरीवाल्डी नयी धुनमें मस्त हो गया। उसका पुराना रोमका सपना जाग उठा और बहुत सी स्वयसेवक-सेना तय्यार करके उसने १८६७ में रोमपर धावा करनेका विचार किया। गेरीवाल्डीके आह्वानपर सहस्रों इटालियन वीर एकत्र होने लगे। रोमका नाम इटलीके देशभक्तोंके लिये जादूका असर रखता था। उसके पानेके लिये वीरोंकी भुजाएँ फडक उठती

तीं। इतना ही नहीं कि केवल आवेश मात्र था, राजनीतिक रिणामोंकी दृष्टिसे भी रोमका शेष इटलीसे मिलना आवश्यक था। गेरीवाल्डीकी घोषणासे रोमपर आक्रमण करनेके लिये एक महती सेना तय्यार हो गयी।

इधर पीडमौण्टकी राजसभा फिर घबराहटमें पड़ी। फ्रांसने यद्यपि अपने सिपाही रोमसे हटा लिये थे, पर उसे यह सह्य नहीं हो सकता था कि इटलीका जातीय झण्डा रोमपर फहराए। नेपोलियनके दमखम अभी बाकी थे और वह अपनी प्रधानताको नहीं छोड़ सकता था। अभी तक नैपोलियन और विकृर इम्मैनुअलकी नाममात्रकी सन्धि भी विद्यमान थी, टूटी नहीं थी। प्रधान-सचिव रैटजीको फिर पुराना अपराध करना पड़ा। गेरीवाल्डी कैद कर लिया गया और कपरराके द्वीपमें नजरबन्द कर दिया गया। इसके पीछे उसका बड़ा पुत्र और अन्य सेनापति उसके कार्यको करते रहे। उधर वह भी कपररामें शान्त नहीं था। चार जहाज रात दिन कपररापर पहरा देते थे, तिसपर भी उसके निकाले हुए घोषणापत्र इटली द्वीपके कोने कोने तक पहुँच कर लोगोंको रोम जीतनेके लिये उत्साहित कर रहे थे। इसपर सरकार प्रसन्न थी, पर हवाको कौन रोक सकता है। एक दिन समाचार मिला कि रातके अँधेरेमें एक छोटी सी नौकापर चढ़कर गेरीवाल्डी निकल भागा है और स्वयंसेवकोंकी सेनाको रोमकी ओर बढ़ा रहा है।

"इटलीके दिलमें फ्रांसके पिछले कार्योंकी जो कुछ भी अच्छी सम्मतियाँ थीं, मैण्टनाकी घटनाने उन्हें दूर कर दिया है। अब हमारी सरकारके लिये फ्रांससे मित्रता रखना सम्भव नहीं है। मैण्टना पर फ्रांसकी चसपोर्ट बन्दूकने उस मित्रतापर घातक चोट लगा दी है।"

उस दिनसे विक्टर इम्मैनुअल और नैपोलियनकी कोई मित्रता नहीं रही।

जो कार्य इतने आश्रयसे नहीं हुआ, वह दैवेच्छासे हो गया। १८७० में फ्रांस और जर्मनीमें वह भयंकर संग्राम हुआ, जिसने १६१४ के सर्वसंहारी-संग्रामकी नींव डाली थी। उस समय फ्रांसकी हार हुई। उसमें सामर्थ्य नहीं था कि राजा विक्टर इम्मैनुअलके शानदार रोम प्रवेशके जुलूसको रोक सकता। बिना एक भी गोली चलाए १८७० में रोम इटलीकी राजधानी बन गया।

दीपनिर्वाण

अब गेरीवाल्डीको थकान और बीमारियोंने घेर लिया। कभी २ उसे गठियाके आक्रमण भी होने लगे। वह बहुत समय तक कपरारामें ही रहता था, परन्तु इटलीकी राजनीतिक उन्नति की चालसे वह कभी अनभिज्ञ नहीं रहता था। कभी २ राजप्रतिनिधि-सभामें भी जाता था, परन्तु उसका काम प्राय विद्यमान शासनकी आलोचना करना ही होता था। धीरे २ वह उसके भी अयोग्य होने लगा और चलना फिरना भी उसके लिये कठिन होने लगा।

पास आते आते आखिर अन्तिम दिन भी आगया। १८८२-के जून मासकी दूसरी तारीख थी, साढे आठ बजेका समय था। उस समय बडी शान्ति और धीरताके साथ नयी इटलीके जन्मदाता, अपने समयके पूज्यदेव और स्वतन्त्रतापर प्राण अर्पण करने वाले स्वाधीनता-भक्त गेरीवाल्डीने इस भूलोकको छोड़ कर परलोककी यात्रा की।

गेरीवाल्डी भूमिपर आया और चला गया। उसने बडी विजय प्राप्तकी और कई बार परास्त भी हुआ। उसने कीर्ति भी पायी और कहीं २ लोगोंने उसे अपकीर्ति भी दी। वह देवतुल्य पूजा गया और अपने ही देशवासियों द्वारा उसे कैद की अवहेलना भी सहनी पडी। यह सब कुछ हुआ। प्राणोंने

परिषद् की प्रकाशित

पुस्तकें

सन्तजीवनी	॥)
मानवीय आयुष्य	≈)
आदर्श विवाहपद्धति	॥)

पता—साहित्यपरिषद्

पो० आ० गुरुकुल कांगड़ी

बिजनौर यू० पी०

दुर्गाप्रसाद शर्मा, आदर्श प्रेस, काशी ने—
पण्डित जयदेव शर्मा द्वारा साहित्यपरिषद् के लिये छापा